عنوان الشرف

مكرر كتاب بوده

٢٠٢٩

٥٧٠ ٧٢

ط

٤٢

K.2127

عنوان الشرف

٢٠٢٩

T. C.
İSTANBUL
Fatih Kütüphanesi
SAYI

الحمد لله رب العالمين الذى لا نظير له ولا شبيه له شخص من العلما حلف بالطلاق انه
لم يصنف فى الملة الاسلامية كمثل هذا الكتاب ولا سمح الدهر بمثله الا بمصنفه هل يقع عليه
ام لا انتهى اجاب الشيخ الاسلام بن حجر فسح الله فى مدته لا يقع عليه الطلاق والامر كما ذكر
بل اعظم بل لو حلف بالطلاق ان احدا لم يقدر على ترجمته هذا الكتاب لصدق وهذا الكتاب معجز لصاحبه

والله اعلم

واما جواب الشيخ جلال الدين البلقيني فبالشرح وجميع علماء مصر بل كل من وهبه الله تعالى
الفطنة والذكاء واطلع على هذا الكتاب علم ان الامر فى هذا الكتاب الهى وهبه الله تعالى لصاحب
هذا الكتاب حتى يبقى اسمه وحده واعجز من قبله ومن بعده والله ملهم الحكمة وموسع النعمة
فان البحر المحيط ينتهى له حد وهذا الكتاب لم يلتق له حد على كل وجه

كتاب عنوان الشرف تاليف الشيخ الامام العلام العلامة عماد الدين اسمعيل بن بكر
المقرى اليمنى فسح الله فى منزله الجنة وغفر له ولكل المسلمين وصلى الله على محمد واله وصحبه اجمعين

علم العروض اوائل سطوره بالمداد الاحمر حروف

علم القوافى حروف اواخر السطور بالمداد الاحمر حروف

علم تاريخ الدولة الرسولية من الكلمات المنتهى بها بالمداد الاحمر

تم الفقير مجموع الكتاب على مذهب الامام الشافعى رحمه الله تعالى

علم العربية من مجموع الكلمات الثالثة بالمداد الاحمر

من نعمة الله تعالى على عبده الفقير الى الله تعالى شعيب بن موسى المنصور الحنفى

٢٠٤٩

Süleymaniye U. Kütüphanesi
Kısmı: Fatih
Yeni kayıt No.
Eski kayıt No. 2029
Mükerrer

K. 2127

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | بسم الله الرحمن الرحيم | [illegible] | وبه نستعين | [illegible] | على القوم الظالمين | [illegible] |
| ا | الحمد لله ولي | الحمد | ومستحقه الذي لا يقوم | بحمد | ه احد من خلقه ونشهد ان لا اله | ا |
| م | معبود للخلق الا | لله | ولا اله لهم سواه وصلى | الله | على سيد البشر رسو | ل |
| رب | ربنا ما رفع منار | حق | فلمع واضاء نور علم وسطع | ا | علم ان العلم مصبا | ع |
| ت | تستضيء به الامة قد | حمد | الله واثنى عليه واشرف ما | الفقيه | من العلوم علم | م |
| ا | الفقه فمن صام | وصلى | فضرورته اليه ومن عامل نكح | و | طلق فهو كل عليه فلابد | د |
| ل | للعباد مما حفظ | الله | به عليهم اركان الاسلام كالحج و | [illegible] | والصيام ومنقول ومعقو | ل |
| ى | يعسر تحصيله | على | الانام الا بعلماء اعلام يدلونهم | على | الحلال والحرام وكـ | ل |
| ف | فضل يروى عن سنة | محمد | نبيه المختار من البرية و | رسوله | المبعوث باكرم سجيه | ه |
| هذا | هذا نعته وصفته | وآله | اهل الله وخاصه بهم يحفظ شريعة | محمد | وسنته اللهم اجعلنا | ا |
| ال | اليك هادين لا ضالين | و | لا مضلين وادخلنا في رحمتك اجمعين | وبعد | فهذا كتاب جليل | ل |
| كت | كتبته لم اسبق | بعد | اليه الفته مختصرا في الفقه | فا | ن اعان الله وتم حينئذ | ذ |
| ا | امره على هذا | فهذه | نعمة من الله لا يوفى شكرها | قول | ولا عمل وضعته بمعاني | ى |
| ب | بديعة بليغة منها | نبذة | من تاريخ الدولة الرسولية وشيء من | الكلام | في معاني العربية بديع | ع |
| و | احرف معدودة اذا | جمعه | من اوائل سطوره انتظمت عروضا فهذه | ثلاثة | وعلم رابع يحصل | ل |
| جمعه | من اخر كل سطر | وطرفه | في علم القوافي فاتفقت هذه | وهي | خمسة علو | م |
| مـ | من تاملها عجب | اعتبها اخر | لا على منوال ورسمت لهام | اهم | على غير مثال لجاء مفقها | ما |
| د | جاء مودبا وجاء | مودبا | كتاب الطهارة الماء طهور وطاهر | و | نجس فاسم الطهور حاصل | ل |
| لـ | لكل ماء باق على صفته | دو | ن غيره ونعني بالطاهر ما استعمل في | فرض | الطهارة او خالطه طاهر | ا |
| ا | فحش بغيره وليس | له | اليه حاجة فان تغير بالنجاسة تنجس | وحر | م استعماله ولو كثر وا | ن |
| نا | له ولم يغيره فعند | ائمة | العلماء ينجس ما دون القلتين والمعرو | ف | ان المشمس يكره للانسا | ن |
| الا | الاستعمال له في جميع | الزمن | وقيل في الصيف خاصة باب الانية | والا | ستعمال للطاهر منها ليس محر | ما |
| سو | سواء كانت خشبا | او عظم | الا من النقدين ويكره التضبيب بهما الا بر | سم | الحاجة اذا قـ | ل |

كتاب الطهارة

باب الانية

لكنه

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ل | لكنه وان كان | ملو | ما فطهارته تصح وانه تنجس بعضها لم | يرف | توضأ بما قد | م |
| ط | طهارته ظنا باب السواك | لك | يستحب السواك لكل من هم | بخو | في الصلاة ولتغير فـ | ى |
| ا | لفم بما يوذي | الشام | والجليس ويستاك عرضا و | الاولى | اولى اذا كان يابسا مع | ع |
| ن | نداوة وكل خشن | و | مزيل يجزئ باب الوضوء لا نخا | لف | في استحباب التسمية قبـ | ل |
| ال | الوضوء لما فيها من | اليمن | والبركة ثم ينوي رفع الحدث | واللا | زم ان يقارن اول جر | م |
| مـ | مغسول من وجهه ولو | بنى | على نية قارنت المضمضة فلا بد | م | الى غسل الوجه ولـ | و |
| لـ | لازمها الى فراغ غسل | الوج | جلين فهو حسن ويسن غسل الكف | والا | ستنشاق والمضمضة ثم المبا | لغة |
| كـ | كرهت للصائم اقتداء بر | سول | الله صلى الله عليه وسلم ويستحب | اضافة | الاستنثار اليهما والجمع قـ | د |
| ا | فتواه بثلث غرفات | افضل | ثم يغسل بعد ذلك وجهه والكتاب | والاخبار | شاهدة بوجوبه بلا | ا |
| لـ | لو كان في منابت اللحية | ملو | ها من الشعر لم يجب غسل ما تحته وما نزل | عنه | من الشعر وبان مـ | ن |
| ا | لوجه وخدوده فكذلك | ك | يجب غسل ظاهره ثم يديه مع مرفقيه | وجر | يان الماء على الاعضا | ا |
| شـ | شعرا وبشرا واجب | الا | الرأس ففرضه المسح ولو شعر | ه | ويسن مسح كـ | ل |
| ر | أسه ولا يجزئ ما انحد | ر | عن حده من الشعر ثم رجليه مع كعبيه | والافعال | هذه ترتيب العمـ | ل |
| فـ | فيها كلها فر | ض | ويسن الموالاة وعدم الاستعانة فيما منه | بد | والتثليث وتخليل المنابـ | ت |
| ا | ما التنشيف ففيه وجوه | الاول | يكره وقيل لا وقيل يكره بعدد | خول | الحر لا البرد وفـ | ى |
| سـ | سبيل الله قتل | السلطان | لتارك الوضوء باب مسح الخف مدته | التا | مة للمقيم يوم وليلة ومد | ته |
| مـ | مسافر ثلث فلا يشترط | الملك | بل يجزئ خف مغصوب لا يجوز الا | السا | تر للقدم ولا يجز | ى |
| عـ | على مخرق في القول | المنصور | حجته ولا يلبس الا بعد تمام الطهارة | لسكنه | لا تحسب المدة حقـ | ا |
| يـ | يحدث ولو مسح مسافر ثم | نو | ى الاقامة او مسح مقيما | ولم | يقم بل سافر لم يبـ | ق |
| لـ | له الا مدة مقيم وظهو | ر | الرجل من الخف ومباشرتها النجاسة | وكونه | انقضت مدته او اجنب ا | و |
| بـ | بدا بالمرأة الماسحة | الد | م من حيض او نفاس كل ذلك | امر | يوجب الغسل ثـ | م |
| نـ | ندب مسحه خطوطا وا | يته | ما مسح من اعلى الخف اجزأه | و | ان قل ويسن مسح اعلى قد | م |
| ال | الخف واسفله وتقليل الما | عمر | له فليعتمد باب ما ينقض الوضوء | هو | الخارج من السبيلين وان لم يكـ | ن |

باب الوضوء

باب مسح الخف

باب ما ينقض الوضوء

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عادة وتلامس رجل وامرأة لا | بن | واه ومثلها سائر المحارم | قا | لوا وزوال العقل الا من جالس |
| بمحل الحدث | على | الارض او نام ممكنا مقعده ولو زا | لت | احدى اليتيه عن المكان |
| انتقض ومس فرج | الر | جل والمرأة ببطن الكف | وقيل ولم | احد يفرق فيه |
| سواء الصغير والكبير و | سو | اء القبل والدبر من الحي والميت | والام | فيمن ايقن طهرا او حدثا ثم |
| استراب وشك انه يرجع ا | لى | اليقين الذي هو الاصل ويحرم على المحدث | الث | الصلوة والطواف ومسح |
| دفة المصحف بلا حائل وحمله | وهو | سواء حمله في كيس او صندوق واذا | كتب | في مثل الدراهم |
| ابيح للمحدث حملها انتهى | باب | الاستطابة يقدم داخل الخلاء يساره | وما | صحبه من ذكر يباعد |
| منه واعتماد اليسرى | خير | واستقبال القبلة واستدبارها دون ما | عداهما | منهى عنه وخص |
| الله تحريمهما في الفضاء كباب | فتحه | اليها وان استقبل القمرين او تكلم | فهو | مكروه ومن بال |
| اوتغوط وفرغ فليحمد | الله | ولا يبول في ثقب وسرب ومهب ريح و | طرف | من الامكنة قوي |
| يرش عليه البول ولا | على | طريق ونار ومساقط الثمر | والا | ستنجاء واجب والاولى ما |
| اثنى الله به على | اهل | قبا جمعوا في الاستنجاء بين الماء والحجر وا | سم | الاستنجاء يقع بكل |
| منهما والماء افضل و | الا | حجار كافية الا النجس والمحرم والمطعوم و | تكره | له الاستنجاء باليمين فليستعمل |
| هنا يساره والاستنجا | د | وكل جامد قالع له حكم الحجر | ومعرفة | الاستنجاء واجبة فمن اراده |
| واكتفى بالحجر فالفر | ض | الانقاء وليكن بثلث مسحات | فما | فوقها وان انتشر ووقع |
| بباطن الالية ا | وتواصل | البول ولم يجاوز القطع الخلقي | صلح | الحجر وان جاوز عليه |
| عاد الى الماء ولم يجزه الحجر | بعده | باب ما يوجب الغسل يجب بالانز | ال | وبايلاج حشفة فرجا ولو |
| دبرا ثم الانزال و | الا | يلاج يوجبه على المرأة والعزوج كلها | موثرة | من ادمي وغيره وبحيض ونفاس |
| فلو نام وحده ووجد | سلا | له في مرقده يشبه المني ويشبه المذي | فهو | مخير بينهما وما وجب الاغتسال |
| هجرة على المحدث فهو حرا | | على الجنب مع المكث في المسجد وقراءة القرآن و | تكره | له عبور مسجد الا اذا ارام |
| ذلك لغرض ولو ذكر النعم | وقرآ | ها فقال الحمد لله رب العالمين لم يضر | باب | وصف الغسل وهو |
| امر شرطه النية فيجب | على | مريد نية الغسل واستباحة واحد من | جملة | ما لا يستباح الا بعد |
| الغسل ولا يصح الا من | | فيعيده الكافر اذا اسلم والمغتسل تعهد | المعا | طف [illegible] |

باب الاستطابة

باب ما يوجب الغسل

باب وصف الغسل

تكل

كتاب الفقه في العروض اوله بحر

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| لكل ان يتوضأ قبل | الا | غتسال ثم يغسل جسده ويتبع المنابت والطا | رق | الشعر وتخلل |
| كثيفها بفعله ثلاث | كرا | ت والفرض غسلة واحدة وسننه | خمس | غسل الاذى ا |
| لتلطخ به والحثوا ما | م | الغسل على الراس والتثليث والتيامن وتخليل | المضمضة | من الشعر ثم الغسل اذ |
| اجتمع مع الوضوء تدا | خلا | والحيض والجنابة يتداخلان واما | مثل | الجنابة والجمعة فلا يقضى النظ |
| بدخول الاخر الا اذا عر | ف | معه بالنية باب التيمم | هو | عند الحاجة اليه واجب في |
| الاحداث كلها بالطاهر | من | التراب الخالص من مخالط كالجص والدقيق | و | ان يكون بضربتين للجميع |
| فصاعدا نقلا الى | سنه | وجهه ويديه والنقل ركن عند اهل | العلم | وينوي استباحة الصلاة او |
| تيممه وفرائض التيمم | ست | ونية الاستباحة لان التيمم لا يرفع الحدث | مثل | الوضوء ثم النقل كما تقدم |
| هناك وضربتان فصاعدا | و | مسح الوجه وتقديمه ومسح اليدين و | زيد | ت الموالات ايضا |
| في قول ومبيحاته | عشر | عدم الماء وكونه محتاجا اليه مع وجو | ده | لعطش محترم او تحصيل |
| النفقة او قضاء الدين | | يبيعه او وجده ولم يجد | ماء | ليشربه او وجد الثمن ولم يلق |
| عنه غنى اوكان قد | و | جده باكثر من ثمن المثل او خشي عدوا او | دخل | اليه او خشي منه عد |
| دة او مرض ربما ما | ت | نفسه منه التلف او بردا يخشى | عليه | منه التلف وكذا زيادة مرض في |
| وجه صحيح ومضيع | مأتة | في الوقت يتيمم ويقضي فلو تيمم فز | ال | العذر بطل تيممه الا |
| ضارب في الارض قد جرم ذا | كانت | صلوته تسقط بالتيمم ثم يبطله الوهم | مثل | رؤية الركب وشرطه الوقت فمن |
| اراد التيمم لصلوة لم يجز | له | قبل وقتها ولا قبل الطلب ولا يصلي | الا فر | ض اكثر من فريضة ويصلي |
| وراها وقبلها من النو | ا | فل ما شاء والكسير مسح الجبيرة بالماء وتيمم | والواجب | الجريح يغسل ما عرف |
| له من الصحيح وتيمم في ا | لو | جه واليدين للجريح باب الحيض | ولم | الحيض يقع على الدم المقيد |
| بصفات تذكرها | قا | لوا واول سنه تسع واقله يوم وليلة و | الا | كثر خمسة عشر كالطهر وهو |
| حداقله وما لا كثره حد شا | بع | فان عبر الاكثر فلتزم الحيض ا | شاذة | تميزه فلترجع اذ |
| رجعنا اليها والصحيح | [illegible] | ان التمييز مقدم على العادة فا | ذا | فقدت ردت الى العادة ثم من قبل |
| اما اذا لم تكن معتاد | ة | فانها ترد الى اقل الحيض | وبعد | لتسمى في [illegible] |
| لفظهم المبتدأة | والا | المعول عليها كمدة الحيض ووقته | ونحوها | التمييز اذا فبها ثم |

باب التيمم

باب الحيض

[illegible]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ط | لبت الخلاص | ا | حتاطت واغتسلت لكل فرض وصلت وصامت | وما | للزوج ان يطأه | ا |
| و | يكره وطئها في هذه الحالة ا | لمذكورة | ويحرم بالحيض ما يحرم بالجنابة و | اضيف الى | ذلك عدم التحليـ | ل |
| ل | عبورها في المسجد | ولما | تحت الازار وللصوم واذا انقطع لها حل | واحد | منها وهو الصو | م |
| و | بقي سائرها حتى تغتسل و | د | م النفاس يحرم ما يحرمه الحيض | من هذه | واقله مجة والاكثـ | ر |
| هو | ستون يوما وغالبه | ا | ربعون فان عبر فهو كالحيض في الرد الى هذه | المعروف | من العادة والتميز والر | د |
| في | من كا | نت | مبتدأة الى الاقل والاستحاضة لا تمنع الصلاة | والمعر | وف انها تحتفظ وتتطهر فلا تقـ | ف |
| عن | الصلوة مبادرة | لصلوة | باب النجاسات وهي الكلا | ب | والخنازير وما تولد | منهما |
| و | الدم والمذى والودى و | الر | جيع والبول والقيح والخمر والميت | وهو | فيما عدا السمك والجراد | ثم |
| لا | ينجس الادمي لكرامته | قا | لوا ولا يطهر من النجاسات بالاستحالة الا شيئان | الاشيا | جلود الميتة اذ | ا |
| د | نقيت بالدباغ لا الكلا | ب | والخنازير ثم الخمر اذا تخللت فان طرح ما يقع | الالم | عليه فيها ثم يخلـ | ل |
| م | نع الحكم طهارتها | و | نجاسة الكلب والخنزير لا يطهرها الا الغسل | المتمم | سبعا احديهن بالترا | م |
| فا | تما سوبهما فاذا | انقا | الغسل عنها ولو بواحدة كفى | والغسل | هذا حتم وليس هـ | و |
| على | بول غلام ما اعتا | دت | معدته الطعام واجب بل يكفي النضح | والصانع | للغسل وليـ | س |
| ي | جزم في بول الجارية بل لابد | له | من الغسل كتاب الصلاة | وما | يوجبها والصلاة ليـ | س |
| ل | ها موجب سوى | الا | سلام والبلوغ من عاقل طاهر ما | عد | المرتد والسكران ولـ | و |
| نـ | ام لم يسقط عنه وا | دبا | الاعذار هذه لا تصح منهم الصلاة | ا | لا الصبي فانه يؤمر بها | |
| ثم | وقت الظهر | من | الزوال الى مصير ظل الشيء مثله و | ذلك | سوى ظل الاستواء و | لو |
| ا | زداد ادنى زيادة | حضر | وقت العصر فاذا صار الظل مثلين | فهو | اخر الاختيار ويتصـ | ل |
| نـ | وبة الجواز بالغروب والمغرب | مو | قته بقدر وضوء واذانين وخمس ركعات و | منه | هذا على ما يرو | وا |
| يـ | وم بين جبريل الاوقا | ت | والعشاء يدخل بغروب الشفق الاحمر | والاعذار | تسميها العتمة وثلث الليـ | ل |
| هـ | و اخر الاختيار والجواز | الى | طلوع الفجر الثاني ثم يدخل الصبح | والقائم | الفجر والغداة و | خروج |
| ا | لوقت منه بطلوع الشمس و | | اخراج صلاة عن وقتها واول الوقت | رفع | درجة وتقضي الفائتة | ثم |
| جـ | ملة القول انه من عصى | الله | بتأخيرها وجب فورا والا فعلى التراخي | و | يستحب ترتيب القضا اذا حا | ل |

باب النجاسات

كتاب الصلاة







[illegible]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ز | من الحاضرة متسعا فان | اشتد | ضيقه بدأ بها باب الاذان | نصب | المؤذن سنة وترتيب | حروف |
| ا | لاذان شرط وليس | ذلك | للحاضرة او الاولى من الفوائت ويقيم للباقين | و | لا تؤذن المرأة وتقيم ولـ | و |
| يجمع | نفسه فيه فهو | على | الاصح افضل من الامامة ويثني وتفرد الا قامة و | جر | ت السنة بترتيله وادراجهـ | ا |
| مـ | ع تثنية لفظ الاقامة و | صاحب | الصوت الحسن الجهوري اولى | وجزم | العلماء باشتراط ذكر عاقـ | ل |
| قـ | ائل بالاسلام ويؤذن في | دياد | ه ومسجد الجماعة ومنفرد ويستحب | الرفع | للصوت به ولا يصـ | ح |
| بـ | الاقامة فان كان في | مصر | كبير ندب للمسجد مؤذنان فان لم يستغن الا | بالضم | لاثنين اليها لم يضـ | ر |
| و | لا يكون المؤذن تحت | الملك | بل يستحب فيه الحرية والعدالة | والنصب | له بصيرا فان تر | ك |
| ضـ | ريرا جاز لكن | الكامل | اولى ولفظ تكبير الاذان ساكن وقد يحرك | بالفتح | ويؤذن متطهرا جاعلا | |
| ا | صبعيه في صماخيه فان ابى | فاعل | يديه لم يضرب ويؤذن مستقبلا | و | في الحيعلتين يلتفـ | ت |
| لـ | ليمين والشمال ولا يتكلم | الى | تمامه ويشترط الوقت ويصح في | ا | الصبح بعد ز | وال |
| عـ | ماد الليل وهو نصفه و | البلد | اذا عدم المتطوعين تصدى الامام | لجر | يان رزق المؤذن ويحل جعـ | ل |
| د | زقه الى اخره وقيل ذلك من | الحرام | باب ستر العورة ليأخذ طرفه | بالكسر | عن نظرها بـ | ل |
| و | اجب عليه سترها | سوا | وعلانية وقيل لا يجب في الخلوة | والجزم | بوجوبه الا في موقـ | ف |
| ضـ | رورة اصح وليس ان | يأ | تي الى الصلوة في قميص ورداء ويوم | بازائه | ثياب الحرير ويعفى عما في | الحروف |
| وا | لاطراف منه وللمرأ | ة | لبسه وعورة الرجل من السرة الى الركبة و | الحر | ة ما عدا الوجه والكفين وليسـ | ت |
| عـ | ورة المرأة الا كالرجل | ومن | وجد خرقة تستر بها قبله ثم دبره وليس له تر | كه | دون ستر غيره فان اعوز | ه |
| و | باش صلى عريانا ولا اعادة | عليه | باب طهارة البدن وما يصلى فيه | و | عليه تبطل صلاة المصلي اذ | ا |
| و | قعت عليه نجاسة | و | العمرة لا تسقط عمن جبر عظمه بنجس الا بنزعه وان | نصب | في نزعه الا اذا حصـ | ل |
| ضـ | رر متلف ويعفى عن قليل | من | دم البراغيث والفصد والبثرات وكذا كثيره في | الجمع | الاصح ويكره فيما يـ | روى |
| هـ | نا الصلاة في طريق وحمام ومسا | د | ع ابل الاغنم ويحرم في المغصوب وكذا الحرير الا على | الاناث | ويصح في جميع الاحـ | وال |
| وا | لانسان اذا تنجس احد ثوبيه | جا | ز له الاجتهاد باب الاستقبال استقبال | كسر | البيت لازم للمصلي ولا يعذ | ر |
| جز | ما الا بشدة الخوف ويباح | له | تركه في نافلة سفر سواء كان سفر | ه | طويلا او قصيرا او استبعـ | د |
| الاخير | في وجه | فا | ن سهل الاستقبال على المتنفل المسافر | مثل | الماشي ومن ينعطـ | ف |

باب الاذان

باب ستر العورة

باب طهارة البدن

باب استقبال القبلة

من نصف البيت والجزء الاخير البيت يسمى

باب صفة الصلاة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| م | ركوبه ويستر سل ا | ول | لزم الاستقبال بالاحرام والركوع و | | والفرض اصابة العين ف | لو |
| ن | اى عنها لزم ذلك بالظن و | اهل مكة | يلزمهم ذلك بيقين | وا | لبعيد اذا اخبره عالم وقا | ل |
| ن | هج القبلة هنا قبل | الجبر | وان اخبره مجتهد فلا ومن صلى | بو | سط الكعبة او عليها صح | ت |
| ص | لاته اذا صلى و | | سترة متصلة فان لم يكن هنا | ك | سترة فلا ومن بان له الخط | ا |
| ف | ى استقباله اعاد | و | الله اعلم باب صفة الصلاة | وا | لمصلي يعين الفريضة بالنية ونا | س |
| ا | لزموا النطق ويعين الرابعة ا | لما | تى بها ويكفي لغيرها نية الصلوة لعدم | خو | ف اللبس و يواز | ى |
| ل | فظ الكبير بالنية وندب | رفع | اليدين بالتكبير الى المنكبين وبعد ذا | ك | يضعهما تحت صدره ولا | س |
| ب | وضع اليمين على اليسار بل | ذلك | سنة ثم يأتي بدعاء الاستفتاح | و | يتعوذ ويقرأ الفاتحة وهـ | و |
| ي | رتل وقرأتها فرض والجزء | الية | في السورة فانها سنة والمأمومون لا يزا | حمو | نه في الجهرية على قرأتها وام | ا |
| ق | لاوة الفاتحة فيلزمهم واذا | | الامي من يعلمه الفاتحة تعلمها وذا | لدو | اجب فان عجز عنها ابد | ل |
| وال | بدل ان يقرأ قدرها من | سائر ا | لقرآن فان عجز فذكرا فان عجز | فو | قوفا بقدرها وعليه ان يردد | د |
| جزا | حفظه ثم يركع | الى ان | تبلغ يداه ركبتيه مطمئنا وذا | لك | هو الفرض وما عداه | جل |
| لا | كمال الاجر مثل | ا | التكبير ورفع اليدين ووضعهما على الركبتين فيه | و | يقول سبحان ربي العظيم فهـ | و |
| خير | ويكره ثلاثا فاذا ا | تى | بذلك اعتدل حتى يطمئن و | ذ | لك فرض و | العمل |
| ل | ه بالتحميد والذكر المعروف | الى | آخره سنة ثم يسجد بجبهته وانفه ولو انحرف | وما | على جانب كره ولـ | و |
| لم | يسجد الا على الجبهة كفى و | الر | جل يستحب له المجافاة واقلال البطن و | رفعها | عن الفخذين والنسا | |
| ب | عكس ذلك ثم | يا | تي بالتسبيح المشهور ويدعو بما شاء حتى | بالو | لد والدخول للبلد وا | [illegible] |
| ي | جوز له لكل ذلك ثم يرفع وفر | ضه | ان يجلس مطمئنا وندب اخراج اليمنى طاهر | او نصبها | وافتراش اليسرى ولا تخا | |
| ت | لك الهيئة ولو ا | خرج | رجليه من تحته كره الا في آخر الصلاة ويأتي | بالا | ذكار ثم يسجد ثانية وهـ | ل |
| ي | جلس لاستراحة وجهان و | الطر | ح باستحبابها الاكثرون ولا مخا | لف | ان الثانية في جميع ما | روى |
| س | نة وفرضا كالاولى ولكن لا | يؤ | تى فيها بالاستفتاح ثم يجلس للتشهد | وجب | ت السنة ان يتشهد و | هو |
| م | قبوض اصابع يمناه دو | ن | المسبحة على فخذه واليسرى مبسوطة ولينشر | ها | هنا بالمسبحة عند | [illegible] |
| ي | ثبت في كلمة الشهادة | ومنه | التشهد الاولى سنة يأتي فيه | با | لصلوة على النبي ونهـ | ى |

ان يزيد

القرب والقبض الثالث ... الخامس

باب صلاة التطوع

باب سجدة التلاوة

ما يفسد الصلاة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ن يزيد عليها وقيل هي | دخلها | النهي ايضا فليترك والتشهد الاخير فرض و | ليا | ت بالصلاة على الآل فيه ويستح | ب |
| ل | ه ان يدعو آخرها ولا يزال | محرما | حتى يسلم فينوي الخروج وسلام الحاضرين | والاثنان | سنة وفي وجه لـ | نا |
| ض | عيف يجب الاول | وفرق | بين الركعات باختصاص الاوليين بالسورة | والرفع | للصوت زيادة | على |
| ر | كعتي آخرها وثانية الصبح | فيها | القنوت بعد الاعتدال واذا نزلت | بالا | نام نازلة استقبلو | ها |
| ب | القنوت سواء اصابت | اموالا | او اولادا باب صلاة التطوع لا مخا | لف | في ان الصلوة من افضـ | ل |
| و | جوه القرب وانها | عظيمة | الثواب والتهجد وسط الليل فضل | والنصب | بقيام كل الليل اطـ | لق |
| ال | كل القول بكراهته | وطلب | التنفل في غفلات الناس واخفاه | والخفض | به افضل ومنه ما خصـ | ص |
| ق | يامه وشرع في | جماعة | وافضله العيدان ثم الكسوفان ثم الاستسقاء والافضل | فيها | كسوف الشمس والتا | كيد |
| ب | عد منها الرواتب فيأتي | من | قبل الصبح بركعتين وبعد الظهر بركعتين و | با | ربع قبل الظهر وقبل العصر وبعد | ه |
| ض | ايق في اثباتها بعض | ا | العلماء وبركعتين بعد المغرب وبعد العشاء و | ليا | ت الوتر وادنى الكمال هـ | و |
| ا | ن يأتي بثلاث واقل ا | الامرا | ن يصليه ركعة واكثره احدى عشرة وصلاة | ركعتان | ركعتان والقنوت بعد الاعتد | ال |
| س | نة فيه في النصف | الا | خير من رمضان والضحى وهو من | ركعتين | الى ثمان وتحية من و | رد |
| قا | صدا الى المسجد ركعتان | ما | لم يجلس باب سجدة التلاوة وهي اربع عشرة منها ثنتان | سجد | في الحج وص يعر | ف |
| طا | لبها انها للشكر فا | ن | سجد احرم مكبرا فعايد به سجدته لا سجدتين | | وفي القول الراجـ | ح |
| لـ | ا تشهد بل يسلم | ومنهم | من قال يتشهد ومن سجدها في الصلاة كبر للهوي | والرفع | ولا يرفع يده كما ذكـ | ر |
| خا | رجها ومن فاجئه نعمة | كبير | ة او اندفع عنه ضر او عدو سجد | لله | شكرا ويشترط فيها ما سلـ | ف |
| مـ | ن الطهارة وجميع | الامر | المشروط في الصلوة باب ما يفسد | ا | لصلاة حدث الساهي والعا | مد |
| سـ | واء في ابطالها وكذا | مبا | شرة النجاسة فان وقعت بيابسة فنحاها فورا فكا | لسالم | منها وتبطل بكشف العورة فلـ | و |
| ا | زالها ريح فستر البا | دز | على الفور لم تبطل ويقطع النية و | بالو | عد المعين يقطعها ا | لي |
| لـ | قيا غائب بالخروج من | الدين | فلو ترك فرضا من فروضها عامدا | او | زاد ركنا فعليا مـ | ن |
| سـ | ائرها او تكلم بحرفين مثل | بن | او حرف مفهم مثل ق عامدا بطلت | وفتحة | تاء انعمت اذا ضمها فـ | ي |
| ا | لصلاة او تنحنح مختارا فا | بر | ز حرفين بطلت وتبطل بضحك استدعاء | وجوه | لا بما غلبه ولو يـ | كون |
| كـ | ثيرا بطلت وقيل لا وان | طا | ل وكذلك تبطل بتعمد الاكل و | با | لفعل الكثير غير المفر | ق |

نعم المديد فاعلاتن فاعلن
ثمانية اجزاء استعمل

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ن | عم سهوه كعمده ولا بأ | س | باصلاح الرداو نحوه ويكره الالتفات و | ليا | ت بها وهو فارغ القل | ب |
| ثـ | ابت الخشوع فيها | فا | ن صلى ومعه ما يمنع الخشوع وذلك | مثل | من حضره الطعام فاقب | ل |
| مـ | صليا قبل الاكل | منه | ونفسه تشتهيه ويدافع الاخبثين كره و | شروع المأ | امامه ان رو | ا |
| الـ | سترة بين يديه | وا | د تكبوها اثموا والا فلا اثم على | المأتين | واذا نصب عصا او جعـ | ل |
| مـ | ا بين يديه خطا كفى و | كره | نظره الى السما باب سجود السهو | ونو | جب اعتماد اليقين ولا عد | د |
| د | ونه فمن شك في عدد لز | مه | الاخذ بالاقل ان كان فيها وندب ا | ن | يسجد للسهو ولـ | و |
| يـ | سهو بزيادة فعل قيام | و | ركوع وسجود او بكلام سجد في | الاثنين | وان نهض ساهيا الـ | ى |
| د | ون القيام ثم عاد و | لم ينتصب | لم يسجد وفي المسألة قول لكن حجته | مكسورة | انه يسجد | ولا تنبئ |
| فلـ | علم على من سها | بعد | الامام واذا سهى امامه سجد لسهوه | وتو | جب الفرقة | بينهما |
| ا | ن ترك امامه فرضا و | ها | كذا يسجد من ترك سنة من الابعاض وا | ن | كان عامدا | ثم |
| تنـ | فح القول الصحيح | من | المذهب ان محله قبل السلام عند | الجميع | وخالف بعض الاقو | ال |
| فاعلن | بانه ان كان | هنالك | زيادة واردت السجود لها | جعلت | محله بعد السلام ومتا | |
| ثـ | بت السجود فنسيه | احد | وسجد بعد السلام جاز اذا | با | در قبل طول الفصل وليـ | س |
| مـ | عرفة طوله وقصره با | لمقا | دير بل بالعرف باب اوقات نهي عن ا | لفتح | لباب الصلوة فيها وهـ | ى |
| ا | ول الاستواء الى الز | وا | ل وبعد صلاة الصبح حتى ترتفع الشمس | واذ | صلى العصر حتى تغرب وليـ | س |
| نـ | عم بالنهي جميع صلو | ته | بل لا يكره منها شئ بمكة ولا ما | زعمه | الى سبب كفاية او جنازة ولـ | و |
| يـ | صلى في استواء يوم الجمعة | ولم تز | الشمس لم يكره باب صلوة الجماعة | وا | لاجتماع فرض كفاية وقيل | هو |
| هـ | نا سنة واقلها اثنان | الا | مام والمأموم ونية الجماعة تلزم المأمو | وحد | ه ويستحب للامام واجر | ها |
| ا | ذا كثر الجمع افضل و | قد | م ابعد المسجدين اذا كان الابعد | منها | اكثر جمعا الا اذا تا | لف |
| جـ | ماعة به ومتى | اد | اذ فراقهم بطلت وكره لغير الامام قاتها بمسجد و | يستحب | بالمطر والريح وليـ | س |
| ذ | منها ابدا بل اذا هبت | مسّا | وكانت شديدة وتخوف معسر لغريم | ودفع | الى ظالم او اكل ما يتاذ | ا |
| ا | لجليس به كالبصل و | عد | منه الفحل الجشائه ويخفف الامام | افعال | الصلوة والاذكار ولـ | ك |
| ستعمـ | ال ذلك مع من يرضا | ه | والداخل في الركوع والتشهد الاخير بنذ | الاثنين | خاصة ينتظر فيهما ا | ن |

باب سجود السهو

باب اوقات نهي

باب صلاة الجماعة

لم يبطل



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لـ | م يبطل انتظار الامام | له | ومن ادركه راكعا ادرك الركعة | و | يحرم ان يكون | |
| مـ | ن يأتم به دكان | في | المساوقة سابقا كان او مسبوقا | الجميع | حرام ويحصل لمن ادرك منها | |
| جز | أ الفضيلة ولو ادرك | ما | قبل السلام باب صفة الائمة الاولى | با | لتقدم ذوا الكما | ل |
| وا | ذا اجتمعوا فالوالي | يقدم | بعد امام المسجد وصاحب البيت ثم | لنو | ثر الافقه ثم الاقرأ و | دو |
| و | جه ان الافقه والاقرأ | يؤخر | ان عن الاورع والصحيح من المذهب ا | ن | الاورع بعدهما ثم يرجـ | ح |
| الـ | اسن على النسيب وما | احد | يتقدم بفضيلة مع الفسق وذلك | مثل | ان يكون الفاسق اعـ | رف |
| مـ | ن العدل بالفقه فيؤ | ى | بتقديم العدل فان استويا في كل وجه فبها | | ويكره للرجل ولـ | و |
| جـ | مع فضلا ان يتقدم | و | يصلي اماما بقوم واكثرهم له | | ولا تصح امامة المحدث وكـ | ذلك |
| ذ | ائل العقل وغير هذين | عشر | ة كافر واخرس والثغ وارق وامي ومستحاضة | و | لخنثى في حق الرجا | ل |
| و | لخناثى والمرأة في حق ذ | ين | والمتنجس ولحان يغير المعنى كما اذا ابدل | | بالجر في | حرف |
| الكاف | بن اياك وا | عا | د المؤتم بهم لا بالمحدث وفي الامي وجه | والجزم بحذف | ا لتردد فـ | ي |
| ذ | لك اولى سواء علم الا | ما | م بحدث نفسه ام لا باب يقف الذكر وحده | ا | يمن الامام والاخران تبـ | ح |
| يـ | قف على يساره | | كل منهما الى خلفه ويصطفان و | لنو | ضح الحكم اذا حضـ | ر |
| ذ | كور وغيرهم فالاقرب | الى | الامام صف الرجال ثم صف الصبيا | ن | ثم الخناثى ثم النساء ويقـ | ف |
| هـ | ؤلاء بموضع مقا | د | ب للامام ففي الصحراء يجب ان لا يكون بينه | و | بينهم فوق ثلثمائة ذراع والقر | ب |
| بـ | المسجد غير لازم | ضا | قام اتسع لكن يشترط معرفة | الافعال | وان حال حائل بينـ | هما |
| منـ | ع الاستطراق نظرت | ا | ن كانا او احدهما في غير المسجد لم يجزو | ما | المسجد فكل بناء وكـ | ل |
| عر | ضه منه في حكم ا | لله | موضع الجماعة وان بعد ومن الفر | ض | ان لا يتقدم المأموم وو | د |
| و | جه انه لا يضر وتقفا | ما | مة النسا وسطهن باب صلاة المريض | و | من عجز عن القيام اوتو | خى |
| ضـ | ررا منه جاز | ت | صلوته قاعدا فان عجز صلى مضجعا | مستقبل | القبلة ويومي و | وال |
| هـ | ذا به الى ان عجز ان | يو | مي برأسه اومى بطرفه ونوى بقلبه | فا | ن قدر على القيام وهـ | و |
| و | سط الصلوة قا | م | واتم الصلوة باب صلاة المسافر وا | لماضي | في حاجته له الترخـ | ص |

باب صفة الائمة

باب موقف الذكر والواحد

باب صلاة المريض

باب صلاة المسافر

ضرب جزئان ثم مستفعلن
البسيط فاعلن ثمانية

[illegible]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ضر | رة السفر | التا | م وهو ثمانية واربعون ميلا في مباح لا | مثل | سفر الابق المشغو | ل |
| بهـ | ـذا السفر الشا | سع | لغير غرض فاذا فارق بنيان البلد | صلى | الظهر والعصر والعشاء كل | ها |
| جـ | ـمعا وركعتين ركعتين و | من | احرم مسافرا ثم اقام او عكسه ا | وشك | هل احرم مسافرا او مقيما | او |
| زا | حم مصليا غير | ذى | سفر او لا يعلم حاله فصلى خلفه ا | و | لم ينو القصر اتم ولو نو | ا |
| نا | و وهو مسافر | ينقطع | في بلد اربعة ايام صحاح اتم و | [illegible] | حاجة يتوقعها اذا لم ينو | |
| ثم | اقامة يقصر ولو | ستة | فاكثر في القديم والمذهب انه | يقصر | الى ثماني عشرة ليلة هذا | ا |
| الـ | ـصحيح والى | سبع | عشرة في وجه وللمسافر الجمع | ويقدم ويؤخر | بين ظهر وعصر كما ر | وى |
| بـ | ـوقت احديهما ومغرب | و | عشاء كذلك وللتقديم شروط | وهو | ان يكون الاولى منهـ | ـما |
| سا | بقة وان ينوى ما | ار | اده من الجمع قبل فراغها ولا يفرق و | م | يده في وقت الثانية لا | ا |
| يـ | ـلزمه الا ان يأتي | بعين | نية الجمع في وقت الاولة قبل | فو | اتها والتقديم للناذر اولى ولو | |
| طـ | ـراوات وهو سائر اخر و | شهيد | نا بذلك السنة باب صلاة الخوف وهي انواع | | فان كان القتـ | ـال |
| مـ | ـن القبلة وحارب عدو | اقتلد | مباح رتبهم الامام وصلى بهم صفين | ثم | اذا سجد في ركعة بصف | |
| سـ | ـجد في الثانية بالاخر و | حرس | من لم يسجد ثم لحق به ولو ظهر | له | العدو ولم | يك |
| تـ | ـجاه القبلة احرم | و | صلى بفرقة ركعة ثم فارقته واتمت | واحر | مت بعده الاخرى ثم يقومو | ن |
| فـ | ـسى تشهده فيخرجون | مما | بقي عليهم ثم يسلم بهم ثم في وقوف | | الانتظار يقرأ وفي المغر | ب |
| عـ | ـلى الصحيح بالاولين ركعتين وبالاو | لتك | ركعة وفي الرباعي ركعتين ركعتين ولا | نو | جب حمل السلاح ووقع | |
| لـ | ـنا قول بوجه فيها و | له | مستند من الكتاب اما اذا | ا | لتحم القتال واشتـ | ـد |
| فا | علم انهم يصلون رجالا | و | ركبانا مستقبلين وغير مستقبلين وان تخرج و | صب | جرحه وما عفي عنها | |
| نـ | ـعم لو تلطخ بها شئ و | [illegible] | عنه الفاه باب الجمعة ووجوبها | له | شروط التكليف المعقو | ل |
| ثم | الذكورة وان لا يكون | بهم | رق وان يكونوا مقيمين في البلد ولو | فعل | الجمعة يسقط باعذا | ر |
| ا | لجماعة ويكون المعذور | [illegible] | اذا صلاها وهو مخير ومن خالف | الا | فصلى الظهر وهو | |
| نـ | ـقي من الاعذار وفي | ثمنه | ان الجمعة لم تفته لم يصح في قول | بحرم | بصحته بل يحرم عليه في | |



اجزاء تستعمل في عيون العروض
والضرب والحشو

[illegible]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يـ | ـومها السفر حتى تفوت وتصلى | فيهم | جماعة باربعين ذكرا مكلفا حرا | و | متوطنا تاركا للظعن | [illegible] |
| هـ | ـذا الذي يعتاده او | با | ب البادية وان لا يكون قبلها ولا معها جمعة و | الفاعل | لها يخطب قبلها | |
| ا | ن كان اماما خطبتين | شا | ملتين للحمد والصلاة على النبي والوصية | مرفوع | بذلك صوته ويقرأ في ا | حد |
| جز | ئيها آية والاشا | رة | بالدعاء الى المؤمنين في الثانية ويشترط اذ | ابدو | ابها طهارة وستر ولا يصل | ح |
| ا | لخطبة الا بعد الذي | جاء | في الجمعة ومن القيام والقعود | [illegible] | بين الخطبتين شرط بعد | [illegible] |
| يستعمـ | ـلها العرب و | هل | يجب الترتيب الصحيح لا يجب وندب | [illegible] | منبر وان يقبل على الرجال | |
| مـ | ـسلما ويجلس للاذان و | قد | ندب ان يعتمد على سيف او قوس ولا يتركه | ابدا | ويقصرها والحمد | |
| خـ | ـير في الصلوة ولا بأ | س | باظهار الغضب والزجر والجمعة ركعتان | [illegible] | الصبح الا القنوت ويصلى هو | |
| بـ | ـا الجمعة والمنافقين و | الله | اعلم باب هيئة الجمعة يسن | [illegible] | الجسم لها حال | |
| و | جهته للخروج ويجزئ بعد | [illegible] | ية الفجر والسنة ان يتنظف لها | [illegible] | بسواك ونحوه ويزيل | |
| نـ | ـتنا ويتطيب عند روا | حه | ويأخذ من ظفره وشعره ويلبس احسن | [illegible] | ويبكر ويمشـ | ـى |
| الـ | ـيها بسكينة ويقرأ الكهف | في | يومها ويكثر من الدعاء ففيها ساعة | [illegible] | فيها الدعوات وليصلين | |
| عـ | ـلى النبي فيه ويسأل | الجنة | والمغفرة واذا حضر | [illegible] | والامام يخطب فلا | [illegible] |
| ر | كوعه الا تحية المسجد | ثم | يخففها ويستمع وينذكر ان بعد ولا يتكلم | [illegible] | يشوش القلو | ب |
| و | لو ادرك جماعة ركوع الثانية | [illegible] | بروا واتموها جمعة واعتدالها اتموها | [illegible] | لذلك ظهرا وفي وجه شا | ع |
| ضـ | ـعفه يحرم بالظهر والذي | فتا | بين العلماء صحته انه يحرم بالجمعة لانه | و | ان لم يقع له فقد | |
| و | افق امامه في الحا | ل | باب صلاة العيدين وهي من السنن التي | [illegible] | شعار الاسلام يحضرها | |
| ا | لرجال والنساء والصبيان | وبا | لغوا في اظهار الزينة وتنظيف | [illegible] | ووقتها اذا تكامل | |
| ضـ | ـوء النهار بطلوع الشمس | يعو | د ممتدا الى الزوال ويستحب تقديم الاضحى | [illegible] | مزاحمة للاضحية | |
| ر | كعتي الفطر وقت را | د ا | لضحى واكل قبل الصلوة بخلاف ما هو | [illegible] | في الاضحى فا | ذا |
| بـ | ـان الظهر لمن اراد اجرا وتقربا | بكر | اليها وهي ركعتان الاولى يكبر | [illegible] | سبع تكبيرا | ت |
| و | في الثانية يكبر خمسا | و | يرفع اليدين ثم يصلي بقاف واقترب | و | يتبعها بخطبتين كالجمعة يحرك | |
| الخـ | ـواطر فيهما با | لد | عاء الى التوبة وباخراج الفطرة ان كان الحاضر | [illegible] | عندها | واما |

باب هيئة الجمعة

باب صلاة العيدين

اسقاط الثاني الساكن ... مفاعلتن

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | الاضحية في عيدها وقد ندب | ا | ن يستفتح الاولى بتسع تكبيرات وند | ب | في الثانية بسبع وكذ | ا |
| ن | وب التكبير لليلتي العيدين ومتو | خه | في وقته يكبر في المنازل والاسواق عند | الز | حام وا | لحركات |
| ا | لى الاحرام بصلوة العيد في القول | [illegible] | الصحيح والحاج لا يكبر ليلة الاضحى بل | بد | من التلبية | فهي |
| س | بيله الى ظهر النحر | وحا | ج وغيره يكبر من ظهر النحر الى الصبح الكا | ئن | اخر التشريق خلف ما صلا | |
| ق | ضاء كانت او اداء لا احا | ص | لذلك بل المتنفل وغيره سواء ويقضي صلاة و | العم | كله وقت للقضاء قا | بل |
| الط | الله لله في ملا | ز | مة طاعته باب صلاة الكسوف والافضل | ان | يصلي جماعة وهي في الظاهر | |
| ث | نائية يجهر بها ركعتين | بيد | انه ياتي في كل ركعة بقيامين وركوعين | واذا | قرأ الفاتحة فلا بـا | س |
| ان | يقرأ في القيام الاول | [illegible] | قدر البقرة بل يستحب وفي الركوع الثاني | قد | ر آل عمران والثالث وهو | |
| ي | كون اول الثانية | ثم | في الرابع قدر المائدة والركوع كما قد | مت | اربع يسبح في الاول منها | |
| الى | قدر مائة | ا | ية وقدر ثمانين في الثاني وسبعين وخمسين قدر | [illegible] | في الثالث والرابع واصل | |
| س | نة الخسوف ا | ن | يجهر بها بخلاف الكسوف ثم يخطب خطبة | واخر | ى بعدها ويخوفهم ويصل | ح |
| ا | كثار الدعاء والتصدق من | الملك | بشئ فان لم يصل حتى تجلى الكسوف فا | ت | وان غرب احدهما فحينئذ | |
| ن | فول فات صلوة الكسوف | ا | ما صلوة الخسوف فتبقى الى الشروق و | الفا | يت منه لا يقضى ولو | |
| ت | ادتا او فات صلوة معا فا | لظفر | بالصواب تقديم خوفهن فوتا فان استووا في | عل | الجنازة قبل الكسوف هو | |
| م | صيب وان اجتمع الوتر والكسوف | قدم | الكسوف باب الاستسقاء | وا | ذا انقطع ماء المطر وما | |
| ا | لاودية والانهار | من | الناس امروا بالتوبة والخروج للصلاة و | نما | تكمل الفضيلة با | لتوجه |
| ل | هم الى المصلى بعد | سر | صوم ثلثة ايام ويخرجوا في الرابع كما | قيل | صائمين بتخشع وشكر | |
| وا | لشيوخ والصبيان ولا ير | د | اهل الذمة ويتميزون فاذا تميزوا فلا | ض | رر يخرجون البهائم فاذ | ا |
| فو | عوا منا الاجتماع | وكانت | الصلاة صلوها ركعتين كالعيد وقد | ب | خطبتان كالعيد | لا |
| ما | كان من التكبير فيبدء | له | استغفار ويرفع يديه بالدعاء المأثور | [illegible] | به لشهرته ويستحب الا | شباع |
| ف | ي الدعاء ببسط الرحمة في | [illegible] | ر الارض ويستقبل في الخطبة ويحولون داءه | والحاضر | ون يحولون ثم يتركوا | |
| ا | رديتهم لا يحدثون لها فز | عا | الا مع ثيابهم فان سقوا قبل الصلوة | بوا | بها شكر ويقف | [illegible] |
| عين | الماء واول المطر | و | يغتسل فيه باب الجنائز وا | لا | ولى للكل ان يستعد | وا |

للموت

ستة اجزاء ... مقطوف العروض

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ل | لموت ويردون مظا | لما | ويجددون توبة وذلك للمريض اهم فا | ن | حضرته الوفاة فالمستحب ان يحو | ل |
| ت | لقاء الكعبة و | [illegible] | عليه بعضهم ولقنه الشهادة ولكن | [illegible] | من الملقن برفق فا | ن |
| ن | زعت روحه وهدا | [illegible] | موته غمض عيناه وشد لحياه ولين و | اذا | فعل هذا واكت | فا |
| س | جاه وفعل ما يبرأ | [illegible] | من ذنوبه وشرع في تجهيزه و | [illegible] | في غسله وحينئذ | |
| ت | رتيب الولاية فاذا | [illegible] | قدم الاب ثم ابوه ثم الابن ثم ابنه | [illegible] | ترتيب الولاية كالنكاح ولا يخف | ا |
| ه | ذا ثم الرجال الاجانب | [illegible] | نت الزوجة بعدهم ثم النساء المحارم | واذا | كانت امرأة جعل | |
| ا | لغسل للنساء الاقارب وتر | [illegible] | اكالرجال ثم النساء الاجانب و | تاخر | الزوج بعدهم وتاخر | |
| جـ | نس المحارم بعد | ه | وعند عدم المذكورين ييمم الميت بستر و | [illegible] | طرفه ويده عن النظر والمس | |
| ز | وجا كان ام لا وغسله و | [illegible] | ح شعره بما وسدر شقه الايمن ثم الايسر | وجمع | بينهما بغسله ومسح | |
| ا | حشاه وعصرها هكذ | ا | ثلاث غسلات يفعل في كل غسلة كما في | [illegible] | فان لم يطهر | |
| است | دعي بالماء | واد | م غسله حتى يطهر ويكون وترا ويجعل في | كل | غسلة كافورا وذلك | |
| عمل | مستحب اعني التكرا | ر | ونحوه والواجب منه ما يقع عليه | اسم | الغسل وهو يحصل بغسله | |
| م | رة ولا يجب استيناف | [illegible] | بخروج نجاسة بل يجري غسلها ولا يقرب | ا | لميت طيبا اذا مات محر | ما |
| قط | واذا انتهى الميت | حتى | شق غسله ييمم باب الكفن يجب الا | بتدا | بتكفينه وتجهيزه من ماله | قبل |
| و | صية ودين وان كانت امرأة | لزم | زوجها والفقير يجهزه اذا ما | ت | من تلزمه نفقته وان كان رجلا | |
| ف | الافضل ثلاثة اثواب ومن | ابا | الا خمسة جاز والثلاثة لفائف وان زاد | [illegible] | قميص وعمامة والافضل | |
| ا | ن تكفن المرأة في خمسة | بكو | ا كانتيا وثيابا ازار وخمار وقميص ولفافتين | ولم | يختر الا البياض وطيبت | |
| ل | ان الحنوط والكافور | وقا | ية يقوي البدن فيذرونه فيها و | [illegible] | حنوطا في قطنة وتضعها | |
| ع | لى المنافذ والمواضع التي | تلي | مواضع سجوده والفرض ثوب واحد | فيه | باب ذكر صلوة الجنازة ليس | |
| د | جل اولى بالصلوة عليه من | ابيه | ثم جده ثم ابنه على ترتيب العصبات فالـ | عا | دل رجل وجلا في | |
| و | جوه القرب | و | تنازع فالاسن اولى ويقدم الى الامام الكامل | [illegible] | فضلا هذا في مجلس | |
| ضم | جنائز او قدموا | د | فعة ثم نوى وكبر وقرأ الفاتحة ثم كبر وصلى | من | بعدها على النبي وآله ثم يكبر ويدعو | |
| و | المأثور اولى فان ا | خل | بدر لم يضر ثم يكبر ويدعو ثم يسلم تسليمة | العو | د الى الثانية ستة اما | |

والضرب والقطف لغنا كم بتحريمين من

باب الدفن

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | لذى هو فيها لا | د | مر والتكبيرات الاربع والصلوة على | ا | لنبي وادنى الدعاء للميت والسلام وصح | ع |
| ل | ها كل موضع من | بيد | آء ومسجد وغيرهما والمسبوق الذى لم يتكا | مل | له ادراك التكبيرات يحذو | و |
| ر | وة حذوا امامه | ثم | اذا سلم اتى بما بقى متواليا ومن فاته | وهو | ممن يلزمه فرضها ابيح | ج |
| ب | ان يصلى عليه ابدا | في | قبره واذا وجد بعض الميت | دفع | وجهز ولم يجز ت | ركه |
| و | صلى عليه ودفن و | سنة | رسول الله الصلوة على الميت الغائب | وخبر | مع النجاشي مشهور وحك | م |
| ال | سقط الذى لم يتحرك ولما ته و | ثما | نية عشر يوما يغسل ويكفن بلا صلاة وان لم يبلغها | مثله | كفن ودفن والشهيد اذ | ا |
| ق | ضا في الحرب وما افترقا الفريقا | ن واد | اراد واغسله والصلوة عليه لم يجز و | اذا | بقى حتى انقضت لم يب | ق |
| ط | ريق الى غسله وان اختلط | بعض | موتى المسلمين كفار ولم يتميزوا | كانه | المصلى ينوى بالقل | ب |
| ف | رض الصلوة على من قد | حط | قبله عليه ان كان مسلما باب الدفن | ا | ذا حملت الجنازة فالافض | ل |
| ا | لمشى امامها والدفن فرض | على | الكفاية والرجال اولى به والتقديم على ترتيب | سما | هم في الغسل كم | ا |
| س | بق والتعميق سنة لا تدا | [illegible] | ويلحد ويسل من قبل رأسه | و | يضجع على يمينه مستقبلا ويجع | ل |
| ق | ال لبن تحت رأسه فلا | تعز | زهنا بل يباشر بخده الارض ويدفنون و | لحد | واحدا ولا ي | رد |
| ا | ثنان الا لضرورة ويقدم | ف | اللحد افضلها واذا دفن بلا غسل فالعلما | تقو | ينبش ما لم يتغير | |
| ط | ريق القبلة واجب والمختا | د | انه اذا لم يستقبل به نبش ونصب القبر و | زيد | ارتفاعا على الارض شبرا ولا يباح | ح |
| م | ظلة ولا بناء وترا | بيع | ولا تجصيص كله مكروه وزيارة القبور مستحب | سا | الرجال ويستحب لغير الذكو | د |
| ت | ركها ويسلم عليهم و | الاو | لى ان ياتي بالماثور ويستحب التعزية و | ترفع | بعد ثلاث والجلوس لذ | ك |
| ح | تى تقصده الرجا | ل | بكرة والتعزية هي الحمل على الصبر و | زيد | فيها الدعاء للميت ول | ه |
| د | عاية للميت وجبرا لهذا | ف | يعزى المسلم بقريبه الكافر والكافر بالمسلم و | ا | لدعاء للمسلم وجوزوا | ما |
| ك | ان من البكاء لجزع كثير | [illegible] | عليه لكن يحرم الندب واللطم | بالا | يدى ونحوها وسواء | قبل |
| ي | موت الميت وبعده و | على | ان يجتنب ويستحب لجيران اهل الميت في ا | تبدأ | خرتهم ان يصنعوا | ا |
| ن | وع طعام لهم يكفيهم | في | يومهم وليلتهم باب الزكوة الزكوة | [illegible] | ركن الاسلام من ق | ل |
| م | نكر وجوبها كفرا | جما | عا ولا تجب الا على مسلم حر لا العبد | لانه | لا يستقبل بملك ولا الكاف | ر |
| ال | مرتد فيجب ان يؤ | دي | زكوته اذا تيقنا ملكه وفيه خلاف | خبره | واحكامه تر | وى |

فما به



الفاصلة الصغرى وهى بكون ثلاث حركات بعدها ساكن

باب الزكاة

باب صدقة المواشي

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ف | ى بابه وفى المغصوب و | الا | جرة قبل الاستيفاء فيها قولان | و | يجب في المواشي والنبات و | في |
| ا | لناض وعروض التجارة | على | الصبي والمجنون يخرجان من مالهما و | حر | م منعهما ويجب ايضا | |
| ص | دقة المعدن والركاز | ثم | العين فيملك الفقراء الفرض المعر | وف | من النصاب فمن كم | ل |
| له | نصاب ولم يخرج ثم | دخل | الحول الثاني لم يلزمه شيء باب صدقة | ا | لمواشي لا يجب الا في النع | م |
| ال | سائمة التي لا تصنع | [illegible] | اذا تم عليها الحول ولا حول للسخال الا | الجر | ى في حول الامهات و | [illegible] |
| ص | ورة الوجوب | في | ذلك ببلوغ النصاب فلا يجب في الخمس | وهو | اول نصاب الاب | ل |
| غ | ير شاة وفي عشر شاتان و | الجذ | السنة وفي خمس عشرة ثلث وفي عشرين | من | الابل اربع شياه فاذ | ا |
| د | ضى بان يخرج بعيرا | م | ذلك قبل وفي خمس وعشرين بنت مخاض | وفي | ست وثلثين بنت لبون وا | [illegible] |
| ا | لقول ان بنت | السنة | بنت مخاض وبنت السنتين بنت لبون | وعلى | ست واربعين حق | ه |
| وهي | مالها ثلث سنين و | الزكوة | سميت حقة لاستحقاقها الضراب واذا بلغت | الى | احدى وستين جذعة وه | و |
| تكون | سنها اربع سنين | وفي | ست وسبعين بنتا لبون وفي احدى وتسعين حقتان | وعن | مائة واحدى وعشرين يص | ح |
| ثلاث | بنات لبون ثم يتغير | سنة | في كل عشر فيجب في كل اربعين بنت لبون | و | في كل خمسين يحص | ر |
| ح | قة والوقص عفو واذا | تسع | النصاب واتفق فيه فرضان كالمائتين | الكا | ئن فيها اربع حقاق وخمس | ك |
| د | وس خمس بنات اللبون | واد | دت اخراج احدهما تعين الاغبط وبعير | ف | في ثلثين بقر | ة |
| كا | ملة تبيع وفي ار | بعين | مسنة للتبيع وسنة للمسنة سنتان | وليا | تى يكون فيه اخذ | ا |
| تب | يعا في كل ثلثين و | اخذ | مسنة في كل اربعين لا يتغير ثم الغنم | وتا | تى اقسام نصبه اربعة او | ل |
| عد | دار بعون وفيها شاة و | بعد | ه قسم وهو مائة واحدى وعشرين وفيه شاتان و | [illegible] | الثالث مائتان وواحد | |
| ها | ذا فيه ثلث فان جاوز فوق | ذلك | ففي كل مائة شاة ولا يؤخذ مراض | ومنه | اكبر ولا معيب د | [illegible] |
| س | ليمة فان حصل | [illegible] | في الواجب بان كانت كلها معيبة او ذكورا قبل | و | ان كانت كلها صغار | ا |
| ا | خذ صغيرة واذا اشتركا | في | نصاب ولم يشتركا الا انهما | منذ | دخل الحول لان الما | ل |
| ك | له مشترك في المراح و | ا | لمسرح والمشرب والفحل والراعي والمحلب | فالله | زم لها حكم ملك | [illegible] |
| ن | كمل نصاب احدهما بالاخر | والمحو | لو كانت ابتداء ملكهما ثم خلطا في صفر فاحكام | ا | الخلطة لا تحد | ث |
| ث | بوتها الا في العام الثاني | في | ما بعده ويتراجعا فيما ياخذه الساعي | وف | المال لا تلزمه تسليم | ها |

بحر الكامل وهو متفاعلن ستة اجزاء وبعده

باب زكاة النبات

باب زكاة الدراهم

باب زكاة العروض

باب زكاة المعدن

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| م | ن خيار ماله فان سمح و | اخر | ج كريمة قبلت باب زكاة النبات | هذه | الزروع ما ادخر منها وحصـ | ل |
| ا | لاقيات به وجبت الزكا | ة | فيه اذا كان مما ينبته الادميون و | كلها | سواء في الحكـ | م |
| كا | لحنطة والشعير ونحوهما و | قد | الحقوا بذلك القطنية واما الثمار فيجب ال | تجر | ى في هذا الحكم ويخر | ج |
| م | نها الزكاة لكن لا يلز | م | الا في الرطب والعنب فقط ولا يجب في الجنس | ما | لم يبلغ نصابا والقد | ر |
| له | بعد تنقية الحب | عا | يخالطه وجفاف الثمار خمسة اوسق و | بعد | ذا مما يدخر فـ | ى |
| و | عائه وقشره كالارز ونحو | ه | فنصابا عشرة ويكمل النصاب بثمرة عام وزرعه فيها | تقو | ل العلماء انه الاصـ | ح |
| هـ | ذا اذا حصدت فيه و | ا | الواجب العشر فيما سقى بالمطر ونحوه فان | ظهر | لتحصيل السقي اثـ | ر |
| و | مؤنة مثل السقي | بو | ضع الدواليب ونحوها فنصف العشر وان سقى | من | هذا وهذا اخرج ذلـ | ك |
| م | قسطا على ما سقى | بكو | او غيره باب زكوة الدراهم و | الد | نانير الذهب والفضـ | ة |
| ت | جب فيهما الزكاة | و | ذلك اذا بلغ نصابا فما زاد فاذا | ار | الحول وفي ملكه امـ | ا |
| ف | ضة عددها مائتا درهم | ا | وذهب عشرون مثقالا لزمه ربع العشر ولا يجي | الى | تكميل احدهما بالاخر بـ | ل |
| ا | لردى من الانواع ويكمل با | لحس | منها ولا زكوة في حلي مباح باب زكاة | العر | وض من اشترى للتجـ | ر |
| ع | رضا بنصاب | من | الاثمان بنى حوله على حول الثمن وهذا خا | صة | في الاثمان ور | وى |
| ا | للاصطخرى وجه | مص | ح بانه لو اشتراه بنصاب سائمة بنى عليه | ولو | كان معه عرض للقنية ا | و |
| ن | قد دون النصاب | فا | ن حوله ينعقد من وقت الشراء و | كذلك | لو رد الى النقد في اثنـ | ا |
| | سنة وهو دون النصاب فا | دار | ه للتجارة واشترى به اثناء الحول | [illegible] | تقوم برأس المال ان حصـ | ل |
| ت | ملكه بنقد والا فبنقد | ا | لبلد والربح تابع للاصل ما لم ينض | واذا | ملك ماله او باع مـ | ن |
| هـ | ذه السائمة نصابا وقصد | الحيـ | كره وانقطع الحول ولو اشترى بعرض | اضيف | الى التجارة اصنا | فا |
| ا | جرى بها لم ينقطع الحول | و | الله اعلم باب زكاة | ا | لمعدن والركاز من اخـ | ذ |
| جز | أ من النقدين فكان ما | قبض | نصابا من معدن في ارض تملكها او لم يقع | سم | الملك عليها لاحد فالاصـ | ح |
| ا | نه يلزمه في الحال ربع العشر و | على | القول الاخر الخمس ويضم بعضه | الى | بعض لاكمال النصاب ان استمـ | ر |
| و | لم ينقطع العمل وان كف | ايد | ى العمل لغير عذر لم يضم وان كان | ا | لك العذر ضم فانه لم يتر | ك |
| بعد | وشله الركاز وتساو | يهما | في اشتراط النصاب وعدم الحول محكوم ا | سم | الركاز يقع على ما دفنـ | ه |

هلاك

الرجز مستفعلن ستة اجزاء ...

باب زكاة الفطر

باب قسمة الصدقات

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هـ | لاك الجاهلية ووجد في موات | وا | ن كان من دفين الاسلام فهو لقطة | فا | ن كان جاهليا واحيـ | ا |
| الر | جل الارض ملكها | ود | خل الركاز في ملكه فان باعها لم يملكه ا | لثاني | وواجبه الخمس وهذا القو | ل |
| جز | م العلماء به بلا دفا | ع | ومصرفه مصرف الركاز باب زكاة | الفطر تجب | ى وجوبها من هـ | و |
| م | سلم حر فضل عن قوت | الكل | ممن يلزمه نفقته قدرها او بعضه عمن تجب نفقته | ود | أس المال النصو | ض |
| ت | قتضى انه يباع | في | الفطرة ولا يلزمه اخراجها الا عن مسلم ويحكم | بالاضافة | للوجوب قبـ | ل |
| ف | ى الفطرة على المو | دا | عنه ثم يتحمله المودى ثم انا | نقو | ل الصحيح انه لـ | و |
| ع | جز ولم يقد | رالا | على البعض بدأ بنفسه ثم بزوجته ثم | ابن | صغير ثم اب وقالو | ا |
| ل | ا يلزم في وجه معسر والكل | دب | لها ان تخرج عن نفسها وما فطرة الناشزة | فلا | تجب على الزوج مـ | ع |
| ن | شوزها ثم وقت الوجوب | وهو | حال غروب الشمس ليلة العيد والافضل ا | ن | يبادر باخراجها ويحصـ | ل |
| سا | بقا للصلاة ويجوز | في | سائر رمضان وان اخرها عن يوم الفطر اثم | وذا | ك الامر بالقضاء وان اضاع | ثم |
| تـ | قديره بالوزن ا | سبع | واحوط فهو ستمائة وخمسة وثمانون قفلة و | زيد | خمسة اسباع قفلة وكا | ن |
| هـ | ذا من قوت البلد فان | تعذ | ر تعذر فعدلوا الى غيره من الاقوات التي | جر | ى فيها وجوب الزكاة اجز | ا |
| ا | خراجه ويجزي الاقط واللبن | المخيض | ضبطا بانه ياتي صاع اقط فلو تصور | رتب | زكاته من قوت فعد | ل |
| جو | دا الى اعلى منه جاز | وفي | ما دونه لا يجوز وليكن جنسا واحدا | فلا | خذ صاعا من جنسين وا | ن |
| ز | اد احدهما بما | سنه | على الواجب باب قسمة الصدقات منعها اثم | وعزر | ربا في قول مغلـ | ظ |
| ا | وجهها ونصف ماله فمن | غنيـ | دينارا او خمسة وعشرون ونصف او غيره زكاة واد | بالا | لكن الاصح لا يلز | م |
| ثم | يعزر وان ادعى عدم | و | جوبها عليه فذكر لذلك سببا باطنا او | ضافه | الى ما يخالف الظاهر لز | م |
| ا | حلافه في وجه وان تا | ست | نفذ بالسلف واخرجه ذي له بالبركة | و | ان مات قدمت على الديون | [illegible] |
| لـ | تعلقها بالعين والا | ما | م اذا تسلفها من غير مسئلة منهم | الحو | ج عليه انه لم يغرم ولـ | و |
| هز | ة الفقراء للسعا | سه | في الاقتراض فهو من ضمانهم او المالك فالمعروف | | انها من ضمانه او هـ | م |
| جـ | ميعا سألوا منه | اخذ | ها فهي من ضمان الفقراء ولا تجزيه الصدقة | التي | عجلها الا اذا تفـ | ق |
| و | جود استحقاق الفقير حال | الد | خول في الحول فان مات قبل الحول او | بعد | ترفع واستغنى عنها بشـ | ى |
| هو | من غيرها فالعلماء فيما | ملو | ه يقولون لا تجزيه لا انه يسترجع منهم | الا | اذا لم يبين عنـ | د |

مفاعيلن ستة اجزاء يستعمل مجزوا تم

فالمقيد يكون مجزوا ووافر ... ثم المجدد ... من

ما سلم انها زكا ة معجلة وصرفها الى الامام فضل اذا انتشر سا عاعنه فعل المعرو ف

فان كان جايزا فالافضل في ذلك ان يفرق بنفسه ويحرم نقلها و العبرة ببلد المال ولـ ا

عذر له من النية و الله خير للنية عن وقت الدفع لا يجزئ وان ادى قبل ان تقيم وكيلا ونويت و لم

ينو هو جاز واهلها ثمانية لا تا سع لهم العامل ولا يجزئ لا الى الفقيه الا مين الذي يحصل صدقة المتصدق ق

له واحدا كان او عشرة على قدر الحاجة واجرة عمله واختلف الاخيار في الفقير ومذهبنا في

نعته انه من ليس له من المال والكسب ما يقع موقعا من كفايته فالحكم ان يعطى كفايته والمسكين عند

سائر اصحابنا من لم يقعده العجز انهما المرتبة بل يجد بعض كفايته ولو ادعى عيالا فقد يكون

تقول والبينة ممكنة فتلزمه و لو ادعى انه غير كسوب وكان قويا قبل منه مجرد

هذه الدعوى بلا يمين فيها ثم المؤلفة وهم كل مسلم ضعيف النية اذا دعيت اليه خير حسن اسلامه او

اصيل في الشرف يرجى اسلامه اخوته ونظرائه باعطائه وقوم اذا اعطوا قاتلوا العدو في الاصحاب من هو مرد

جزا هم باهل المصالح وفي الصحيح انهم يعطون من الزكوة ولكن قال الشافعي هذ ا

لصنف جمع بين سنة القرأة والمؤلفة فيعطي بهما وبعضهم يقول المراد ان القوم

ساو والطائفتين فيجري في احدى العطيتين اما مع القرأة او المؤلفة ان شاء ثم الكاتبون وليس

تقبل الدعوى من و احد للكتابة الا ببينة او اقرار سيده ولا يعطى نيلا على ما يؤدي فلو امسا

عليه مائة ووجد ... زدناه مثلها فقط ثم الغارمون وهذا المعنى قائم في كل من عليه دين ثم

من غرم مالا اصلح لبراو ادم بين الناس اعطى مع الغنى لان المصلحة الذي انتصب لها لغيره والغرم المجرد

لمصلحة نفسه لا يزاد فيه على ما اخرجه وفي سبيل الله الغزاة وا زيد هم وصفا بانهم الذين لا

مرتبة لهم من الديوان فيعطى ا لغني وغيره وابن السبيل لسافر من بلد باد يسافر لغير المعاصي

جاز ان يعطى مع الفقر سد حاجته ذهابا وايابا اذا ثبتت حاجته وزعن بها البينة ولا يحل

ز كوة لمخالف في الدين ولا هاشمي ومطلبي باب صدقات التطوع الصدقة لا تجوز

و هو محتاج اليها لمثل ا بن وغيره ممن يجب نفقته وان تصدق من لم يما رس الصبر على الاز مة

انثم اذا اتى على ماله و عمه بالصدقة وقضاء الدين مقدم على الصدقة لانه لازم فان فضل من

ا لكفاية شيء فالوجه ان يتصدق به باب الصيام قد ثبت في الخبر كون صوم رمضان ركنا

باب صدقات التطوع

باب الصيام

لازما

11

الرمل وهو فاعلاتن ستة اجزاء استعمل مخذوف

الحروف الاحرف واحد وهو الروي ولاقم

لازما من اركان الاسلام وو رؤية الهلال واستكمال شعبان ثلثين شرط لان يحصل الوجوب ويقبل فيه عد ل

واه فان قامت عند القاضي بينة في يوم الشك امسكوا وقضوا ومثله في الامساك مفطرا ح

مسافر الى بلد بعيد عند في سفينة فوجد اهله صياما او تحرى الاسير لعل يصادفه الشهر او شهر

لا يكون قبله فيجزيه و ان صادف ما قبله لم يجزه ولا يجزئ نية الفرض نهارا ولو بكرا ليها بل يجب التبييت المعر وف

و النفل من نواه قبل الزوال اعطا حقه ويجب تعيين فرض الصوم بالنية ولو قال ليلة الشك نويت اصوم ان

هـ يجم عدوا وضحوا صيا ما لم يجزه ويبطل بدخول عين جوفه ولو خلط دم اللثة بريقه مثلا

و وصل الى جوفه افطر ويقضي ويلزم لا مساك عن الجماع والقيء بالاستدعاء يبطله واما ان غلبه فلا جناح

فا ن اكل او شرب كثيرا او قليلا ناسيا لم يفطر ويفطر اذا استمنى وكذا بخروجه من اثر

عناق ولمس وقبله وفي خروجه بالنظر والفكر لا يفطر والقبلة لذي الحر كة مكروهة الا من عرف

لنفسه ما يملك بارب في السنة النهي عن الحجامة وهي مكروهة والمعروف الجواز وان اكل شاكا قالوا

ا فطر في حالة دون حالة والحالة التي لا يفطر فيها ان ياكل شاكا في الفجر و التي يفطر فيها ان ياكل ولم يتضح

تشككه في الغروب فان اكل بعد الاجتهاد جاز فان بان غلط قضى ولو تر جح عنده الفجر او شاهد

نوره وبفيه لقمة فرد ها من فيه او كان قد واقع امرأته فنزع نفسه عنها لم يضر ولو

سافر فله الافطار اخذا بالرخصة ان طال سفره ويقضي الا ان صومه افضل والمرأ ة

تجتنب الصوم وجوبا مدة الحيض والنفاس وتقضي ويبطله ما يقع اسم الجنون ولو لحظة ا و

هـ مدة الاغماء الكا ئنة في جميع النهار فان افاق في اثنائه و لو لحظة صح ويسقط عن الصبي فاذ ا

ا فاق المجنون او صعد الصبي الى سن البلوغ لم يجب القضاء ومن يخبر لصوم رمضان وهو مستكمل

جميع شرائط الوجوب ه فافسد بالجماع عامدا لزمته الكفارة الثابتة في الخبر وهي عتق رقبة كاملة

زا ئد عليها وهي عنه فقط ثم ان عجز صام شهرين متتابعين ثم الكفارة اطعام ستين مسكينا ثم

استقر وجوبها في ذمته الى ان يجد والشيخ الكبير اذا كان عاجزا عن

عمل الصوم فقد جوزت له سنة رسول الله صلى الله عليه وسلم الافطار وصا حبه فرضه ان يطعم مد ا

من الطعام لكل يوم واتسع و القول في ذلك فاوجبوا الفدية على الحامل و المرضع اذا افطرتا لاجل

خذ رهما على ولديهما و يقضيان وكذلك من اخر رمضان حتى اظل رمضان آخر والاصح

العروض ثم التذييل وهو مستفعلان

كقولك الحركات الا التوجيه العجم

باب صوم التطوع

باب الاعتكاف

باب الحج

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| و | جوب التكرار فلو اخر مثلا | [illegible] | عاما لزمه عن كل يوم خمسون مدا | و | يكره للصائم السواك بعد الظهر | ر |
| فـ | ى الصحيح ومن صام | ا | له بالسحور وتأخيره افضل ويستحب اذا | مسى | وتحقق الغروب ان لا يتر | ك |
| الـ | مبادرة الى ا | لا | فطار ويكره الوصال باب صوم التطوع | و | يسن صوم الاثنين والخميس ويوما | |
| عر | فة وعاشوراء كذلك وا | دا | مة مستحبة والايام البيض وستة من شوال ومن | اصبح | متطوعا بصوم او بركعات | ت |
| و | قطع ذلك جاز ولو قضى | فهنية | الصوم او الصلوة حرم القطع عليه | و | قيل يجوز له ذلك وهذ | ا |
| ضـ | عيف ومن دخل في تطوع | الحج | والعمرة لزمه اتمامها والصوم يوم الفطر و | الاضحى | وايام التشريق لا يحـ | ل |
| ثم | ان صامها لم يصح | و | يكره صوم الجمعة وحده باب الاعتكاف وهو من المندوبات | وبا | ويستحب كل وقت الا | |
| ا | نه في العشر الاوا | خر | من رمضان افضل لطلب ليلة القدر | وماذا | الشافعي يرى انها | |
| لـ | يلة الحادي والعشرين يخر | ج | منها وفي ليلة الثالث والعشرين وشرطه النية | وما | كان منه بصوم فهو افضـ | ل |
| سـ | واء كان في تطوع او | في | نذر ومن نذر اعتكاف مدة متتابعة لزمه تتا | بر | عليها فان اوجبـ | ت |
| ر | واحه عن المعتكف او | شوا | غل كالمرض والاكل والشرب والروا | ح | الى البراز او خرج وهـ | و |
| يـ | جب عليه الخروج كحيض لا يمكن بزوا | ل | الاعتكاف عنه او غرق او اداء شهادة تعينت | وما | اشبه ذلك فلا حر | ج |
| عـ | ليه ولا بطلان وان خرج | ح | ام مما له منه بد كالزيادة وصلاة الجمعة | انفك | حكم التتابع وبطل فـ | يه |
| و | لو خرج من المسجد الى | البر | او جامع امرأته عامدا بطل اعتكافه | وما | كان في حد المسجد لا يضر وذ | كر |
| هو | المنارة الخارجة ا | ولدا | في على بابه ونحوها ولا تعتكف امرأة ولا | فتى | مملوك بغير | قول |
| مـ | ولى وزوج وللمكاتب التغيير | كب | ذلك بلا اذن باب الحج هو فرض | و | الصحيح ان العمرة كذ | لك |
| سـ | بيلها الوجوب وهي | تشاركه | في كثير من الاحكام وسنذكرها و | مادام | الانسان لم يات بما | |
| تـ | وجه عليه اداؤه | في | فرضها لا يجوز له ان يحرم بغيره ولا | تقول | ان احرامه بغيره باطـ | ل |
| فـ | ى الحكم بل ينصرف | ا | حرامه الى الفرض ولا يجبان الا على | من | هو مسلم بالغ حر مستطيع | |
| عـ | اقل ويجب فيه ركوب ا | البحر | على الاظهر اذا لم يجد طريقا و | ذلك | اذا غلبت فيه السلامة والحـ | ج |
| لـ | ازم للمرتد ويأتي الصبي | بما | يستطيعه وينوب الولي فيما عجز عنه ومن | كان | غير مميز فلوليه ان يحر | م |
| نـ | يابة عنه والصحيح انما | يحتاج اليه | من مونة الحج وكفارة ونفقة | زيد | على نفقة الحضر يصر | ف |
| مـ | ن مال الولي | ثم | الاستطاعة نوعان احدهما من كان | قائما | بنفسه صحيحا واجد | ا |

سائر



مستفعلن مفعولات ستة اجزاء مكشوف العروض

فالميم روي والحركة قبلها توجيه والقيد

باب المواقيت

باب الاحرام

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سـ | اير ما يحتاج اليه من زا | د | ونحوه ذهابا وايابا بثمن مثل فان | بيعا | قيمته عن ثمن المثـ | ل |
| تـ | عذر الوجوب ولا مد | خل | للوجوب عليه حتى يكون ما يصرفه | زايدا | عن دين ونفقة تلز | م |
| فعـ | لها فان كانت | مكة | منه على مسافة القصر فلا بد من راحلة | لا | يشق عليه المشي والسقـ | يم |
| نـ | شترط له الراحلة وان كان | في | طرف الحرم وكذا العاجز عن المشي وان يكون | [illegible] | الطرق آمنة من غـ | ير |
| مـ | تخفر والنوع الثاني شيخ | عسا | وكبر او مريض زمن لا يستطيع الركوب و | كان | له مال يستأجر به ا | و |
| فـ | قير له ولد او امرأة ما | كره | فيجب عليه ايضا ويجوز النيابة في التطوع | و | يجوز كل يوم ان ينشـ | ى |
| عـ | مرة ومن كان | محرما | بالحج في غير اشهره لم يصح حجه وقد | [illegible] | له شهور شوال قالـ | وا |
| و | القعدة والحجة فمن احرم | ملبيا | بحجة في غير وقتها انعقد عمرة والافضل | قا | لوا الافراد ثم التمتع ثم القران وقيـ | ل |
| لـ | ابل التمتع افضل ومن تمتع | وهو | افاقي فاحرم بعمرة في اشهر الحج ولم | يما | طل بل حج من عامه ولم ير | ح |
| ا | لى الميقات لزمه دم فلو | عا | د الى الميقات واحرم به او كان حاضرا لم يلزمه | لانه | لم يوجبه شيء غيـ | ر |
| تـ | رك الميقات والقارن الطا | ري | على الحرم يلزمه دون حاضريه كالمتمتع و | اخبر | وان حاضر من كان بمـ | كة |
| سـ | اكنا وكذلك قرى | البلد | والتي دون مسافة القصر الحرم جعلو | ها | كمكة فان لم يجد صام | قبل |
| تـ | مام الحج ثلاثة واسكا | نتيه | يرجع الى اهله ثم يصوم سبعة ايام | وكذلك | يفرق اذا فاته الثلثـ | ة |
| هـ | ذه في القضاء وبين ما | اتى | به من السبعة باب المواقيت ميقات | ساكن | اهل مكة مكة وميقـ | ات |
| ا | لمدني ذو الحليفة والشا | مي | بالجحفة والمصري مثله واليمني يلملم والنجد وما والا | ها | قرن وللعراق ذات عرق ولـ | و |
| جـ | اء على غير ميقات يريدا | لنسك | احرم بمحاذاة بعدها ومن دون الميقات او في الحرم | ميقاته | موضعه ومن خر | ج |
| ز | ايرا البيت ناسكا فجا | و | ز الميقات واحرم دونه لزمه دم والمعر | وف | انه يسقط عنه ان عاد الـ | ى |
| ا | لميقات قبل النسك والاحرام منه | اتم | وقيل من دويرة اهله باب الاحرام ومن سننه | التي | تتقدمه الغسل ثم يحرم و | هو |
| مستقبلا | الرأس بعمرة او | حجة | ويستحب ان يكون احرامه حين | تنصب | به راحلته للارتحا | ل |
| الـ | ى قصده بعد ان استطيب | ثم | بعد ان يلبس ازارا ورداء ابيضين و | الا | ولى ان يصلي ركعتين والاحرام | نية |
| عو | ف اولى وهو الاخر | ا | م بمعين وان احرم مطلقا صرفه الى ما شاء من | فعال | الحج والعمرة ولو نو | ا |
| و | ضمن احرامه حجا وعمرة ا | جتمع | له ذلك ويستحب التلبية للاحرام وان يكثر منها عند | المضا | يقة وتغاير الاحوا | ل |
| مـ | ن صعود وهبوط واختلاط بين | الناس و | يرفع بها صوته ويستحب له بعد المسا | دعة | بالصلوة على النبي ثم | |

مطوبا موقوف الضرب
مطوية والكسف اعدام

الردف يلزم حرفان
الردف والروف
المكان

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ط | لب من الله ماشاء من دفع | خطب | وجلب خير ولايلبي في الطواف ويحرم عليه | ان | يلبس المخيط ما لم يضطـ ر |
| و | يحرم عليه لبس الخف | و | ستر الرأس ويجب بذلك الفدية للنساء ان يستر | ولن | ذلك الا القفازين لليـ د |
| ها | ذا حكم اللباس وا | علم | انه يحرم عليهن ستر الوجه ثم الطيب | و | استعماله في بدن و في |
| مـ | لبوس حرام على | الرجال والنساء | وكذا دهن شعر الرأس واللحية لا شعر | اذا | وبدن والفدية تـ لزم |
| وق | طع الشعر ونتفه من | المنا | بت وتقليم الظفر حرام موجب للفدية والجماع | و | مقدماته والتزويج وقبولـ ه |
| و | يبطل ان عقده والنا | سك | يحرم عليه الصيد البري ما دام محرما الا ماذ | كر | لغيره ولم يعن الذا بح |
| ف | يه بشيء فان اصطاده ا | و دخل | عليه ببيع لم يملكه ولزمه تخليته فان انفلتا | ومات | في يده لزمه الجزاء وان اضطـ ر |
| ال | ى اللبس او الطيب او | ا | لحلق او الى ذبح صيد لجوع او عدم | قدر | ه على غيره جاز فان |
| ضر | ى الصيد فقتله او ساور دفعا | بيت | او غيره فافترش الجراد في طريقه فوطئه | ينه | جاز ولا كفارة ومن تأذ ا |
| ب | بنبات شعر في عينيه | وحمل | نفسه على نتفه جاز ولا كفارة و | ان | لبس او تطيب وهو ناس او جاهـ ل |
| مـ | ـنعه لم يلزمه كفارة بخلاف | الفر | ض للشعر ولتقليم الظفر او لقتل الصيد فانا | نقول | فيه وجوب الكفارة بمجر د |
| ط | ريان الفعل سواء كان عالما | بم | ام لا وللمرأة لبس المخيط وستر الرأس الا الوجه فان | ارا | دت الستر استدلت بثوب متجا ف |
| و | لايقع شيء منه | على | بشرة الوجه باب كفارة المحرم اعلم | ان | من باشر دون الفرج بشهوة ا و |
| ي | دهن رأسه او يقلم من | يديه | او رجليه ثلثة اظفار او يحلق ثلث شعرات او | تطيب | او لبس فعليه دم ومع هذ ا |
| هـ | ـو مخير بين الدم | وا | ن يطعم ثلثة مساكين لكل مسكين نصف صاع | و | يصوم ثلثة ايام ومن جامع قبـ ل |
| و | جود التحلل الاول | فا | ن نسكه يفسد ويلزمه اتمامه مع | هذا | يجب القضاء من حيث احرم ووجـ |
| ال | ائمة ان القضاء يفتر | ض | على الفور وان اقضى والمرأة معه | لن | يجوز ان يجتمعا موضع الوطئ ومن |
| كـ | ـان جماعه قبل التحلل ا | لما | ني به اولا فكفارته بدنة وما | يكون | بعد التحلل الاول فكفارته عندنا |
| ش | اة ولا يفسد الحج و | في | صيد المثل اذا قتله مثله من النعم و | كذلك | يجب القيمة فيما ليس له مثـ ل |
| ف | جزاء النعامة بدنة و | جو | با وفي الغزال عنز والارنب عناق والبرغوث حفنة | وما | كان من صغير او كبير او صحيـ ح |
| ا | ومكسور او ذكر او | ا | نثى وجب مثل صفته وهو مخير بين ان يخرج ما | يشبهه | او قيمته طعاما او يصوم بقد د |
| عد | د امداده وفي الحمامة شاة و | نبه | العلماء على العلة وهي العب والهدير وقالوا | الحر | مة تعم كلما شاد ك |
| ا | لحمامة فيها وسائر الطيور | غا | ية ما فيها القيمة فان كسر بيض صيد قال المعروف | و | فيه وجوب قيمته وسو اء |

باب كفارة الاحرام

ماكولا



سابع مرتين النسج نر
وهو مستفعلن بعد

الخذف شل المقام الخام
والمفيد الموس

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| مـ | ـاكولا كان الصيد او مبتا | سلا | من ماكول وغيره ويحرم الصيد | الجا | د للمحرم وكلما ذكرنا من واجبا ت |
| سا | بقة في المحرم فهي | له | ويحرم قطع شجرة الحرم وفي الكبير بقرة لا | زمة | وفي الصغيرة شاة ومتـ ا |
| عـ | ـقر غصنا منها وقطعه | تقر | ر عليه ضمان ما نقص وحشيش الحرم اليبس | للا | نسان قطعه فان تنا و ل |
| مت | ناول منه ضمن قيمته ويحرم | با | لمدينة الصيد ولا يضمن ومن قصر في الا | فعال | ولزمه دم فحل الذ بح |
| حر | م الله ووجب صرفه | الى | فقراء الحرم باب صفة الحج اذا ا | لم | المحرم بمكة اغتسل حينئذ |
| كـ | ـغسل الاحرام وحمد | الله | ثم دخل من اعلاها وفي الخروج يخرج من اسفلها | و | اذا راى البيت فتل |
| ثم | باذائه اضطبع | وكسا | عاتقه الايسر بطرفي رداءه وطاف من الحجر | الا | سود واستلمه وقبله وحاذا ا |
| أ | لحجر وجعل | البيت | على يساره فاذا بلغ الركن اليماني فالاستلا | م | له سنة فيطوف سبعا يرمـ ل |
| مـ | ـنها في الثلثة الاولة | ثم | يمشي في الاربعة وكلما حاذ الركنين كان | الام | في التقبيل والاستلا م |
| نـ | ـحو ما كان ويأتي بالد | عا | والذكر المأثور في الطواف ولا ترمل المرأة | ولا | تضطبع واذا فار ق |
| سـ | ـترة او طهارة او طا ف | د | ائرا على شاذروان الكعبة او على جدار الحجر | في | وسطه لم يجز ثم يصلي بالمقام |
| ر | كعتين ثم يخرج | سا | ئرا الى الصفا من بابه ويسعى فيبدأ به وورد | النهي | عن البداية بالمروة ولا |
| حـ | ـساب للمبتدي بها بالشوط | لما | تي به اولا حتى يأتي الصفا فيبدأ به | و | الاولى ان يرقى عليه الرجـ ل |
| وهو | سنة مأثورة و | غا | ية ما يرقى قامة ثم ينزل ويمشي فاذا بلغ موضع السعي | حر | ك دابته وسعى ثم ير خي |
| مـ | ـشيته الى المروة وا | تما | يسعى الرجل وتمشي المرأة ثم يستحب الذكر المعرو | ف | في السعي ويسعى بينهما |
| سـ | ـبعا وفي سابع الحجة | و | قت الظهر يخطب الامام بمكة ويأمر المسافر و | المجا | ور بالغدو الى منى ثـ م |
| تـ | ـقدم اليها في الثامن و | لم يزل | بها حتى يصلي العصرين والعشائين والصبح و | زا | د في اللبث كما قالوا |
| فـ | ـاذا ذرى على ثبير | مبا | دي ضوء الشمس سار الى الموقف واقام بنمر | ه | واغتسل فاذا دخـ ل |
| عـ | ـليه الظهر خطب خفيفا | وكا | ن الخطبتين وصلى الظهر والعصر ثم راح | نحو | الموقف وجعل الاما م |
| ثـ | ـنزوله عند الصخرات او كذا غيره | وانما كان | واقفا من عرفة كفى و | زيد | احد الى انه يتـ قيد |
| مـ | ـنها بمكان يستقبل القبلة | واقام في | عرفة الى الغروب داعيا معلنا | با | لتحليل ويقول اذ ا |
| فـ | ـرغ من التحليل وحده لا شريك له له | الملك | وله الحمد وهو على كل شئ قدير ومن كان نا | سكا | وحصل بعرفة بعد الزوا ل |
| عـ | ـاقلا وبعد فجر النحر فانه | قد | ادرك الحج والا فقد فاته ومن دفع دو | ن | الغروب استحب له اراقة د م |

باب صفة الحج

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| و | يبيت بالمزدلفة ويأخذ للجما | د | الحصى منها ويجوز من غيرها ويصلي | البا | بت بها الصبح مغلسا ثم بعد | و |
| ل | لقرح فيقف ويذكر الله تقدس | ستا | اسماءه ويدعو الى الاسفار ثم يدفع | فاذا | بلغ وادي محسر فلا بأ | س |
| ا | ن يسرع ورمية حجر | وا | لاسراع هذا سنة ثم يرمي جمرة العقبة | كان | يكبر مع كل حصاة وليس | س |
| ت | تلبيه بعد ذلك ورمي الجما | بعيو ن | الحجر شرط فلا يجزئ غيره ثم يحلق ويقصر | الا فى | المطلق من ثلث شعرات ولا | يلزمه |
| م | ما فوقها ثم تفيض للناس | عاما | الى مكة لطواف الافاضة يوم النحر ويجوز ان يؤ | خر | واول وقته بعد نصف ليلة النحر | |
| س | سواء رمى ام لا فان | كان | قد سعى بعد طواف القدوم كفاه ذلك | الفعل | وباثنين من ثلثة يحصل | سكر |
| ت | تحلل اول وهي الرمي و | ا | الحلق والطواف ويحصل اثنان بالثالث ولا سعي | حر | ام بعد التحلل الاول الا الخصلة | ان |
| فصل | النكاح وعقده فا | التخلف | التحريم فيها ثابت الى التحليل الثاني ثم ينصر | ف | الى منى بالرمي والمبيت وهو | ثلث |
| نا | نامره ان يرمي فيها الجمرات | و | هن ثلث سبعا سبعا ووقته بعد الزوال ليس | عله | فعله قبله ويجوز رميها | ها |
| سا | سائر اليوم ويخرج وقته | لد | ى الغروب واما النفر في اليوم الثاني | فجز | م العلماء بجوازه لرا | جح |
| ت | تعجله بعد رمية جمار | ه | وقبل الغروب ولا لم يجز وترتيب الرمي لز | مه | فيبدأ بالاولى وهي تعر | ف |
| سنا | سنالك ثم الوسطى و | الا | خيرة جمرة العقبة ومن ترك الرمي ولو | بلغا | ثلث حصيات لزمه دم ويصر | ف |
| ا | ان ترك حصاة مداو | اشرف | الاماكن البيت فيستحب ان يكون | اخر | عهده النظر اليه اذ | ا |
| جز | مت الخروج وذلك | سنة | بعد طواف الوداع وطواف الوداع اد | ه | واجب ويجبر بالدم ان اهمل | ل |
| ا | ما الحائض فلا يجب | ا | لوداع عليها فاذا طهرت فلا تؤخر الخروج | تقول | بمنعه مطلقا بل لو تحركت | ت |
| ا | او وقفت في | ربع | مكة لطلب شيء او نحوه من اسباب السفر | لم | يضر وان كان لغيره اعاد | فما |
| س | سوى اسبابه فلا تقفن | وتستفيق | في تحصيلها باب العمرة اذا ارادها لم | يكف | ان يحرم من الحرم بل من | ن |
| ت | تلقاء الحل وافضله الجعرانة | و | الآفاقي يحرم من الميقات ثم يطوف ويسعى ويحلق | ولم | عليه شيء والمكي اذ | ا |
| عم | عملها في مكة قد | ستو | ولم يخرج لزمه دم فصل واركان الحج ستة | و | هي الوقوف والاحرام قبل | ل |
| مع | مع الطواف والسعي والحلق | ما | السنن فالترتيب والواجبات الاحرام من الميقات والرمي و | لذلك | يجب في الاظهر | ر |
| طو | اف الوداع وفي مسا | ئة | بالمزدلفة الى نصف الليل والمبيت ليالي منى قولان | جزم | الاكثرون بوجوبه وليس | سو |
| ي | يعدون ما بعد هذا | في | المناسك الا سنة والركن والواجب اذا لم | يفعل | حصل الاثم لكن يحصل | ل |
| ا | انجبران في الواجب بالدم والا | جما | ع منعقد ان الركن لا بد من ا | ن | يفعل باب الاحصار كل | الحاشو |

باب العمرة





| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ض | ر لا يجب عليه ان يؤ | دى | الحج فان خاف بعد الاحرام فهو محصر | و | يتحلل بذبح شاة حيث احصر ويجب | ب |
| ب | بدل الشاة ان عدمت وعو | الا | طعام بقيمة الشاة فان فقد تصام كما | يعدلون | عن كل مد يوما | ا |
| ثم | العبد اذا احرم بلا اذن | وفى | مولاه تحليله وللزوج تحليل امرأته وحكمهما | بلا قضا | القضاء عن محصر متطوع | ع |
| ا | ما الفرض فيجب ان يقضيه | وتوف | حقه ومن فاته الوقوف تحلل بالطواف وا | ل | لسعي والحلق كما قالوا | وا |
| لكن | لكن يلزمه القضاء فورا | في | الاصح ودم ايضا باب الاضحية هي سنة و | للنو | ضحى وقتها فمتى | لاح |
| خا | رجا قرص الشمس ومضى قدر | ر | كعتين وخطبتين دخل وقتها ويبقى الى | ان | يخرج ايام التشريق ويجب بالنذ | ر |
| ف | ان فات وقتها و | مضى | قضى المنذورة دون التطوع فان كان قضاه | لم يفعل | غير اضحية وليكف | ف |
| ي | ده عن ازالة شعر وظفر | ن | اراد ان يضحي من اول العشر ثم ان | الذي | يجزئ ان كان ضأنا | ا |
| ف | الجذع وان كان | من | الابل والبقر او المعز فالثني و | لم | يجيزوا دونه وواحدة الابل | ل |
| و | البقر تجزئ عن سبعة | السنة | والشاة عن واحد ثم الافضل فيما | يذكر | دون البدنة ثم البقرة والذي | ادت |
| هو | اذا كانت البدنة | المذكور | عن واحد ثم الضأن ثم المعز اما المعيبة | فا | ن كان عيبها ينقص لحمها | ها |
| فا | نها لا تجزئ وليأكل | قد | ر ثلثها ويتصدق بثلث ويهدي ثلثا فا | عله | يصيب السنة وليس | س |
| عليه | الا التصدق بجزء منها ولا يأ | س | بشرب فاضل لبن المنذورة ولا | يرفع | من لحمها شيئ | ئ |
| ا | لى غير الفقراء و | الله | اعلم باب الصيد والذبائح لا يحل حيوان | ابدا | بغير زكاة | سو |
| تنا | ول السمك والجراد لما | رو | ي في الخبر ويشترط كون الذبح لمن | يقول | بالاسلام او كتابيا يحل | ل |
| مسا | لحته بكل محدد يكسب جرا | حة | الا الظفر والسن والعظم ولو | ضرب | الصيد بمثقل فمات لم يحل وقد | د |
| سن | سن ذبح المقد | و | ر عليه لاستقبال والتسمية والصلاة على | الر | سول وقطع الاوداج فالس | حيل |
| تذ | بح مضجعة وكذا البقر وسائر ا | نو | اع النعم الا الابل فانها تنحر ومنحرها | الرجل | قائمة والذي وجب | وا |
| فعا | ليه من ذلك قطع مجا | ر | ي الطعام والنفس وهو الحلقوم والمري وما | يضم | الى هذا مما نقل | ل |
| ن | عده سنة وان ا | ر | سل جارحة بصيد فقتل نظرت | اول | الامر في الجارحة هل تكر | ر |
| ف | ي طلب الصيد سعيها دا | ئحة | وغادية حتى تعلمت بحيث تؤمر فتفعل وتنهى عن | الفعل | فتترك الفعل ولو | و |
| ا | دركه جايعا لم يأكله | واقام | بمسكه فان ارسله من تحل ذكاته فقتله او | كسر | ما يمتنع به كجناح وقوائم | م |
| ع | دونا القتل ذكاة وثبت | الملك | له في المكسور ان قتله بظفر او ناب ا | ما | بالقتل ففيه قولان لو مسـ | ثل |

باب الاضحية

باب الصيد والذبائح

ستة اجزاء ثم المضارع مبنى على مفاعيلن

عاجلن وقائل واما الطلاق انقسم على ستة اضرب اما مجرد او ملازم

باب النذر

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ل | ه صيد فرماه حل | الا | كل منه ان جرحه السهم او ان رماه فوقع | فيه | ان يموت في موت | عاجل |
| ا | ماشل ان يقع على | شرف | فيتردى منه او في نار لم يحل ولو شاركه جارحة | اخرى | للمجوسي او اكل الجارحة ا | و |
| تسـ | ى التعلم او استرسل | في | طلب الصيد بنفسه لم يحل اكله | فان | جرحه جرحا غير | قاتل |
| تـ | فلت معه وغاب في | الحال | ها ربا فوجده ميتا بعد ذلك | كان | اكله حراما | وما |
| سـ | ذه الجوارح والمرامي كا | فة | اذا ارسلت على غير صيد او قصدت في | ارسالها | بارسالها غرضا فصادت صيدا | |
| ا | عترض لم يحل وان رمى صيدا | و | هو يظنه غرضا او رمى صيدا فجاوزه | | الى غيره فقتـ | ـل |
| جا | ز اكله ولو نصب سكينا | لما | د من الصيد فوقع عليها فمات لم يحل | ا | لا اطعمة لا يحل من الاهلية لحم | |
| ذا | ئد على لحم النعم فيما | علم | الا لحم الخيل ويحل في الوحشية لحم الثعا | لى | والارانب مـ | طلقا |
| ثم | اليربوع ويدخل في | الملك | والظبي والضبع وما تولد بين | | ماكولين فهو ماكول وفيما كا | ن |
| مـ | ن السنا نير | المو | لودة في البراري خلاف وكذا في ابن | اوا | والصحيح التحريم ويحل كلما سبق | |
| ضـ | ب وقنفذ ولا | يد | خل معه الوزل ويحل ابن عرس عندا وكذا الوبر | كثر | هم ويحل بقر وحش وحماره وليس | |
| ا | لحشرات ماكوله وا | بو | التحليل اكل ما يتقوى بنابه كالسباع | فا | ما الطيور فيؤكل منها الحمـ | |
| د | الـ ود حاجه و | فا | ختة وحمام وعصفور ونحوها وحرموا من الطيو | د | ذوات المخلب وما يقع | على |
| عـ | روض الجيف باكلها ويكر | ه | اكل الجلالة ويحل من حيوان البحر السمك بلا مد | فع | وكذا غيره في الاصح وليس | |
| مبـ | احا منه السرطان | والد | واب التي تعيش برا وبحرا ويحل طيره الا اللقلق | ولى | لى بالحرا الا ان | تها |
| نـ | راهة عن مكاسب ذوي الدناء | ه | كالحجامة ونحوها وكل طاهر لا يضر حلا | ل | سواء كان ذلك من | |
| يـ | ؤكل في العادة ام | اقدم على | اكله اختراعا منه ولا يحل نجس | وا | بيح للمضطر ما كان محرما | |
| عليـ | ه كالميتة واذا | عد | م مسيغا لغصص بطعام اباغة الخمر ولو | نضب | بمرض او عطش ودا | م |
| منـ | ا ان نبح له ا | ن | يتداوى بالخمر لم تفعل باب النذر ما | عدا | القربة لا يصح نذره اما | |
| فـ | يها فيصح سوا المجازاة ا | واخذ | على نفسه ان يفعله ابتداء ويشترط ذكر | ه | فلا يصح لنذر بمجر | د |
| ا | لنية وحد | ها | وصفته ان يقول لله على كذا ويكفيه ان | نقو | على كذا | او |
| عـ | مل كذا يلزمني ونذر اللجاج | هي | كقولك ان كلمت فلانا فلله على ان | اعطى زيد | اكذا فهذا | لم |
| يـ | وجوبها بعينها بلا خبر | وبين | الوفا بها وبين كفارة اليمين ولو حرم | شيا او | كان مباحا ف | لا ذم |

له



فاعلاتن مفاعيلن واجزاوه ستة تفعل

الخروج او مردف او ملازم للردف او الخروج او مجرد

باب البيوع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لـ | ه اذا خالف كفارة يمين | وفي | فعل الواجب والمعصية لا يصح النذر واذا | الزم | نفسه | |
| نـ | حو حرم الله في | سنة | معينة او مطلقا لزمه قصده بحج اما | او بعمر | ة ولو نذر قصده ماشيا | |
| فا | لمشي يلزمه فان عين مشيه | خمس | مراحل مثلا مشاها وان اطلق مشى منه | و | برة اهل ولو نذر بالحج ماشيا ا | و |
| علـ | ى مركوب لزمه | و | فاء نذره لكن من الميقات فان خالف الزمناد | ا | سائة ومسجد المدينة والاقصى بل | م |
| ا | لوفاء بنذر زيارتهما ولا | تسعين | لزيارة مسجد غيرهما معتقدا وجوبه بالنذر | و | لو نذر النحر بمكة ولم يذكر | ر |
| تـ | فرقة اللحم بها | لزم | النحر والتفرقة له وان نذر النحر والتفرقة | فيما | سوى مكة لزماه ايضا وان افر | د |
| نـ | ذر النحر عن | ا | لتفرقة لم يلزمه النحر ثم لينحر بمنى وما | شبه ذلك | من اطرا | ف |
| منا | وز الحرم ا | لملك | والموات سواء ولو نذر الهدي للحرم وسكت عن | النعت | لزمه الجذع من الضأن ا | و |
| ا | لثني من الابل والبقر | المو | صوف من الهدي المنذور للحرم | يتبع | فيه حكم الوصف والمعين بحكـ | ـم |
| عـ | ليه بوجوب نقله ثم | يد | فع الى فقراء الحرم كتاب البيوع و | منعوا | صحة البيع الا من عاقـ | ـل |
| يـ | كون غير محجور عليه | وجعل | الايجاب والقبول شرطا فاذا ارد | ته | قلت بعتك او ملكتك مخاطبا | |
| لـ | لمشتري وتقول | في | القبول اشتريت او ابتعت ويثبت الخيا | ع | المجلس فاذا تفرقا لـ | زم |
| نـ | عم لو اختاراه لزم مع | جس | المجلس لهما فان تبايعا وشرطا | اعراء | العقد عن الخيار بطـ | ـل |
| وا | جاز والخيار فيه اذا | حصن | بمدة ثلثة ايام فما دونها الا فيما | به | يحرم الربا وا | ول |
| ز | من الخيار العقد وقيل لا | تعز | ى اليه المدة الا من التفرق | ونعر | ضوا لحكم بالملك في مدته ولا ظهر | |
| ا | نه ان اختص بالخيار | وا | حد فالملك له وان كان لهما فموقوف وطا | ئفة | تختار انتقاله بالعقـ | ـد |
| و | طائفة تختار بقاه وان | اقام | المبيع تحت يد البايع فهو من ضمانه | و | لو تلف او كان المتلـ | ـف |
| هـ | و البايع قبل القبض عاد | الملك | اليه وانفسخ العقد وان اتلفه | غير | اما ان يكون المشتري ا | و |
| سـ | واه من سائر | الا | جانب فان اتلف بفعل اجنبي خير بين ان | يقو | م على المتلف او يفسخ وان | ا |
| تـ | لف بفعل المشتري جاز | شر | اؤه وقبض المنقول نقله وقبض غير المنقو | ل | كالعقار بالتخلية وا | لخروج |
| ها | ذا هو القبض المعرو | ف | باب لا يجوز البيع الا في عين طاهرة | فا | لو واما نجس العين فلا | |
| سـ | بيل الى جوازه فيه ولا | في | متنجس لا يمكن تطهيره ولا فيما لا ينتفع | به ويحرم | بيع كل معلو | م |
| تـ | علق به حق ادمي مثل | ا | لموقوف والرهون والمكاتب وام الولد ولا يجوز | | بيع الجاني المو | سر |

مجزوا او دوقف فيه بين باب مفاعيلن

اوملانية انا ليس الخروج المطلق المجرد

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| من جنايته ما رشا غل | لملك | وقبته على القول الاظهر الجد | يد | فان اوجب مالا شاغلا | ا |
| لذمته جاز وكذا اقصاصا في | اشهر | لقولين ولا يجوز بيع ما لا يملكه | البايع | الا من طريق ولاية ا | و |
| من طريق نيابة و ا | بعد | قول قديم فيجوز بيع الفضولي اذا قرر | د | وليس البيع للمعدو | م |
| جائزا والثابت ان | سنة | رسول الله صلى الله عليه وسلم د | نها | الصحة عن البيع اذا كان مجهو | لا |
| زمان اجل ثمنه او فيه غرر | ثم | بيع المجهول قدرا وصفة لا يجو | ز | وكذا بيع ما لم يره لا يجو | ز |
| ولا يجوز ثمن مجهول ا | ما | قدره او صفته وان باع شاة الا | يد | ها او الا حملها لم يجز ويحر | م |
| ان تعلق العقد في المبيعا | ت | على شرط ولو باع عبده وعبد اغيره | ا | بطلناه فيها على قو | ل |
| والصحيح مذهب الامام الشافعي | رحمه الله | انه يصح في عبده بقسطه وان جمع | بيع | واحدة بين بيعين مثـ | ل |
| رجل عقد البيع | في | سلعة بعشرة نقدا او عشرين نسيئة لم يجز | و | لا يجوز التفريق بين الادميا | ت |
| واولادهن بالبيع والا | شهر | انه اذا بلغ الولد سبع سنين | دفع | تحريمه وجاز بيع احدهم | ا |
| قبل الاخر ويبطل على المختا | ربيع | مسلم لكافر وشرط فيه مصلحة ينفع | البايع | او المشتري لا بأ | س |
| فيه وذلك مثل الخيار و | الا | جل والرهن والضمين وان شرط في العبد | لا | عتاق صح العقد وليـ | س |
| بجائز الامتناع عن عتقه | و | للبايع مطالبته بالعتق ولا شركا | نه | اذا شرط شرطا وهـ | و |
| ينافي مقتضى العقد ولا ينا | ل | العاقد مصلحة لا يجوز واذا | بها | العقد بالبطلان فلا | |
| يجوز للمبتاع قبضه | واجمع | العلماء على انه اذا قبضه فالرد لازم | له | ويضمنه ان هلك قبـ | ل |
| ان يرده بقيمته هي ا | كبرا | لقيمته من يوم القبض الى يوم التلف | و | ان كان لمثله اجرة فلا | لزمه |
| من المطالبة لا بتسليمها و | ا | ن كانت جارية فوطئها وحملت فالولد | حر و | يلزمه المهر وقيمته يوم الولادة | ثم |
| في موتها من خروج الو | لد و | جوب قيمتها علته باب الربا يختص بالصرف | | والماكول والمشروب لا يخفا | |
| ان التحريم في النقدين | له | علة واحدة وهو انها قيم الاشياء في | ا | لماكول والمشروب يحرم لاجل | |
| علة واحدة وهي الطعم | على | الصحيح وفي هذا قول قديم يوجبا | نضيف | على الطعم بالكيل والوزن | بيضا |
| يرى انه لا ربا | ا | لا في مطعوم يكال او يوزن واذا بيع الجنس | الوا | حد منهما بمثله لم يحـ | ل |
| لنا التفاضل والنسأ وا | خراج | الابدان عن مجلس الخيار قبل التقابض و | و | ان كان بغير جنسه نظرت فان حر | م |
| وجود الربا فيهما لعلة و | ا | حدة كالذهب بالفضة جاز التفاضل وحرم النسأ | وا | لتفرق قبل التقابض وان تجر | د |

باب الربا

الثمن



والنون والقافية بين الحرفين ان لا يسقط احدهما

يلزم حرفان وهما الروي والوصل وحرف و

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الثمن والمثمن من العلة | المو | جبة للتحريم كالذهب والشعير والفضة وا | لفا | لو زوج جاز الجميع وا | ى |
| نوعين او انواع | يد | خل الجميع منها تحت اسم خاص يجمعها فهي جنس | و | احد كالمعقلي والبرني يـ | لزم |
| فنوعيها اسم الثمر | و | ان لم يجمعها اسم خاص كالحنطة والشعير | ثم | اللحم والشحم والالية | |
| والكبد فهما جنسان | تعليق | للعرف في اللغة والصحيح ان اللحوم | وا | لالبان اجناس ولا يصـ | ح |
| مماثلة فيما يكال في عاد | ه | الحجاز الا بالكيل ولا فيما يوزن الا بالوزن | و | ما لا يكاد ولا يوزن كثمر | |
| رايج وسفرجل فلا يصح | الملك | فيه ببيع بعضه ببعض على الاظهر | ولا | تعتبر المماثلة الا جا | ف |
| قبل تغيره فلم يجز | و | ابيع دقيق بدقيق ولا بجبن ولا رطب برطب | و | لا يابس الا العريا وكا | ن |
| هذا رخصة لما شكوا | الامر | ولا يباع جنس شيء من جنسه وغير جنسه | بل | لا يباع نوعا جنس | وبهما |
| بقيمة مختلفة او متفقة نوع | و | احد منه مثل الاول ان يبيع مد عجوة | و | درهم بمدي عجوة ومما | |
| يمثل به للنوعين ان يبيع | لما | لك دينارا قاشانيا وسابوريا بقاشانيين | ا | وسابوريين وبيع لحم بحيوان لا يحـ | ل |
| نعما كان ام غيره والله | ولي | التوفيق باب بيع الاصول | و | ما يتبعها اذا باع ارضا وفيها شجر | |
| او يتداخلا في | الملك | بيعا الارض والحمل ان كان يؤبر كالنخل | و | نورا تتفتح كالورد وظهر فهـ | و |
| للبايع وان لم يظهر فيه شيء | جعل | للمشتري واما مثل العنب والتين فما د | ام | حمله لم يبرز فللمشتر | ى |
| حمله فان برز منه شيء كان | الو | جه في ذلك للبايع وتناثر نور الشمس | و | التفاح كالتابير ولـ | و |
| دام بيع الارض وهي | زار | عة فان كانت تجز مرة فهي للبايع | حتى | انه لا يلزمه قلعها | |
| في الحال وان كانت تجز مر | ه | بعد مرة كانت الاصول للمشتري | ولكن | الجزة الاولى للبايع و | لو |
| نسي البايع ثمرته | الى | ان حدثت ثمرة اخرى للمشتري واختلطت | منه | بتلك فالاظهر المنصو | ص |
| انه ان سمح احدهما بحقه اجبر | الخا | الاخر على قبوله وان تشاحا فسخ وقالوا | لا | يجوز بيع الثمار قبـ | ل |
| يبدو صلاحها الا اذا الز | مو | ه القطع وبدو الصلاح اذا احمر | خرفي | الحبة او اصفر ا | و |
| سقط اول الحلاوة فيها فاذا وا | فق | ذلك بعض الجنس في البستان جاز بيعه و | يصير | كانه قد بدا صلا | ح |
| الجميع ولا يجوز بيع الزرع | ا | لاخضر الا بشرط القطع فان كان له ارض و | بها | زرع لرجل اخر | |
| حل له شراؤه بلا شرط | لد | خوله مع الاصل باب الخيار | الثا | بت بالعيب من دخل في ملكه | |
| دابة مصراة بعوض فالخيار له | ين | فيهما على الفور في اصح الوجهين وفي الثا | ني | يمتد الى ثلث فلـ | و |

باب بيع الاصول

باب الخيار

هـ مر بردها فليكن راد الصاع بترمعها بدل اللبن واما الاتان والجارية فيما كا ن لبن دمع و احوه
منهما شيئا بدل اللبن ولصا ج اللبن الخيار بين اخذ اللبن وبين ا لا خذ للبدل ولو ان ه
ا شترى جارية جعد شعرها و سود ثم بان انها سبطة الشعر و بيضاؤه ثبت الخيار وللمشترى
له اذا بانت ساد قة او زانية او آبقة او نحوه او تبو ل في الفراش ويثبت ايضا
ا لخيار بالجماح والعض ف الدابة ثم كل ما ينقص العين او القيمة نقصا ف العرف يفوت به غرض كامل
ا ذا غلب في عامة ذلك الجنس عدمه سواء كان ذلك الا مر مقارنا للعقد ا م
خر ج بر العيب ذلك بعد العقد وقبل القبض ومن عر ف العيب واخر الرد حتى خر ج
و قته بلا عذر فليس له الر د بسبيل ووقته على الفور فلو علم ليلا ا وفي الصلوة او الاكل فاخر
ل للصبح والفراغ من الماكول و المشتر وبه لم يرض ثم رده عليه برفع الى الحاكم فان غا ب فليرفع الامر الى
ا لحاكم واعلم ان الحقوق ق في الفوائد المتصلة الحادثة ملك للمشترى ولا تفو ت اذا فسخ الملك
ي ردها بل يبقى له وا ن اشترى عبدين فوجد باحدهما عيبا ا عاد ه وحده وفي قول
يسقط عند الاكثرين الا خذ به لا يجوز وان حدث عند المشترى عيب ز اد فحقه من الرد يسقطه
هـذا وله الارش فان كان حصول المعرفة بالعيب لا يقع الا بعيب كبندو يد البطيخة لا يعرف الا
من تقريبها لم يضرا ن كسر قدر الحاجة وان باع المبيع و شرط البراءة من
ا لعيوب فاظهر الاقوال جته انه يبرأ من كل عيب باطن جهله البايع دون غيره **باب** ا ذ ا
ملك شيا بعوض ثم اراد بيعه مرابحة جاز اذا بين ر أس المال وقدر الربح واذ ا
عمل او استاجر من عمل في المبيع اخبر به فيقول اشتريت بكذا واد فعت اجرة كذا او عملت مع
ا لثمن بكذا ولا يحربان عا مه ذلك [illegible] ان اخذ شيا من لبنه و ز وائده الموجودة حا ل
و قع العقد وجب الاعلا م به وان اشترى عبدين بصفقة جاز بيع يده ما في المرابحة بالتقسيط ثم
ل لو قال او لا الثمن احد ثم عشرة قال الثاني بل عشرة فالقو ل اظهر انه يصدق وفي الثاني قول ضعيف
ا ن المشترى بالخيار و اذا اشتريت بمائة اوقية مثلا ثم نه اورد بعد ذلك شهود ا
يثبتون شراه بمائة و سبع لم يسمع دعواه ولا تقبل بينته و فاعل النجش اثم فاعلم
هـذا وهو ان يكون الثمن مائة مثلا فيساوم مالكها فيها باكثر و غرضه ان يرى

من يطلبه

من يطلبه ذلك فيغتر و خائف الامر واثم من يبيع ايضا على بيع غيره وهو ان يقول لا م
ا شترى شيا بشرط الخيار ا فسخ البيع وابيعك ارخص منه و لا يدخل على سوم اخيه وهو
من يجيء الى المساوم ما قد شر ى السلعة فيزيد عليه فا ثم يأثم وبيع الحاضر للبا د ى
عند نا حرام وهو ان يقدم ا البدوي بسلعة يحتاج اليها والناس معطو ه الثمن فيقول الحاضر هـ و
ا لى ويامره بالوقوف ف ليبيع له قليلا قليلا والبدوي لا يحرم الوقوف عليه ويحرم ان يتلقا
الركبان ويخبرهم بكساد ما جا ؤا به ويشترى منهم فلو قدموا مثلا و بان لهم الغبن تلو
مقدمهم فانه يجوز زان يفسخوا **باب** اذا اختلف المتبايعان في مثل الاجل وقدره اوبعد
قدر الثمن وصفته نظرت فا ن لم يكن لهما بينة تحالفا فيحلف ذلك على نفي ا صل
تلك الدعوى التي ا تا ها صاحبه وعلى اثبات قوله وا ما الاخر فيحلف ايضا
ضد يمين صاحبه مر ه واحدة ثم لا ينفسخ العقد حتى يفسخ و ا ن اختلفا في عين المبيع فلا يقول
با لتحالف وان اختلفا في ا مر مفسد للعقد كالشرط الفاسد وما اشبهه صدق من يدعى
ال صحة على الصحيح عند اهل العلم فان قال البايع لا اسلمه الا بعد التو فيه وقال المشترى ما انا
مو فيك حتى اقبض المبيع فا نه يجبر البايع ثم يجبر المشترى ويحجر عليه توكيد **باب السلم** السلم
بيع يثبت فيه خيا ر المجلس ولا يثبت فيه خيار الشرط و يشترط فيه امو ر
نقد المال في المجلس فان ذا سل العقد في الذمة وتفرقا قبل قبض ا س المال لم يجز وقد
ينفذ البعض فيبطل فيما نقد بعد المجلس بقسطه ولا يصح السلم الا فيما حر ز بالوصف فلو اسلف
على مثل الدنانير والدرا هم والحبوب والادقة والعطر واصنا فه والحيوان واللحم جاز و يلزم
فى السلم ان ياتي بجميع الا فعال والاوصاف التي تميز المقصود وما كان عينه من اجناس كنضو ع
عمل من اطياب وندو تر ياق لا يصح السلم فيه ولا فيما لا يضبط في نفسه بالصفة كالجواهر
ولا ما دخله النار مثل ا لخبز والشوا ويجوز في الجبن وخل التمر والزبيب وكل مختلط يضبط كثوب
تكون لحمته ابريسما وكذا ك عكسه ولا يجوز السلم الا في قدر معلوم وجميع الامور التي يضبط بها
مقادير الاشياء اربعة الكيل وا لوزن والعدد والذرع ويصح في الكيل وزنا وا لموزون كيلا ولا يصلح
سلم مؤجلا في موضع لا يصلح للتسليم حتى يبين موضعه وما عز جمع مثله او كان لو طلب يومئذ

باب السلم

مستفعل مستفعل ستة
اجزاء استعملته

والمجری ونبذة احرف الردف
والروی والوصل

باب القرض

باب الرهن

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تعذر تحصیله فلا | مرا | فی بطلان السلم فیه وان اسلم فیما یصح | و | انقطع عند المحل فهو |
| فیه بالخیار بین الصبر | الی | وجوده او الفسخ وان احضره علی | ما | وصف او اجود وهو |
| عین جنسه لزمه القبول و | ا | ن احضره قبل المحل لزمه قبوله الا اذا | تولد | من قبضه ضرر وان قال |
| له بعد قبضه منه | للو | اجبت غلطت علی ما لم یقبل فیما قبضه | منها | مقدار اثم |
| نقل منه قوله | لو | کان قبضها جزافا باب القرض | نقول | انه مندوب الیه یجری |
| مجری القرب ونجوز | ه | فی کل ما کان السلم فیه | جا | ئزا الا فی شئ وهو |
| سلف جاریة تحل للمقترض | فا | نه لا یجوز ویملکه بالقبض علی الصحیح وفی الثانی | فی | بالتصرف فما کان له مثل |
| توجه علی المقترض ا | ذ | ا طولب تسلیم مثله وان کان منقوصا جا | ز | رد مثله فی الصورة والجثة |
| فی الاصح ولا یجر | م | فیه شرط الرهن والضمین ویحرم شرط جر منفعة فلو | ید | فعه المستقرض زائدا |
| علی ما اقترض لم یحرم | علیهم | ذلک هذا اذا دفعه المقترض من | نفسه | ولم یشترط ولو اشترف |
| نحو غیر بلد الاقراض | وا | تاه هنالک طالبه نظرت فان کان لا | یرفع | الا بمؤنة فلا |
| سبیل الی مطالبته بالا | د | اء بل یطالبه بقیمته فی بلد الاقراض ویجو | ز | مطالبته بما لا مؤنة فی النقل |
| تلحقه اذا نقله | وا | لله اعلم باب الرهن من جاز ان یقرض | یدا | ین صح رهنه ولا یرد |
| هذا الرهن الا علی | ا | لدین اللازم کثمن المبیع او یؤول الی | لا | لزام کالثمن فی الخیار ولا خلاف |
| انه فیه لا یصح | لطا | لبیه الا بالایجاب والقبول ولا یعدو | نه | لازما الا بالقبض ولو |
| جن العقد ورضیا بایدا | عه | عند غیرهما جاز وان تشاحا کان الحاکم | فاعل | ذلک واما |
| زواید المرهون التی لم | تو | خذ حال العقد فهی خارجة عن الرهن | و | ما بطل بیعه بطل |
| الرهن فیه ولا یصح | ف | المبیع قبل القبض وان رهنه بثمنه لم یجز ولو | یر | هن النخل وهو غیر موبر |
| استاثر به الراهن | ف | احد القولین وادخال الشرط المنافی فیه یر | فع | صحته ویبطل فی القول القوی |
| عقد المبیع المشروط فی | هذ | الرهن الفاسد ولا ینفک من الرهن | نفسه | شئ قبل قضاء الدین ولو |
| ملکه الراهن غیره | ا | و تصرف فیه تصرفا ینقص قیمته لم یجز و | لا | بأس باستعماله فیما لا |
| تحصل منه مضرة فی ا | لعا | دة کالرکوب والاستخدام ونحوه ویؤجره الا | انه | یشترط فی اجل |
| هذه الاجازة ان لا یدو | م | الی بعد حلول الدین ولو رهنه من المرتهن بدین آخر | تو | ثقة له لم یجز ولو |

اعتقه



العروض مجزوا مطوی
العروض والضرب

کفعلن البیع مسلا ان
الضرب مغلوب والطلق

باب التفلیس

باب الحجر

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اعتقه وهو موسر عتق و | الشر | ع یلزمه قیمته ویجعل رهنا ویده علیها | کید | ه علی الرهن هذا خاص |
| لعتق الموسر وفی قول ن | یف | ینفذ عتق المعسر ولو جنی اقتص منه | وکذلک | لو اتلف مال |
| رجل او جنی جنایة یوجب | ا | لمال ربیع فی الجنایة وان جنی علیه کان | ما | یؤخذ فی ذلک |
| بطریق الارش رهنا وا | بو | ان یکون الرهن مضمونا فان اختلفا فی | ا | لرد فالقول قول |
| من ینکر ما | نسب | الیه منه باب التفلیس لا | شبهة | ان الموجل لیست للمطالبة به |
| جائزة حتی یحل ولا یمنع | صاحب | الدین الموجل من السفر وان کان حالا | وا | مکنه الوفاء لزمه الوفا |
| ز من الامکان وللغریم من سفر | مکه | وغیرها ویأمره الحاکم بالوفا فی | البد | اية فان لم یقبل |
| وامتنع باع ماله | و | قضی دینه فان ادعی الاعسار وقد عرف له مال | ل | حبس حتی یثبت بفراغ |
| الید من الملک ولا یقبل | فی | ذلک الاخبر به وان لم یعرف حلف ولم | یتبع | وظفر بالسلامة |
| من الحبس وجرت | السنة | بالحجر علی المدیون اذا کان | ما | له یعجز عما |
| طولب به وسال | ا | لغرماء من الحاکم ذلک فحینئذ تصرفه فیما | قبله | من المال لا ینفذ الا ان |
| ینفک عنه الحجر ا | لثا | بت فاذا اراد الحاکم بیع شئ | من | ماله استحب له الحب |
| الی ان یحضر ان کان له | بینة | فی الحضور او وکیله ولا شئ یباع | الا | فی سوقه وما خاف فساده قدم |
| عرضه للبیع و | امر | بقسمته بینهم علی قدر الدیون ومن | ع | فعین ماله وهو فارغ |
| ولم یشغله بالتحاق خیر بین | ان | یفسخ او یضارب والخیار علی الفور فی | ا | لاصح وفی قول |
| ضعیف یدوم ثلاثا ثم | یبنی | علی ذلک انه لو نقص بفعل مضمون اخذه وضارب | ب | الباقی ولو |
| وجده وبه زیادة تمیز کالطلع | لم | یرجع فیه دون الزیادة اما غیر الموبر | و | الحمل فاکثر الاصحاب |
| اختاروا رجوعه فیه وانه | ید | خل تبعا والمذهب انه لا | یجوز | للغرماء ان یحلفوا |
| لیثبتوا للمفلس دینا او د | یة | والله اعلم باب الحجر لا یصح | ابدا | تصرف صبی ومجنون فی حال |
| ضرورة ولا غیرها ویتصرف | فی | مالهما الاب ثم الجد ثم الوصی وقا | ل | بعضهم ان الام |
| بعد الجد والصحیح انه لا | تعر | ی الیهما ولایة الا بنصب ویتصرف الولی بما هو | معر | وف المصلحة ویفعل بالاغبط |
| ویبنی له بالاجر د | و | ن اللبن ولا یبیع عقاره الا لحاجة | مخوفة | او غبطة ظاهرة ویحل |
| رهن ماله اذا افترض له | ف | حاجته وله بیع ماله للمصلحة نسیئة ویرتهن به | من | المشتری توثقا |

ويشهد عليه ويزكي كل سنة ماله وينفق عليه بالمعروف فاذا بلغ وانكر دعواه الانفاق الذي
قدره وقال انفقت مثلا ثلث ذلك او نصفه فان كان ابا او جدا صدقنا ه بيمينه واما غيره فذهب
بعضهم الى انه يصدق و تو خذ بيمينه وقيل لا يصدق وبلوغ الصبي و هو رشيد يوجب الـ
فيه من الحجر و البلوغ في الغلام بالاحتلام او تمام خمس عشرة سنة والانبات و معرفة بلوغ الجارية بما في
بلوغ الغلام وبالحيض ا و الحبل والرشد صلاح الدين والمال ولا بد من الاختبار و هل
يخبر قبل بلوغ الو لد او بعده وجهان الصحيح قبله ويحصل معرفة حاله بان يساوم ويلزم
نمط الرشد ولا يقع بعقد الملك بل يعقد الولي ولا يصح بيع السفيه ونكاحه و عكسهما طلاقه وخلعه
فانهما يصحان وباذن ا لولي يصح منه النكاح دون البيع وبعضهم يقول انه يصح
باب الصلح
من جنح الى الصلح فهوا لظاهر وهو بيع واحكامه احكامه فان جرا الصلح بعد الاقرا ر
فهو صحيح فان كان عليه دين و صالح عنه بعين واتفقا في علة د بو يه اشترط في ذلك
عليهما القبض في المجلس فلو ارا د ان يصالح عنه اجنبي وكان المدعي هنالك دينا صح وثبت
و ان كان عينا فنو جب ان نقول هو مقر لك وقد وكلني زيد في مصالحتك فلو كان
لانسان دار حذا ه طريق نافذ فاشرع اليه جناحا و كان عاليا في الجو
تم تحته المحامل في ظهور الجمال جاز وليس ذا جا ئزا في غير النافذ من حيث
وقوع الملك عليها فان ا ذن اهل الدرب جاز وان صالحهم على ا شراعه بشئ لم يحل
و يجوز الصلح ا لموضوع على وضع الجذوع على جداره سواء كان خو صا او غيره لفصل اذ كان بحيث
انه يقع على ملكه او يدخل هواء داره ولم يقطعه المالك قطعه ولو كان هنالك دار في درب لا منفذ له
و بابه في اخر و يد الدرب فاراد تقديمه الى اوله جاز وان ا د اراد ان يؤخره فلا
هذا ان كان لبينة مد خل في الدرب فان كان ظهر ذلك بيته دجل الى الدرب فاراد ان يفتح
اليه بابا للمرو ر فيه لم يجز
باب الحوالة
المحيل والمحتال صا حب الحق فلا يفتقر
الرضا المحال عليه وقا ل بعضهم عليهما ويصح بكل دين وعلى كل دين صالح للبيع وبالثمن الموقوف
مدة الخيار وعليه و يحيل المكاتب بالنجوم ولا يحال بها عليه و ليست الحوالة بمجهول وغير معروف
جائزة وقيل تصح في ابل الدية وان كان مجهولة ولا يجوز ان يحيل بالدين الحال على مؤجل ولا عكسه وكذ ا

تجب



تجب عندنا المساوا ه في جميع الصفات جنسا وقدرا وصفة هذا منصوص ونبرأ ذمة المحيل
ثم يصير الحق و اجبا في ذمة المحال عليه فان تعذر الطلب له فرجع على المحيل لم يصح
ولو خرج المبيع الذي كان احال بثمنه مستحقا بطلت الحوالة وكذا ا اذا رد بعيب في الاظهر
هذا اذا احال المشتري فلو ا حال البايع عليه لم يبطل وقيل تبطل بدا وهو ضعيف ولو قال المحيل وكلتك
وقال المحتار بل احلتني فالملك للمحيل والقول قوله
باب الضمان
كل من صحت منه تصرفات
ماله صح ضمانه و المو انع من التصرفات في المال يمنعه الا المحجور بالفلس فلا
بطلان في ضمانه فلو يريد المضمون له مطالبته لم يجز ما دام في رسم الحجر وضمان العبد لسنا
نجيزه بلا اذن ولا يشترط د ضى المضمون له لكن يشترط ان لا يكون صحكره وفي المضمون عنه لم
يشترط ذلك بل لو اداه جلا او سمع به وضمن عنه بغير معرفته ولا رضاه جا ز والضمان اذا جرى
على دين لازم كا لثمن والارش ودين السلم او يؤول بعد الى اللزوم وهو
مثل الثمن في الخيار جاز ومن ملا ئهم الصلح ان مال الجعالة لا يلحق به وضمان ا لمجهول لا يصح بحال
سوى ضمان ابل الدية و لا يصح ضمان ما لم يجب ويجوز واضمان الدرك لرسم الحاجة ولا ينسب في الضمان
تخاير وكذلك يضمن اذا اقا ل ولا غرض لو متاعك في البحر وعلي ضمانه ولا يشترط معرفة المال قدرا ووصفا
فعلى هذا لو قال اعتق الغلام م وعلي مائة فاعتقه لزمته المائة واذا قد صحت الضمانة تجدد حينئذ
نفع المطالبة في المال في الضامن مع المضمون عنه فان ابرأ الاصيل ام الكل وبرأ الكفيل كما قالوا
فان ابرأ الكفيل بقي له الملك في مطالبته الاصيل وللضامن الرجوع عليه د فع ان ضمن باذنه والا فلا
عليه رجوع فان دفع عن خمسة وعشرين ثوبا قيمته عشرون رجع بعشرين و ان قضاه وتسامح
اليه بزيادة لم يعلمها وعا د بالاصل وتصح الكفالة بالبدن الا انه اذا تكفل ببدن مغتاف
تعين عليه حد الله تعالى لم يجر وا ما الكفالة ببدن من عليه قصاص ونحوه فالجمهور يقول ر بصحتها فاذا
نبه على مكان التسليم تعين وا لا تعين سكان الكفالة فان تكفل بر من غير اذنه فقد قيل
فيه انه يصح والا شهر خلافه فان سلم نفسه عنها برئ الكفيل عند ذلك وان غاب امهل قد ر
المضي والاياب وان مات ا وانقطع خبره لم يطالب
باب الشركة
وهي جا ئزة ولا يشترط التسا وي
عندنا الا في الجنس و الصفة دون القدر ويصح في كل مثلي ولا يجوز الاقتصار فيما عقد وا

باب الكفالة

باب الوكالة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ل | لشركة على لفظ الشركة | كا | شريكي بل يشترط الاذن في التصرف ولا | يد | خلان في حكمها قبـ | ل |
| ا | لخلط فان كان المال عر | و | ضا باع احدهما نصف عرضه بنصف عرض الاخر واذا | د | الاذن بينهما ولـ | و |
| تـ | ساويا او تفاضلا | فا | لربح على قدر المالين فلو وعد الشركاء منهم د | جلا | وقال الربح الحا | صل |
| نـ | عطيك اكثره لم تجز عد | تر | ويبطل العقد ان شرط فيه ذلك و | نما | لكل رجل جرته قا لـ | وا |
| و | الربح يقسم على المال والا | بدا | ن شركتها باطلة وكذا المفاوضة ومشا | ر | كة الوجوه ومتى عز | ل |
| ا | حدهما صاحبه انعزل و | د | اع الاخر باقيا على تصرفه ومن شارك ر | جلا | وادعى عليه | حرج |
| جز | ء من المال بتفريطه امرنا | ه | ان يقيم بينة فان الشريك في ذلك امين | على | المال باب الوكالة اعـ | لم |
| ا | لوكالة تصح | في | كل ما يملك الوكيل والموكل مباشرته في | الحال | وذلك مـ | ثل |
| و | كالة في المعاملات و | [illegible] | الخصومات والعقود والفسوخ | ومثله | تملك المباحات في | قول |
| هـ | و الصحيح وتوكيل المرأ | ة | والمحرم في النكاح باطل وحقوق الله اذا | قبل | منها شيء الينا بـ | ه |
| سـ | لك مسلك غيره | في | الجواز كالحج والزكاة واستيفاء الحدود ولا يجو | ز | الا بايجاب وقبول فـ | لو |
| تـ | اخر القبول لم يضر بل ا | قباله | على ما وكل فيه بالفعل كاف ولا يجوز ولم يرد | يد | ها ان يعلقها بشرط و | مع |
| هـ | ذا لو عقدها بشرط | تعز | يه اليه فوجد الشرط نفذ تصرفه لو | ضا | ه واذنه ولو نجزها وعلـ | ق |
| استعما | له فيها لم يضره من | المحر | م ان يوكله في امر يتولاه مثله فيجعل ا | حكا | مه الى غيره ان فعل ذ | لك |
| لـ | غير عذر وان | و | كله في البيع جاز ان يبيع من ابيه وابنه | وهذا | الكبير اما الصغير فلا يتو | جه |
| و | جه صحته كنفسه ولا با | س | بالبيع من مكاتبه وليس للوكيل ان يبيع بدون ثمن | ا | لمثل ولا مؤجـ | لا |
| هـ | كذا قالوا ولا بغير نقد | ا | لبلد الا باذن ولا يبيع بثمن المثل وقد | بو | يع باكثر ولو قال بكـ | ذا |
| مـ | ؤجلا فباعه بما حا | ول | حال جاز الا ان نهاه عن ذا | لك | او كان له غرض ومتى | ما |
| جـ | رى الاذن في البيع في | ليلة | معينة او يوم او مكان معين تعين | مطلقا | ولو امره بالبيع لشخص وهـ | و |
| ز | يد مثلا فباع | من | عمرو لم يجز ومتى خالفه في بيع ماله | وفي | الشراء بعينه فتصرفه باطل وحيـ | ث |
| و | جد الشراء في الذمة مع | ذي | المخالفة وقع للوكيل ولو قال اشتر بهذا | الد | ينار شاة ووصفها حـ | ق |
| ا | لوصف فاشترى شاتين لم ينقطع | الجه | الا اذا سويت احداهما دينارا او | ا | لا فالعقد غير ثا بـ | ت |
| ثـ | لو امره ان يطلق ر | منه | في البيوع الفاسدة لم تجز ان يصد | ر | صحيحا ولا فاسدا والمعيـ | ب |

اذا اشتراه

باب الوديعة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ذا اشتراه لموكله | احد | ولم يعلم جاز له وللموكل الرد ويجو | ز | للوكيل في البيع قبض الثـ | من |
| لـ | موكله وان وكله ان يشتر | ي | عبدا فليذكر نوعه وصفته وقدر ما | يد | فعه في ثمنه والوكيل | ليس |
| تـ | قبل عليه دعا | و | ى الخيانة الا ببينة والقول قوله ولو | قا | ل بعته بالثمن الذ | ي |
| قـ | د اذنت فيه | عشرين | وقال اذنت بثلاثين فالقول قول الوكيل ولو | يما | ديه في دعوى الرد ولم يـو | من |
| ا | لموكل بدعواه صدق الوكيل | و | لكن مع يمينه وان ادعى انه سلم الى | و | كيله لم يقبل ولو سلـ | م |
| رب | المال اليه مثلا | سبعمائة | ليقضي دينه فقضا في غيبته ولم يشهد | عند | القضاء لا منه مـ | عزد |
| و | انكر ضمن لتفريطه | و | سواء صدقه الموكل ام لا ولو فعل ذا | لك | بحضرته لم يضمن ومن نحو | نحو |
| هو | لاء ذكر انه لو قال | كان | التسليم بحضرتك وانكر وحلف قبل انكاره ولو ادعى | عمرو | ان زيدا قبض المـ | ال |
| مع | شريكه فصدقه | مشار | كه جاز التسليم اليه ولا يجب لانه يضمن اذا | جاء | زيد وانكر والوكيل | [illegible] |
| بـ | واية يعزل نفسه متى | كا | ن له عرض فاذا عزله الموكل ولم يعلم تلك | السا | عة فالتصرف | الذي |
| نـ | قده بعد العزل لا ينفذ | في | الاصح وينعزل ان جن احدهما | وقس عليه | كل شـ | ئ |
| يـ | خرجهما عند اهل | العلوم | عن اهلية التصرف باب الوديعة | واعلم | انه لا يحل لرجـ | ل |
| عـ | اجز عن حفظها قبولها | و | متى قد استحب وشرط المودع والمودع | ان | يكونا ممن تجو | ز |
| لـ | ه التصرف فان | كان | الايداع من صبي ضمنه المدبع ولا يبر | ا | الا اذا سلـ | مه |
| يـ | ومئذ الى وليه ويجب ان | يحفظ | الوديعة في حرز مثلها من الامكنة والـ | ظروف | والوديعة امانة فاذ | ا |
| فـ | رط فيها المودع ضمنها ويجب عليه | معقد | وده من الحفظ وان عين له حرزا فحفظها في ا | على | منه او مثله فان حصـ | ل |
| عـ | ليها التلف بسبب اقدا | مه | على المخالفة ضمن والا فلا مثاله لو اودعه | و | قال لا ترقد عليها فكا | بر |
| و | رقد عليها فانكسر فالتلف | طا | د بتفريطه واذا سرقت لم يضمن لانه حفظها | جهين | وان اراد سفرا يصد | ف |
| لـ | ما لكها فان لم يكن ظا | هر | اسلمها للحاكم ثم الامين والترتيب واجب ولو فضختم | ظرف | الوديعة وهـ | و |
| نـ | ا وان لم يأخذها | و | لم يأخذها ضمن ولو لم يعلف الدابة لوديعة في | زمان | حفظه حتى هلكت ضمنها | |
| ثم | ان نهاه عن علفها و | كفاية | امرها لم تجز طاعته لكنه لا يضمن ولو خلط | و | ديعة بماله حيث لا يحصل | تمييز |
| ا | حدهما من الاخر ضمن ويتعهد | ا | لثياب الصوف بالنشر واللبس ان احتاجت | ظرف | الوديعة كل ذلك | يلزمه |
| نيا | به للمالك كما يفعل | لحفظ | لنفسه ومتى امتنع من تسليمها عند ا | مكان | ضمن ولا حدهما فتحها واذ | ا |

اجزاء والخرج بعضهم في التقارب

اربعة احرف وثلث حركات في الاحرف

باب العارية

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| هلك احدهما او جن ا | و | اغمي عليه انفسخت الوديعة واذا ادعى ردها | فا | لقول قوله بيمينه وان ذكر |
| انه سلمها الرسول فقطع في | البينة | انه يلزمه البينة وان ادعى تلفها صدق | لز | مته اليمين ان لم يكن السبب |
| جليا وان ذكر | في | هلاكها سببا ظاهرا كالحريق والنهب | ما | اشبهها لم يسمع |
| زعمه الا ببينة موا | فقة | لدعواه والجحود بعد الطلب مضمن فان قال | في | ما جحدتها بل نسيتها |
| او غلطت لم يبرأ | الا | ان يصدقه المالك باب العارية هي | مثل | غيرها لا تصح الا ممن يصح |
| التصرف منه وتصح في كل | ما | ينتفع به مع بقاء عينه ولم | يو | جهوا وجه الجواز لمن يعير |
| خادمه من رجل غير محرم | م | ولا مسلما من كافر ولا صيدا من محرم | | نعم اذا كانت لا يخاف |
| دايها فتنة فالاشبه بمذهب | الشافعي | جوازها واذا استعار لشئ فله فعله | و | فعل مثله ودونه فلو |
| جرت العارية للغرس فغرس | و | زرع جاز الا ان نهاه ولو استعار | ساعة | للزراعة فلبث |
| برهة ثم رجع قبل | اخذ | الزرع نظرت فان كان الزرع يؤخذ | و | هو قصير حصده او لا |
| عليه تركه الى ان يبلغ | الحد | الذي يحتاج اليه ولا يتركه مجانا بل | بكر | او لا يجوز الرجوع في الحدث |
| ضرورة والدفن حد | يث | حتى يبلى الميت وان اعاره للبناء والغرس مدة | ه | احدث بعدها بناء ابيح |
| هدمه واما ما بني | من | تلك المدة فان شرط ان يقلع مجانا | حين | يرجع لزمه والا فان اختار |
| مستعيرها القلع قلع | ا | لا انه يلزمه بتسوية الارض وان لم يختر | و | اختاره المالك |
| منه قلناله اختر | شيأ | من اشياء ان تبقيه باجرة او تقلع وتضمن النقص بذا الا | شهر | وقيل او يسلم قيمة البناء |
| نعم لو تشاحا فشيوخنا | في العلم | يختارون الاعراض عنهما حتى يختار شيئاء | و | للمعير دخولها وشبت |
| اذا سالها سواء | رضي | المستعير ام لا والمستعير قبل ان يمنع من | عام | الدخول والاصح له الا اختيار |
| لمنافعه كالسقي ونحوه و | الله | اعلم ويجوز ان يستعير شيئا ليرهنه | و | هو في قول عارية اذ ا |
| تلفت او بيعت | عنه | ضمنها بالقيمة والاظهر انه كالضامن فيجب | وقت | العارية ان لا يجهل |
| قدر الدين وصفته | و | جنسه وغريمه فان تلف مع المرتهن لم يضمن | و | ان بيع في الدين رجع بما |
| ابتاع به ولو | كان | له حائط فاعاره لوضع الجذوع ثم رجع | قبل | الانهدام جاز على الاصح |
| د جوعه ولا يهدم مجانا | و | لكن يخير بين ان يقلع ويضمن النقص | و | بين الاجرة ويضمن المستعار |
| بقيمة يوم التلف فان و | لد | تبعه فالولد امانة وان استعار بها فساد | بعد | ها الولد والمالك وقف |



جنسا آخر ليس في الخرج والعيب ورد

الردف والروي والوصل والخروج والحركات

باب الغصب

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| جاز قبضه وكان عند | ه | امانة ولو اختلفا فقال المالك اجرتك | وما | اعرتك وقال راكبها |
| نعم اعرتني صدق صاحب | الملك | على المذهب ولو قال غصبتني صدق | ا | لمالك ايضا والاختلاف في ا |
| سبيله ان يصدق | ا | لمالك باب الغصب ا لا | شبه | فيما وصفوا |
| ان حده على الحقيقة لا | لمجا | ز هو الاستيلاء على حق الغير عدوانا فا | ذا | غصب مستحقا لم يحل |
| امساكه الا اذا ز | هد | فيه مالكه واذا خرج محرم بمغصوب كان | لك | نزعه ان لم يكن اثو |
| خروجه مرضا ولو ادخل | في | سفينة لوحا مغصوبا وفيها محترم | والمكا | ن في لجة البحر فهو |
| يمنع حينئذ من | قلعه | وان بنى بساج مغصوب فعفن في البنا | في | لم ينزع وما بقي |
| سوى تسليم اكثر قيمة | تعز | ى اليه وان تلف المغصوب او اتلفه وله | مثل | ضمنه بمثله فلو عدموا |
| مثله او وجدوه | ولم | يرض صاحبه بثمن المثل ضمنه باكثر قيمة الى التعذر | حيث | غصب ما ليس له مثل |
| يضمنه بقيمته ولا | يترك | له زيادة بل اكثر قيمة ما بين الغصب | و | التلف واذا وصل |
| المالك وطالبه | و | المغصوب غائب ضمن له بدله فاذ | اما | عاد اليه تراد او لو |
| خرج به عيب | له | يضمن الارش ولو غصب خفين قيمتهما عشرة فعد | م | احدهما فصار قيمة ما |
| تبقى درهمين لزمه | ا | ن يغرم ثمانية وان قطع يد عبد | و | جب الاكثر من نصف قيمة بعد |
| د قيمته او ارش النقص و | سوا | غصبه ام لا وان احدث نقصا يسرى | فوق | ذلك الى تلف الا خر |
| عدد تاه تالفا والزمنا | ه | الضمان كما اذا بل الحنطة ا | و | خلط الماء بالزيت ولو |
| وقع مع الغاصب ما لا جرة | فا | لاجرة لازمة له مدة اقامته | تحت | يده ولو اولج |
| الغاصب في الجارية كونها | المتفر | عليه المهر وان طاوعته لم يجب | وعند | بعضهم يجب ولو |
| خلط المغصوب بما لا تميز | له | منه لزمه بدله وملكه على الصحيح | و | قيل لا ولو خلط برا |
| ببذره لم تقبل منه | الا | التمييز وان سمن ثم هزل ثم سمن ثم | حول | هزيلا ضمن السمن وقيل |
| بل يضمن الاكثر الا | مر | ين منهما وان احدث فيه عيبا كالصبغ | وما | اشبهه وامكن ان يبرح |
| ويفعل اجبر عليه وان | بعد | فصله ولم تزد قيمة الثوب فلا شئ له و | ا | ن نقصت قيمته اجبر |
| دعاية له وان زادت فالزياد | ة | يشتركان فيها وان صقله او قصره وما | اشبه ذلك | فلا حق له في ذلك |
| كما اذا صاغ الفضة ا | وكان | خشبا فعمله بابا وان اشترى في الذمة | و | نقد الدراهم المغصوبة فلا |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ضمان في الوج عليه والواجب | فيه | ددمثل الدراهم وان اشترى من الغاصب | هو | يعلم وتلفت |
| العين عنده فهو ضا | من | والاقرار عليه وان لم يعلم فكل ما | يكون | ملتزما ضمانه بالبيع فلا |
| خلاف انه لا يرجع بر | ا | لمشترى كقيمة العين نعم في الاجزاء خلاف | منصو | ص عليه اذا تلفت لا بفعل |
| يكون منه والصحيح ليس له ا | لو | جوع وما لم يلتزم ضمانه بالبيع وقد | با | شر منفعته كالمهر فالصحيح |
| لا يرجع به ايضا فان لم | يا | ته فيه نفع كقيمة الولد رجع به و | اذا اقى | الغاصب بالطعام المأخوذ |
| و اكله الضيف لزم دأ | سه | ولا يرجع به على الغاصب وكذا لو قر | به | لمالكه فاكله ولو |
| هيج طائرا بعد ان حل | و | ثاقه ضمنه وان لم يهجه ولكن فتح عنه | ظرفا | او قفصا فان ثوا |
| و وقف قليلا لم يضمن و | الا | ضمن ان طار عقب الفتح وان فتح زقا | في | الارض مطروحا فسال |
| فيها او منصوبا فسقط بالا | قدام | على الفتح ضمن وان سقط من | موضعه | بعارض اخر فلا اثم |
| الحر لا يضمن غاصبه | ما | فيه من المنافع الا اذا استوفاها و | تقول | ان مجرى الصليب ومجرى |
| عود اللهو وكل ما | لا | يحل الانتفاع به واحد لا ارش على | من | يكسره باب الشفعة |
| لها مخصوص لا | يكون | الا في جزء مشاع من عقار اذا احتمل | ذلك | الجزء القسمة فاما ملك |
| ناجز قد قسم | فا | نه لا شفعة فيه وفي الغراس والبناء الشفعة ان | بيع | مع الارض بلا |
| ثم لا شفعة الا فيما | قام | الملك فيه بمعاوضة اما ما انتقل | عنده | بوصية او هبة |
| التطوع فلا شفعة | هنا | لك وليس لشريك الوقف شفعة والاخذ | ا | ذا يكون بثمن المبيع |
| نعم اذا كان الثمن في ذ | لك | غير مثلي اخذه بقيمة الثمن ذلك ا | ليوم | المقصود فيه ولو ان |
| يشترى شقصا مؤجلا فالا | شهر | في خلاف ان يخير بين ان يعجل الثمن لكى | يصب | ويأخذ في الحال |
| منه او يصبر لحلول الد | ين | ويأخذ ثم الشفعة على الفور فان طلبها | عند | البيع ولم يجد |
| د بها ثمنا فله امهال ثلاث | ثم | اذا علم وهو ياكل او في حمام او صلا | ه | امهل الى |
| تمامه ولو ادعى انه | نزل | به الجبر ولم يصدق عنده الا ان كان لو ا | و | ي ثقة وان كان الاخبا |
| ان الثمن الف مثلا وكان | د | ونه لم يسقط حقه وان دل ذلك | اليوم على | البيع وضمن الثمن بشر |
| سال الشفعة جاز ودرك | ا | لشقص على المشترى ومنه يؤخذ فلو | انه | ترك القبض لم يحل |
| تركه واجبر على القبض كا | د | ها حتى يأخذه الشفيع او علم ان الشرع | ظ | اخذ بعض الشقص لان تبعيض |

باب الشفعة



| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| عليه يضربه و | الشجرة | اذا اثمرت بعد الشراء الموصو | فنفد | توجد سطر بثمرتها |
| ما كان باد زالم يدخل | و | مالم يبرز يدخل في الشفعة ولو كان هنالك | من | الشفعا جماعة فكيف |
| لهم الاخذ اذا | كان | انصباؤهم مختلفة فيه قولان الاصح منهما ان | ظر | الى الانصباء فيقسم |
| ما يؤخذ على قدرها و | ا | لثاني على قدر الرؤس فان غاب بعضهم فالع | وف | ان من ا قام |
| خير بين ان يكون اخذ الكل او | تا | وكالة من غير تبعيض ومن قدم منهم الى | المكان | انتزع حصته ولو غرسها |
| بعد الشراء فللشفيع طلا | بك | بها وتقلع ما غرسته مجانا لانه شريك | و | لم يؤذن لك ولو |
| وقفتها فسخه و | الا | خذ فان بعته اخذ من المشترى | اليوم | ان شاء وان شاء |
| نقض بيعك واخذ من | جنا | بك ولو اختلف المشترى والشفيع في القدر | من | الثمن صدق قول |
| المشترى ولو انكر الشراء فا | د | عاه البائع اخذ منه وسلم اليه القيمة | التى | باع بها وان زعم |
| سوا ان المشترى او فا | يومئذ | فهل يأخذه القاضي ويحفظه معه | للزمان | الذى يصرف فيه ام يطلق |
| ذلك بحث بين حتى يقع | الا | عتراف بالشراء وجهان اصحهما الثاني | و | الذى له من الخيار الموس |
| سو خيار الرد بالعيب | مير | اث الشفعة يثبت لورثة المستحق ومثليهم و | مثله | كالشركاء في الشفعة يلزم |
| الطالب منهم ان يقطع الا | شجا | ر باخذ الكل او يترك باب القراض | و | لا يصح العقد فيه |
| بغير النقدين بلا نزا | ع ا | لانه لا يصح في مغشوش ولا مجهول و | قفت | الصحة فيه على تعيين ما |
| حصل عليه القراض | لد | ى العقد وشرط لهما الاختصاص من الاشتراك في الربح | اما | لو قال على انه يصير |
| د بحثه بك او ربح مما | بين | لك فهو قراض فاسد اى تصرف فيه لز | م | تصرفه واجرة المثل نصيب |
| العامل فان باع بما لا | بن | الناس بمثله لم ينفذ تصرفه فيه ولا يكون | ز | الا على جزء معلوم كربعه |
| شرطه وفي وجه صحيح | منصو | ص لو قال والربح بيننا صح وحكمنا بانه ير | يد | نصفين فلا يصح الا فيما |
| عو فانه يعم ولا يبد | د | وجوده والا على معه مكس شخص بعينه | و | تعليقه بشرط لا يصح |
| بل لو قدم ومنع وتو | فا | ذلك خرجت التبع لم يصح وان قال اذا | خرجت | لا تشتر صح وان شرط تصرف |
| المالك معه فلا | غر | وانه لا يصح وشرط عمل غلامه صحيح | ويؤ | مر بالاحتياط وهو |
| سلامة البيع من الغبن وكو | اه | كالبيع بنسيئة فلا يؤجله ولو بيو | م الا | باذن وله شراء المبيع حيث |
| د اي في شراه غبطة | حتى | ان المعيب الذي فيه غبطة لا يجوز لا | حد | هما رده حتى يتفقا او | لا |

باب القراض

عليه

ثم انا نذكر الزحاف في حروف فالحرف

حركات فالاحرف الثاني سبب الدخيل

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| هما على رده وما | قبض | للقراض للمسافر به بغير اذن فان اذن | وسا | فر به جاز وحيث |
| انفق العامل من المال | على | نفسه في الحضر غرم وكذا في الاسفا | ر | على القول الصحيح |
| ثم نصيب العامل فيما ز | عمه | بعضهم يملكه من حين يظهر الر | بح | والاصح انه لا يملكه بغير |
| القيمة والصحيح ان | الملك | في ثمر شجر مال القراض يفوز به المالك | بعد | نصيبه من الربح وكذلك |
| نتاج دقيقة وكسبه وبعض | النا | س يقول هو مال قراض وما حدث من نقص في | هذا | المال وكان قبل تصرفات |
| العامل فالاصح فيما | صر | حوا به انه من رأس المال وما نقص | وسر | ق بعد التصرف ف |
| نجبره من الربح | وا | ن اشترى للقراض في الذمة وهلك المال وفا | ت | قبل ان يسلم العامل ا |
| ذكر من الثمن فقد قيل الا | مر | فيه يلزم العامل وفي التوسط يلزم المالك و | فو | ق بعضهم وقال اذا دفعه تلف قبل |
| الشراء فالعامل يطالب | به | انه بعده فيطالب رب المال ويكون فسخ | سخن | له متى اراد احدهما وهنا |
| ذال عقل احدهما او مرض | الى | ان اغمي عليه انفسخ ذلك العقد | واذا ا | ختلفا في قدر ربح |
| حصل او قدر رأس المال | عد | نا الى قول العامل بيمينه وكذا اذا جحد | غر | م فيما اشتراه وانكو |
| المالك كونه للقراض فا | ن | القول قول العامل وكذا اذا قال قد | يت | اليك المال ولم يعترف |
| فان عينا جزا للعامل | وجرت | المنازعة في قدره تحالفا ولا يحكم له | بشيء | غير الاجرة باب العبد اذا كان ماذونا |
| في التجارة فما يلزمه | من | دين التجارة يقضى من مال التجارة | او | من كسبه فان لم يف امهل |
| حتى يعتق ولا يطالب في | هذا | سيده ولا يتجر الا فيما اذن له وان | حذر | ه من شيء اجنبية ومتا |
| ر سم له التجارة لم يجز له | الا | جارة ويلزمه الاحتياط ولا يتخذ الدعوا | ت | ولا يتصدق على الناس |
| ولا يبيع بنسيئة وليس له | مير | اث من ميت وان ملك مالا لم يملك | منه | شيئا وان خرج شي |
| فيما باعه مستحقا وطولب | ا | لعبد وسيده وان اشترى بغير اذن السيد | فا | لبيع باطل وليس |
| هنا الاسترجاعه ولا يلزم | مو | لاه ان كان قد تلف ولا رقبته لا لسيده ما | قصبه | لذلك نعم يطالب لو |
| فارق الرق وصا | ر | حرا باب المساقات تنعقد بلفظ المساقات | و | بما يؤدي الى معناها ومورد ها |
| النخل والكرم لا | غير | وان ساقاه على ودي الى مدة و | العر | ف يقتضي بانه لا يحصل |
| حمله فيها او كانت الاحتمالا | ت | متعارضة لم يصح ويشترط كون الودي والاعنا | ب | مفروسة وان يكون قد |
| د سم مدة يعلم | الناس | ان المعقود عليه سقي فيها ولا يجوزا | لا | على جزء من ثمر عنب ونخيل |

باب المساقات





الاول يدخله كلمه ويدخله والحم

والردى والوصل والخروج الروي والاشباع

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| في نفسه معلوم كالثلث | و | لو عين له ثمرة نخلات لم يجز لان فيه | تغو | يرا وتلزم بالعقد والزموا |
| العامل كل ما | حصلت | به الزيادة في الثمرة من التلقيح والسقي الذي | ي | يحتاج واصلاح المسائل لقو |
| الشجر كالسواقي او ما | بين | الاجاجين وعلى رب المال ما يحفظ به | الا | صل مثل الحيطان والدلو |
| والرشا وحفر النهر و | منصو | ص انه لو اشترط ان تستعين في العمل | بغلته | او اقل او اكثر قدر ما |
| لرب المال جاز و | د | بالمال يترك له اليد وهو امين فيما | ا | دعي عليه من خيانة فلو |
| يثبت انه خائن ضم | ا | ليه مشرف عليه فان لم يحفظه | حو | اسة استاجر من يحصل |
| دفع الضرر به و | يو | خذ الاجرة من العامل وكذا اذا هرب او خاف | ف | فيستاجر له عامل ولو |
| خرج فقيرا انفق | ب | لا اذن الحاكم فان انفق بلا اذن فمقرض | وهي | لا تلزم العامل فاذ |
| لم يجد من يقرضه فله | ا | ن يفسخ وللعامل الاجرة الا اذا كانت الثمرة | عند | ذلك ظاهرة فيحصل |
| هنالك الشركة مع انفسا | خ | العقد فيبيع المالك ويشتري نصيب ذا | ك | او يصبر وان مات وسمح |
| الوارث باتمامه فليس لصاحب | الملك | منعه والا استؤجر عليه من ماله | و | يملك العامل حصته من ثمر |
| خرج حال الخروج | المو | جود منها باب المزارعة و | عليك | اذا اعطيت ارضك |
| رجلا ليزرعها و | يد | خل معك فيما يخرج منها ان يكون ذلك | و | ارادا على ارض فيها |
| مغارس نخل او كرم | وبين | تلك المغارس بياض فلا تزارعه فيه | دو | ن المساقاة بل اذا ساقيت |
| وايت بالمزارعة تبعا جاز | ا | ذا كان البذر منك باب الاجارة ا | نك | تحكم حين تعامل احو |
| هذه الاجارة بانها تبع | لمالك | هي المنافع وتنعقد بلفظها وبمعناها | كقولك | اجرتك او اكريتك الفرس |
| ونحوه سنة بكذا | و | يقول قبلت ونحوه وشرط المنفعة التحريم | عليك | فلا تصح في الزمر ونحو |
| حمولة خمر وخنزير و | الامرا | ذا كانت على منفعة معينة كاستاجر | زيدا | للحج او الدابة لا ركبها |
| ذكروا فيه الجواز ولا | مرا | في صحتها على منفعة معلومة | ينصب | لها ذمته ويشغلها التحصيل |
| فرس يركب عليه او | سد | يحفظ فيها فاذا استاجر ارضا لاجل | ز | راعة فليكن سايقة او لها |
| هنالك ماء دائم واذا | و | قعت الاجارة على معين فلا بد ان يعرف الشيء ير | يد | ها كركوب او حمل ديا ش |
| والحبر بوضعها لا يكفوا | لزموا | معرفة قدر المنفعة وهي تقدر | ا | ما بالعمل كحج وركو ب |
| ز لفه واما بالزمان مثل | ا | السكنى فان تعذر بهما معا كالبناء قدر | با | حدهما والاصح انه اذا اجرها |

باب المزارعة

باب الاجارة

وسورة زيادة حرفين
او ثلاثة احرف

والجرى كفعل السبق على الاقدام
والرمى بالسهام والمطلق

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| م | دة تبقى فيها صح وا | الملك | فى المنفعة يبقى المستاجر ولا يثبت با | لا | جارة الخيار وان كان البيع | |
| و | انما هى بيع بحكم | المجا | ز والجهل بمعرفة جنس الاجرة والقدر والصفة | عز | ر فلا بد لهما من انت | ر ال |
| هـ | ذه المعرفة فلو شا | هد | ما الاجرافا وعقد به جاز وتعليقها على | ا | لصفة والشرط لا يجوز و | |
| و | جوب الاجرة مجرى الثمن | في | البيع يجب بالعقد ويستقر بالاستيفاء | ومعناه | فاذا سلمه اليـ | ـكر |
| ز | مان الاجارة استحق بالا | جما | ع وان لم يستوف فان كانت فاسدة | الزم | اجرة المثل ويـ | ـسو ل |
| يـ | جب على المكرى ان يو | دى | ما يحتاج للتمكين كمفتاح الدار وزمام | ا | الجمل وحزامه وقتبه | |
| ا | ما ما يحتاج اليه لكمال | الا | نتفاع كالمحمل والغطاء فعلى المستاجر | و | الحشو والبالوعة فى اول | |
| د | خوله ينقيها المالك وفى الا | خرى | اذا ملاها المستاجر فانه يؤ | خذ | بتفريغه على الاصح وعلى | |
| هـ | ذا المكرى ما جرت به | سنة | المكارى من الرفع والحط واعانة الـ | ز | ل والراكب يترك لمن ليس | |
| حو | كذ قوية وان اكرى على | اثنين | او واحد جاز ان يركبا مثلهما دونهما لا من فوقهما | يد | وان اكترى الى موضع | |
| فـ | جاوزه لزمه المسمى | و | اجرة المثل للزائد ولو حملها فوق المشروط و | ا | لمالك حاضر فهلكت قبل | |
| يـ | ضمن القسط فاذا شرط | عشرين | مثلا فحملها ثلاثين لزمه ثلث القيمة | و | هذا هو الصحيح وفى | |
| نـ | ص اخر يجب النصف | وا | ن لم يحضر ضمن الكل ومتى تلف ما استاجره لم يلزم | منه | بل ينفسخ فى الا | يام |
| ا | لباقية دون السالفة وان | دخوه | فى العقد صحيحا فتعيب او بان به | عندك | عيب قديم ففسخت جاز ولو | |
| و | قعت العين المستاجرة | حصن | غاصب منعها حتى انقضت المدة لم يلزم المستاجر | بكرا | كما لا يكون ملتزما | |
| ثـ | من مبيع تلف قبل ان يقبضه و | تعز | ى اليه واذا مات الاجير فى الحج ا | و | احصر قبل الاحرام لم يحصل | |
| لـ | ه شئ او بعد الاركان ثبت | والمتعز | ت الاجرة وارد دما لما بقى وان احرم ومات | دو | ن تمام الاركان المقصود | |
| ثـ | بت له اجرة عمله و | امر | نا المستاجر ان يستام نفقة يجع عنه وان خا | نك | الجمال فهرب عبثا فالنظر | ل |
| هـ | ناك للقاضى ينفقها | ا | ما بقرض ان لم يكن له مال او يدفع بعضها | بشرا | الى المكترى وغيره ويسا | ل |
| ا | ن كان ثقة جعله ا | لمنصو | ب عليها ينفقها والا نصب ثقة و | اى | العاقدين مات فنظم | |
| حـ | كم الاجارة باق و | د | سموا ان المستاجر امين وكذا الاجير اذا | خذ | العين وتلفت لا يضمن وقالوا | |
| د | والعين المستاجرة | وا | جب على المستاجر وان اختلفا فى الرد فانه | نقضى وتقول | ان القو | ل تجمه |
| فـ | ى الرد وقول الموجر و | خرج | بعضهم وجها ان القول قول المستاجر و | فى | ما اذا باع العين قبل | |

انقضاء



او بنفعة فنطو وانا
الحرف الثانى

الوسيل الذى ... 
بزنة ... احرف
واربع حركات

باب المسابقة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | نقضاء الاجارة قولان | ا | لا صح الجواز ولا تنفسخ لكن اذا لم تقع | التحذير | لمشتريها بشرع عالم | |
| وا | داد الفسخ جاز ويجوز | لنا | اعتاق الموجر ولا شئ له وقيل على سيده اقل | الا | مرين من اجرته ا | و |
| ر | ابت نفقة له و | م | حوا بمنع تجويز اجارة العين المستاجرة وفى قول | سد | يد ان عقدها للمستاجر لا با | س |
| بـ | ه وعليه الفتيا و | من | عقدها على عمل فى الذمة لزم تسليم | الا | جرة قبل التفرق من المجلس | |
| عـ | لى الصحيح وان | عد | مت المعينة فى اجارة الذمة او غصبت | سد | غيرها مسدها ولم يحكموا | ا |
| هـ | نا بفسخها وللمكرى فيها ا | ن | هرب الكترى عليه فان تعذر ذلك | وا | عيا عمل المكترى با | لذى |
| فـ | ى شهوته ان شاء فسخ | ووقف | حتى يجده ولو خاط له قباء ثلا فقال ا | ياك | امرت ان تخيطه قميصا فكذ | ب |
| قـ | وله وقال امرتنى ان ا | قدد | ه قباء فالاظهر تصديق المالك فلا يستحق | الا | جرة باب الجعالة | و خروج |
| طـ | ريقها كقولك من رد | ثلثة | من عبيدى الابقين او بنى لى حائطا او | مل | عملا فى بالمتاع فله كذا فيلزم | |
| وا | نما يلى فيه اذا عمل و | اشهر | الوجهين جوازها على عمل معلوم وقيل لا بد ان | تريد | عملا مجهولا ولو اشترك | خمسة |
| مـ | ثلا فى العمل جاز | وجها | الشركة بينهم فى الجعل وشرط الجعل | ا | ن يكون معلوما | |
| ا | لا انهما اذا اختلف الا | م | بينهما فى قدره تحالفا ولو امره بشغل ثوبه و | حذ | ف ذكر الاجرة لم يصح | |
| ا | ن يطالبه باجرة والله | ا | علم باب المسابقة هى بعوض كالاجا | د | ة فى الاحكام حرفا بحرف | |
| لا | زمة بالعقد وقيل | سله | لا يلزم بالعقد كالجعالة والاصح | الا | ول ويجوز على الرمى بنبل ا | و |
| حـ | راب وعلى آلة الحرب كلها و | بين | خيل وابل وبغل وحمار وفيل والكا | مل | لا يسابق نا قصا | |
| د | به آيس من ان يسبق | احد | امنهم ويشترط تعيين الفرسين والغاية | واعلم | انه يجب التساوى فى القرب | |
| فـ | ى الابتداء والانتهاء وتعيين | غلمان | يركبونها لا يشترط ويجوز لغيرهما | ان | يخرج العوض فيدفع | |
| الـ | مال على ان يكون | الملك | فيه للسابق ويجوز من احدهما فان اخرج | كل | منهما اشترط ليصح | |
| ثا | لث فرسه كفء سهما فى | المجا | راة ولا يخرج شيئا فان سبقاه او جاءا معا فلا | شئ | له وان سبق هو او الاخر | |
| نـ | عطيه السبق وان | هد | اهم الامام الى المسابقة واخرج من بيت المال جاز فان | ذكر | ان المسبوق شريك | |
| يـ | اخذ مثل السابق فسد | وبعض | ما ياخذ جاز فى الصحيح والسبق اعتبر | ته | العلماء بالاعناق هذا | ا |
| فـ | ى الخيل وفى الابل بالكو | اهل | وموت احد المركوبين يبطل العقد دون | مما | ت الراكبين فان كانت | |
| يـ | ومئذ المسابقة على | ا | لرمى فلا بد من تعيين الرماة ولا | يحتمل | الجهل بهم ومن لم يعر | ف |

فيجوز فيه الغيب وبوحاف الثاني الساكن

فالاحرف الايابس والدخل والدوكرو

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ج | عل بدله وبعد العقد يبادر | لقلعه | وسلط من الجذب للاخر واحد ويثبت | ا | لجناد للرماة لاجلهم | ا |
| و | يشترط معرفة عدد الرشق | و | الاصابة وصفة الغرض ومبداه وسنذكرا | نواعا | من الرمى خليبين او | لا |
| ذ | عيبهم ان الرمى الذى | دخلو | عليه محاطة اومبادرة اومناضلة | ثم | يشترط على الاصح | ح |
| في | هم بيان البادى | ليلا | يقع التستاجر والرمى قرع وغيره فاذا | مبزوته بنوع | منه جاز فليعر | ف |
| هـ | ناك انه قرع اوخرقا | و | خسق اومرق اوحزم ولا | نكوه | احدامنهم ا ل | ا |
| ا | ذا شرط عليه شرطا و | لم | يفبر فان شرط فى الاصابة الخسق و | كان | بالشن حصا ردت النبل | ل |
| ل | ما خرقه سقط حسب لانه | يعلم | انه لولا الحصا لخسق ولو عرض ما يعلم | المميز | انه عذر كريح هبت | ت |
| خ | طاته او نقلت الغرض | المنصو | ب او تلف القوس او الوتر فاخطا غرضا | منصوبا | لم يحسب مخطيا | ا |
| ين | بوه نعم لو اصابه صا | د | محسوبا بل لو اصاب موضع المنقوب بالريح فانا | نقول | يحسب له وليس | س |
| و | قوعه بصدمة نفره | حتى | لو اصاب الارض فازدلف فاصاب | من ذ | لك حسب ولو ان اهل الرمى | ى |
| هـ | ؤلاء الذين عقدوا الرمى | دخلوا عليه | ماتوا مثلا بطل ولم يقم الوارث ولا يضر انكسار القوس فى ذ | لك | باب الموات لا باس | س |
| و | الارض ميتة ان يحيى | ولزم | ان من احيى امواتا لا يجب عليه اخراج | خمسه | والكافر لا يحيى ما هو | و |
| ح | وز المسلمين حرموه عليه | و | له ان يحيى دار الشرك وكذا للمسلم ان | عشر | هم المسلمون او كان ذلا | ا |
| د | ابعنها من المشركين واذا | ظهر | اثر العمارة فى دار الاسلام يملك عليها او فى | دارا | لشرك الاصل | ل |
| ف | الاظهر انه يثبت فيه | الملك | بالاحيا والاحيا يختلف فان طلب الزراعة حوطها | ونصب | التراب حولها وان راد | د |
| ا | لحفير حوط ونصب على | المجا | ر الباب او دارا فبان يبنى ويسقف | الدار | او بستانا غرس الشجر والنخل | ل |
| ث | م المعمورة للزراعة اذا كانت سقيا | هد | ها المطر لم يحتج الى تهيئة الماء وبالاحياء يملكها | على | ما فيها من المرافق نحو | و |
| ا | لمعادن والشجر وغيرها | ونفذ امره | وتصرفه فيها ويجب بذل فضل الماء للدو | ا | ب لا للزرع واذا | ا |
| ن | زل بموات وتحجره | وكان | قد شرع فى احيائه او اعلم عليه بتحجير ا | لتميز | به وينتقل الى وارثه او رجل | ل |
| ي | وثره به لكن | الظاهر | ان المتحجر لا يملك البيع لما تحجره | وكذلك | لا يوجره فلو اخر | ر |
| ا | لعمارة وطالت المدة | و | لم يعمر قيل له اما ان تحيى او تترك و | عند | ذلك يمهل لو | و |
| سا | ل مهلة قليلة ا | لد | وام والانقطاع كالتحجر ثم الشوارع والناد | ى | والرحاب وماو | ى |
| ك | راع وابل والاماكن | المنصو | بة للمنافع لا يحيى من سبق الى شىء منها و | ار | اد الجلوس لمعاملة | و |



ويجوز فيه الاضمار وبوا سكان الثاني

الوصل والخروج و الحق الردف والتاسيس والاشباع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ن | وم فهو احق بالقرا | ر فى | ما سبق اليه ان لم يضر بالمارة وان | طال | مقامه فلو شاء الارتحا | ل |
| و | نقل متاعه جاز | الد | خول مكانه ان لم يرد رجوعا ولو | ز | عم انه يعود وما | ح |
| ي | جب ادامه له حتى تنقطع معا | ملوه | عنه ومن حفر معدنا باطنا وهو الا | يتا | تا الوصول الى ما هو | و |
| و | سط الا بالعمل | فا | لصحيح انه لا يملكه الا اذا احياه ارضه او | ستو | لى عليها ولا يزول ملكه عنها الا | اذا |
| ذ | الت الارض فلو انا | م | اراد ان يشترى منه المعدن دو | ن | الارض لم يصح وقيـ | ل |
| فيه | انه يصح | وا | لاول اصح والمعدن الظاهر هو الذى تكون | الفا | ئدة منه سهلة السحو | ح |
| ا | ذا طلبت كالبلور وا | لد | ر والياقوت والنفط والموميا | و | الكحل فمن اخذ شيئا منها فهو | و |
| ل | ه وان ضاقا وتنازعا | ه | فالسابق احق ان ياخذ قدر حاجته | فلا | يعطى اكثر منها | ا |
| ا | صلا وكذا الحكم | ان | كان الموجود مباحا كالماء والحطب او | ن | كان مما لا يحصـ | ل |
| ض | رورة الابمؤنة | يسلمها | كالمواضع التى يصير الماء فيها ملحا و | اكثر الناس | يحييها فهذه تصبـ | ح |
| م | تى تملكها بالاحياء | و | ان حمى الامام ارضا لترعاها ابل الصدقة و | مالا | يطيق اهله سفـ | ر |
| ا | لنجعة جاز ذلك اذا | لم | يضر باب اللقطة الالتقاط جائز | واحسن | ما يكون لمن ز | كا |
| د | ابه فى دينه يستحب ان | يفعل | ذلك ثم يعرف قدرها وصفها ولا يشهرها فى | الناس | ويعرف جنس اللقطا | ت |
| و | عفاصها ووكاءها | ودعا | بتعريفها فى الاسواق وابواب المساجد | وجها | ت امكنتها | ا |
| هـ | كذا ينادى فى | الناس | كل يوم مرتين ثم مرة ثم اسبوع ثم شهر مرة | واعلم | ان من التقطه لحفظ الما | ل |
| و | تسلمه عند الوجود | الى | مالكه لا يلزمه التعريف بل يستحب و | ان | كانت مما يحتقـ | ر |
| ا | وجبنا تعريفها ما دام صاحبها | نفسه | متعلقة بذكرها فاذا ظن | كل | انه قد اعرض ويئـ | س |
| سكت | وتملك فاذا تادى | واجابه | صاحبها قبل التملك اخذها واخذ | ما | حدث من زوائدها | سوا |
| ا | لمنفصلة والمتعلقة و | ا | ن مضت السنة ولم تطلب تملكها وضمنها و | يجب | منه الحكم بانا | لا |
| ف | ضمنه قبل التملك بل له | المطا | لبة حتى يملك فان تملك وجا صاحبها اخذها | منه | بزيادة متصلة والـ | تسب |
| ال | صانع فى الحرم ليس | ليك | التقاطه الا للحفظ لا للتمليك ود | بما | قيل بجوازه واما العبد فيما | |
| ثبت | صحة التقاطه | وغير | هذا قول بجيزه فان التقط مثلا | فهو | متعد بذلك فلينز | ع |
| ا | ما باذن السيد فيصح و | هم | يرون حينئذ ان الملتقط هو السيد كذا هو | منصو | ص عليه والمكاتب قالـ | وا |

باب اللقطة

النجزات ويجوز فيه الوقف وبهو

والبحري والنفاد ... بحكم ... كلامه

باب اللقيط

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ﻧ | يجيز لقطته لنفسه | وظهر | من القولين قول يوجب نزعها من الفاسق والاصح | يقول ب | الجارية التي | لم |
| يـ | حرم وطئها اذا وجد | ت | لا يجوز التقاطها للتمليك بل للحفظ و | من | وجدتها لته لها بالجـ | ري |
| ا | متاع كالظبي او | له | قوة كالبعير والفرس او وجدها ئ فكل | ذلك | لا يلتقط للتملك ولـ | و |
| ل | لقطه للحفظ من له | شوكة | القضاء جاز وكذا غيره في الاصح و | ما | لا يمتنع من ذلك كالغنم وغيرها | |
| مـ | ن صغار الابل | وتو | ابع البقر من اولادها يلتقط للتملك و | احسن | من ذلك الفعـ | ل |
| تـ | حفظها لمالكها | في | يدك ويتبرع بانفاقها وانت مخير بجو | ز | لك بيعها في الحال و | نفقة |
| د | سم البيع منوط على | المنصو | ص باذن الحاكم ان كان موجودا فاذا وجد | يد | ك على الثمن جاز لـ | ك |
| كـ | ما سبق تعريفها وتملكها وان | ر | دت ذبحها واكلها جاز وتضمن اذ | انصب | لها مالك بحـ | ق |
| و | ان اردت عرفتها | في | يدك ثم تملكها وتنفق باذن الحاكم والاكل لا يجو | ز | في حيوان ماكو | ل |
| يـ | وجد في البلد في ا | شهر | الوجهين باب اللقيط التقاط المنبوذ لا | يد | افع في وجوبه بحرمه | |
| جـ | ناية فان وجده | صف | اليد فنفقته في بيت المال فان وجد معه ما | لا | وكان على | |
| و | جه ينسب اليه قال | عا | مة الاصحاب هو للقيط ينفق عليه منه الا | نه | يحتاج الى اذ | ن |
| ذ | عم الحاكم والحكم بالاسلا | م | اللقيط بدار الحرب اذا كان بها مسلم واحد وتبع | منه | ثم لا يصـ | ح |
| فيه | رق وان كان مما | ثلا | للرقيق وينزع من الفاسق والعبد | واذا | اخذه كافر وقد قضـ | ى |
| ا | نه مسلم فلا لبو | ث | له معه والحضري اذا التقطه بدوي | ثبت | يرحل عنه او حضري ترحـ | ح |
| لـ | بلد غير بلده | وغير | ه البلدين متقاربة جاز والبدوي بالبدوي | نقول | يجوز له بالنقـ | ل |
| و | ان التقطه اثنان فا | ن | يقف الاصح انه يقدم غني ومقيم على | ما | سواهما وعند التساو | ى |
| قـ | ارعنا بينهما | وفي | مستور العدالة والعبد تقديم العدل | احسن | فيجب فان ادعى مسلم منه النسب | |
| صـ | ح الانتساب و | ر | جع اليه وان ادعاه كافر قبل منه و | الز | مناه نفقته بذلـ | ك |
| و | لا يتبعه في كفره ملازمه | بيع | وكذا ليس الا ببينة بنسبه ولو | يد | عى نسبه عبد وقيـ | ل |
| هـ | ذا سيده صح وكذا | من | غير قبوله في الاصح ولحوق نسب الولد كا | ن | لا يصح بدعوى امراة الا من | |
| و | داي بينة يقيمها وقيل | العا | دمة للخروج يلحقها دون المزوجة | واذ | ادعاه اثنان و | كل |
| ا | قام بينة او ما اقا | م | واحد بينة عرض على القائف فان ا | جمعت | انه ولد احدهما | ا |

سلم



لغاية القاعاني المرنات والحرف الرابع

الفرق قرائة حكم حروف الوصل على انه اذ ذكرت

باب الوقف

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سـ | لم اليه دون | الثاني | وان نفقته منها او الحقته بهما ام ندما | تقول | او لم يكن هنالـ | ك |
| فا | ن ترك فان بلغ و | جا | الى احدهما وانتسب اليه قبل وا | ما | اذا ادعى رقه رجـ | ل |
| طـ | البنا ببينة انه ملكه | ابن | امته او شراه ونحوه فان قتل اللقيط اخذ الامام | اشر | ف ما يراه من ديتـ | ه |
| ا | وقصاص وان قذف ود | الدو | ه مجهولون فادعى الحرية وحصل من | القاذفين | الانكار فـ | القو |
| لـ | لقاذفين على الجد | بدا | جا الحكم الى اصل براءة ذمته | و | لو بلغ اللقيط الموصو | ف |
| ثا | نيا عزمه عما كان وهو | غلام | من الاسلام الى الكفر فانا | نقول | ان يحكم باسلامه | في |
| ا | لصغير تبعا لابيه فان | الظاهر | انه لا يقر على الكفر وان كنا نقو | ل | باسلامه تبعـ | ا |
| لـ | لدار شددنا عليه | وحام | ناه فان صمم عليه تركناه واذا اقر بالرق بعد | ما قدم | وتصرف وباع ونكـ | ح |
| مـ | دة فان كان قبل اقراره بهذ | الملك | قد اقر بالحرية لم يقبل والا ابطلناه فيما د | عا | الى اثبات احكـ | ام |
| تـ | صريفه في الزمن | المجا | وز وتقبل في المستقبل باب الوقف لا | مرا | ن الوقف الصحيـ | ح |
| حـ | ق وقربة فمن ز | هد | لله في عين معينة ووصفها صح | وما | يصح الا فيما يستمـ | ر |
| د | سم الانتفاع بـ | مدة | مع بقاء عينه كعقار وحيوان واثاث و | اغلا | ل وشروطه بردمعر | وف |
| كا | لوقف على القناطر | ثم | لا يجوز على الحربي وفي الصدقة على الذمي | ثو | اب فيصح عليه وقفـ | ا |
| و | الوقف على نفسه لو | ار | اده باطل ولا يصح على مجهول وجنين وقصد | به | العبد لا يصح ولـ | و |
| ا | طلقه ولم تقصده ا | نفع | الى سيده والوقف المعلق بشرط | وما | كان منقطع الابتداء فذلك | صلا |
| لا | يصح وهو كالوقف على | ا | لمجهول ثم على الفقراء واما المنقطع الاخر مثل | ا | لوقف على من يـ | علم |
| حـ | ل الوقف عليه ثم على | المماليك | الا رقا لا نفسهم او على مجهولين وما | شبه ذلك | صح على الاصح وكا | ن |
| ر | جوعه بعد الاولى الى من | كا | ن قريبا للواقف فان وقف على زيد | ثم | على الفقراء فرد | ه |
| فـ | هذا وقف مصر | فه | منقطع الابتداء فيبطل ولو | انه | وقف وسكت | اذ |
| ا | نشاه عن صرفه | الى ا | حدهم لم يصح في اصح القولين و | اذ | اراده اشترطنـ | ا |
| لـ | ه الفاظا صريحة تثبت بد | لالتها | كوقفت وحبست وسبلت واما تصدقت فان كنت | نا | ويا له صح وكذا اذا وضحـ | ت |
| د | سه بما يقتضي انه دا | ئم | كصدقة مؤبدة ونحوه صح واذا ا | ديت | مثل حرمت وابدت فليس بصريـ | ح |
| ا | لا انه كناية فيه | م | اذا شرط فيه الخيار وان يبيعه | ا | ذا شاء او يرجع او قد | ر |

باب الهبة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | سنة بطل واذ | اقبل | الوقف انشاء والملك فيه لله خلت | سما | ؤه وبعضهم يصير الم | لك |
| ع | نده للموقوف عليه لانه | الرحيم | في الغلة يملكها ملكا تاما و | معرفة | ضعف ذلك كونه | ما |
| ي | ملك وطئ الموقوفة عليه | بالا | جماع لكن اذا وطئت كان يملك مهرها | منودا | وكذلك لو جاء من | قبل |
| ج | ادية الوقف ولد ملكه وجا | شرا | ؤه منه وقيل لا يكون ملكه | فانه | ولد موقوفة فيكون مثلها | |
| و | اذا اتلف الموقو | فجا | ذ للناظر الغرم اشترى به مثله | يكون | وقفا مكانه فان فضل | |
| ز | يادة شرى شقصا واذا جعل | رب | الوقف النظر لرجل بعينه والا كان امره | مرفوعا | الى القاضي ويحتاط ناظر | ه |
| فيه | كما يحتاط في | المماليك | المنسوبة اليه وينفقه من حيث شرط | بلا | اسراف وان لم يعينه | ا |
| ال | واقف جعلناها | في | الغلة وتصرف الغلة على شرط الواقف من | تنو | يع مصارفها فلو | |
| ط | را من الواقف ايثار او | جا | منه تقديم وتاخير جاز فان لم يعينه للناظر فهو جائز | سن | ولو مات من | كان |
| ي | ستحق الوقف ثم ز | حف | اليه البطن الثاني فوجدوه موجرا فا | مثل | القولين انفساخها بالموت | |
| و | قيل لا تنفسخ بل | سهام | البطن الثاني تعلق بالاجرة | يا | خذونها منها | من |
| ه | ذه المدة المستقبلة ولو وقفه | طرد | الوقف على عمرو وحمزة و | زيد | ثم الفقراء فعدمنا عمرا | |
| و | حمزة اخذ زيد | الكل | وبعده الفقراء باب الهبة | و | الهبة قربة وا | ص |
| ذ | لك انها تجلب المودة | وا | لاجر وهي للاقارب افضل ولد ويستحب | العطايا | تساوي الاولاد فيها | |
| فا | ذا وهب المحتاج | سر | ا فهو افضل وتسمى صدقة وما | يها | دى بين الاخوان وتحمل | |
| ل | هم فهو هدية وشرط ما | و | هب انه يجوز بيعه فان قال اعمرتك | الدا | ر هذه او جعلتها لك | ر |
| د | قبى سواء قالوا | اهلك | بعدك ام لا كل ذلك يصح ولكن لا يد | خل | الموهوب ملكه الا بكلمة | |
| ا | لايجاب والقبول والقبض | من | بعد الاذن فيه وان كان تحت يد الموهوب | واذ | ن له في قبضه فانما يملك | |
| ب | مضي زمان يتاتى قبض | المماليك | الموهوبة فيه وان مات قبل قبض جر | انا | ب الوارث فيه و | اذ |
| ع | ن للوالد فوهب | طائفة | من ماله لولده جاز ولك ان ترجع فيما | ديت | منها لولدك وكذا الا | مهات |
| و | سائر الاصول | وكان | الزيادة المنفصلة للولد لا المتصلة و | نكره | ان يرجع الا اذا | دوى |
| ال | نظر وداى في | ذلك | مصلحة وشرط رجوعه بقاؤه في سلطنة | فا | ن كاتبه او وهبه قالوا | ا |
| ح | رم عليه الرجوع | في | ذلك حتى ينفسخ الرهن والكتابة ولو حجر عليه | ونضب | للغرما وحا | ول |

رجوعا

باب الوصية

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ر | جوعا فيه لم يجز فان باع | الذي | المرهونة او وهبها ثم عاد لم يرجع | ونو | جب جواز الرجوع في الموجر | ثم |
| ف | ى وجه ضعيف | الجحد | لا يرجع ووطئ الاب للموهوبة لا يكو | ن مثل | الرجوع في اصح ما نقلت | |
| ال | علماء وقيل يكون رجو | عا | ومن وهب لمن هو اعلى منه ندبا ان | يا | خذ منه ويثيبه ولم يكن | |
| خ | روج الثواب بلا ذ | م | له على الاصح فلو ان رجلا وهب | رجلا | شيئا وشرطه عليه هو | |
| ا | ن يعطيه ثوابا معلوما مثل | اربع وعشرين | اوقية من الفضة ونحوها فاذ | اقبل | صح وكان الحا | صل |
| م | نهما بيعا وان شرطه | و | هو مجهول لم يصح باب الوصية | و | يصح من حر يكون مكلفا | |
| س | وا المسلم والكافر و | في | السفيهة خلاف الاصح صحتها منه ولا | يا | تمن الا مكلفا لا يرتا | ب |
| ا | حد بعد الله حرا وفي | العا | دم البصر خلاف الاصح ان يكون | قائما | بالوصية اليه ويص | ح |
| ج | علها الى اثنين فلا يقو | م | احدهما بالتصرف دون الاخر اذا | دخل | الاثنين شركا واذ | ا |
| ا | راد ان يوكل في | الذي | لا يتولى مثله جاز له ذلك ولو | بريد | وصي ان يوصي لم يجز ب | ل |
| ز | عموا ان له ذلك | بعد | الاذن ولا يتم الا بالقبول وله ان | يا | تي به لفظا | كفعو |
| و | قدمات الذي وصا | ه | قبلت وكذا فعلا في الاصح ولو ان | رجلا | قبل الوصية في بقا | |
| ا | لموصي لم يكف ولو | ادعى | العزل انعزل ومن اوصى الى عدل | من الرجال | فله عزله ا | خبر |
| فيه | بفسق ام لا و | النا | س يجمعون على ان شرط الموصى به الاباحة | فكلام | اوصى بمحرم فتلك | |
| ال | وصية باطلة ولو | صر | ح بالوصية لوارث صحت في الاظهر اذا | اجا | ز الورثة واكثرهم | |
| ق | ال بصحتها لقائل | ولد | اخل في الكفر بعد الاسلام ولكافر محار | ب | ويستحق الوصية عند با | |
| ب | الموت اذا لم يتعين | الا | هل لها كالفقراء فان كانوا معينين | فهو | موقوف على قبولهم فا | ن |
| ض | رب الوصي له في الارض | شرف | القاضي عليها حتى يعود فان قبلها اخذ | الذي | حدث من زوايدها وفي | |
| و | فانه بعد الموت ينتقل | الملك | في القبول الى وارثه واذا اوصى بالثلث اخذ | نا | ها والورثة اذ | ا |
| ه | م فقراء فاقتصر | ووقف | دون الثلث فهو اولى اما اكثر منه ان ارا | د | الوصية به ا | [illegible] |
| و | ليس له وارث بطلت | ا | الوصية في الزائد وان كان له وارث فقال ارا | يت | ان اجيزها ف | [illegible] |
| ا | لقولين يجوز ثم التطوعات والعطايا | ما | وصى به منها فهو من الثلث | واذا | جعل من الثلث واجبا | |
| س | لم منه فلو اطلق | ونزل | الواجب في الوصية جعل من رأس المال ثم ا | نا | متى ما | تحل |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ق | لوة المرض فيتبرعاته في | الملك | الذي له موقوف على الثلث ان اتصل | دا | ده بالموت وكذلك | كم |
| ا | لتصرف من المحارب حال | المجاهد | هو المحارب القتال يكون | مضافا | الى الثلث وكذا التصرف | ممن |
| طا | لب ذمة مقبل | الى | قتله او كان في سفينة والبحر متموج وكل من | انتصب | للوصية وهو | و |
| خا | ئف كخوف هؤلاء للجاو | ز | هم حكمه ويعتبر من الثلث قيمة العبد في | متلقو له | اوصيت لفلان بخرا | ج |
| مـ | ملوكي واذا عجز ثلث ما | بيد | ه عن ما نجز في المرض قدم الاول واما الوصا | يا | ان تفرقت او وقعت دفعة واحد | ة |
| سـ | واء فيقسط على الجميع | وقبض | كل نصيبه فان اعتق الموصي فيها | عبد الله | ثم عجزت لم يقد | م |
| ال | عتق بل يعتق بقسطه | على | الاصح وان كان كلها عتقا جزء ثلاثة اجزاء | ويا | مر بالقرعة فهي مما | دلة |
| سـ | نة رسول الله و | الناصر | ون لسنته يعتمدون عليها عند الضرورة و | ابا | ها بعض العلماء | واذا |
| ا | وصى له بعين حاضرة | و | هي ثلث ماله وباقيه غائب او موجل اي | بكر | ة غد مثلا او دار بها فيسـ | ـر |
| كـ | ذلك بل ما استطلع | طلعة | من الثمن وحصل ملكه منها قدر ثلثه | و | توقف لعين وكذا هؤلاء | يمكن |
| ن | صيبه المتخير منها لانها | تعز | ي اليهم فلا يتصرف في بعضها دونهم حتى | يا | خذوا مثلها و | ما |
| و | صى به من عين سيملكها | فابت ايا ما | مثلا وملكها جاز وكذا بمجهول كاحد | غلمان دواني | وبا لابق | قبل |
| يـ | عود وبالطير الطائر | وما | اشبهه وما ينتفع به من النجاسات | ويا | مر الشرع باقراره عليها | |
| جا | ز الوصية بها كالزبو | ت | النجسة والسراجين والكلب ويبطل فيما يحرم على | صاحب | لها انتفاع بها كالشمو | ل |
| و | الخنزير واذا كانت | و | صيته للاقاربه اعطوا وسوى بين القاضي | الدا | ني فان قال للاقربين | منها |
| ز | جرنا الابعدين و | جعل | الكل للاقربين ويقدم ابن على اب فيما | دو | ي واخ على جد و | كانت |
| في | القرب الام كالاب و | في | البنت والابن الحكم سوى ويستحب ان | يا | خذ كل من حضـ | ـر |
| هـ | ناك من الفقراء اذا كان | الا | يصالهم فان اقتصر على ثلاثة جاز وان | خا | لط بين الفقراء وعمر | و |
| ا | لوصية فهو واحد منهم | شر | ع في الحكم لو يعطي اقل شئ اجز | نا | ه واذا اوصى بشـ | ـي |
| لـ | حمل امرأة فالحكم | فيه | ان يعطى حملها الموجود حال الوصية | وما | اوصى به للعبد حكمنا | |
| عـ | ليه بانه لسيده فلو | مد | في عمر الموصي حتى عتق العبد فهو له وان | ا | وصى لرجل من دقيقه برأ | س |
| صـ | رف فان لم يكن له | د | قيق بطلت وان كانوا قتلوا بموت وما | شبه ذلك | وبقي واحد قالـ | ـوا |
| بـ | قي له يا خذ برأ | سه وا | ن قال اعطوه شاتا من ماله والمعينة والذكر | واعلم | انه اذا اوصى بدابة | كانت |

واقفة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| و | اقفة بين ا | لد | واب على الفرس والبغل والحمار في الاصح و | ان | قال اعطوه من حـ | ـاصل |
| هـ | ذه الكلاب كلبا اعطينا | ه وبقي | له الكلب وان لم يخلف الا كلبا لم ينظر الى | العدد | والجمع ان اعطيناه ثلاثة و | في |
| و | صية بقوس تستعمل | الظاهر | من لفظه فيعطى قوس بندق ورمي وان كان | المذ | كور قد اقترنت بـ | ـه |
| ا | لدلالة على احدهما عمل | في | ذلك بمقتضاها واذا اوصى بالحج وسواء في | كونه من | رأس المال | ام |
| سـ | لك به مسلك الثلث فان | الد | خول فيه من الميقات وقيل ان جعله من | ثلثه | كان من بلده نفـ | ـلا |
| كان | او فرضا والصحيح فيما | ملوه | هو الاول وان قال اوصلوه | الى | جزء او سهم فذا | لك |
| ا | سم يقع لكل ما | مده | به مما يتمول لا يختص بدرهم ولا | عشرة | ولو كان | قوله |
| لـ | هم اعطوه مثل ابني | ثم | لم يكن له وارث غيره حكمنا | با | لنصف وصيته وان اوصى مثلا بشا | تي |
| خـ | ز لزيد ثم اوصى بها لعمرو | دخل | الاثنان فيه شركاء ولا لزوم | لها | الا بموت الموصي وتبطـ | ـل |
| ا | ذا رجع بقوله فسخت و | عد | ت عنها ونحوه وكذا اذا غرما لوارثه | وعدته | ها منه او كانـ | ـت |
| مـ | طلقة فشغلها بازوجتها | زوجتها منها | باقباض وكذا بغير اقباض في | ا | لاصح وكذا لو وهبها والحكم | في |
| سـ | ائر التصرفات كذلك | ونزل | العرض للبيع منزلته وتزويج الرقيقة | المؤنث | والمذكر وتاجيره لا يعـ | ـد |
| ال | فعل له رجوعا وتوطحن | ا | لبر الذي اوصى به او اوصى بشئ | من | الدقيق فخبزه جعلـ | ـنا |
| مـ | نه ذلك رجوعا وصار | الملك | فيها بعد الموت للوارث وان جعل له | الثلث | من طعام معرو | ف |
| تـ | عين له واذا خلط | ا | جعا كان فيه باب قد ندب | الى | العتق وصريحه عنـ | ـدنا |
| حر | ية وعتق واما | المجا | ز والكنايات فكثيرة كقوله انت سائبة او لا | عشر | ه بيننا وانت بـ | ـري |
| كـ | ذلك وكل طلاق | هد | م النكاح صريح او كناية فهو كناية في العتق | بغير | النية لا تنفذ | ه |
| و | اما الصريح فينعقد مع | عد | مها واذا علقه بصفة حصل عند وجو | دها | مثل قدوم سفـ | ـر |
| يـ | نتظر ومطر يكو | ن وا | ذا علقه بصفة ورجع بالقول لم تبطل الصفة و | تقول | انك اذا وهبـ | ـت |
| جـ | ارية قد علقت عتقها و | اخذها | المتهب بطلت الصفة وكذا البيع ونحوه | في | ابطالها فلو باعـ | ـها |
| و | استعادها البايع | واقام | بملكها ووجدت الصفة لم تعتق والتعليق | المذ | كور يبطل بالموت فلـ | ـو |
| ز | نت او تزوجت وولدت فان | الظاهر | ان الولد لا يلحقه حكم التعليق الذي | كو | ن ولو اعتق بعضه | عم |
| في | جميعه ولو كان | الى | ثلاثة ملك عبد فاعتق واحد منهم | ثلثه | فان كان | في |

الحرفان بيع فيجوز فيه الكف وهو

قوله بعد البين لا اشكو الصبابة لولا هو

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لـ | ه العوض فتقول على كذا | و | بنجومه كذا فاذا اديت فانت حر والقبول | في | ذلك شرط وليس فـ | ي |
| حـ | كمها خيار اذا | تم | ولا يجوز تعليق عقد الكتابة | المذ | كورة على صفة وليس | له |
| د | سمها في بعض عبد | له | مشترك الا اذا كاتباه معا وذ | كر | وان للمكاتب | قوله |
| فـ | ي فسخ الكتابة واليه | الامر | فيه وتلزم في حق السيد حتى يعجز | ا | لمكاتب او يموت | هو |
| ا | ما اذا مات السيد فانه | بعد ذلك | يقوم الوارث مقامه واذا قارب | حد | ماله عليه اوجبنا | |
| لـ | ه حط شيء مما ثبت | ولستقر | في الما ويكفي ما قل لا يبقين | عشر | ولا سدس وله طلب | |
| سـ | يده ولا يعتق في | الحال | وعليه درهم ولو كاتبه اثنان ثم ان | رجلا | منهما ابرأه سر | ى |
| ا | لعتق ان كان موسرا | وفي | التقويم كما سبق ويملك المكاتب منافعه | وثلثه | الموصى له به وبجاوزته فا | ن |
| بـ | ايع سيده فهو على | سبعة | غيره معه يشفع عليه ويعاشره | عشر | ه الا اجانب لكن لا يكون قابلا | |
| عـ | قد نكاح ولا عقدا فيه | دست | محاباة الا باذن سيده ولا يقارض | رجلا | ولا يكاتب و | لا لك |
| فـ | انه لو باع باحد | وثلثين | ما قيمته ثلاث وثلثون احتمل هذا او ما | خذ | اخذوه وولده من امته قالوا | |
| جـ | ار في حكمه ويعتق بعتقه و | الظهر | القولين ان المكاتبة اذا وا | فقا | يضا بولد منها | |
| و | جب له حكمها و | الدراهم | التي في ذمة المكاتب لو استحا | لها من | السيد او اشتراها رجل | |
| ذ | يفناه ولو تركه في | الربا | ط محبوسا منذ عشرة ايام مثلا لزمه اجرة | العشرة | الايام وقيل الخلا | ص |
| فيه | ان يملكه فا | صيته | امره بقدر ذلك المدة ولا يملك الوطئ | من | امته المكاتبة ويجب | |
| ا | ذا وطئها المهر | واجري | يجري غيره الا انها اذا ولدت من | ذلك | ثبت حكم الاستيلاد ايضا | |
| لـ | ها وان جنى | الملك | على المكاتب لزمه ارش الجناية | وفي | جنايته على سيده او غيره وجب | |
| كـ | مال الارش ما لم يقع | المجا | وزة لقيمته والا وجبت القيمة في الصحيح و | ضد | يقول الارش بتعيين عليه | |
| فـ | ان لم يشا | هد | له ما جاز تعجيزه وبيعه ولو | يقول | السيد وقد جنى انا افديه فعل | |
| و | يبقى مكاتبا ويجب | لرعا | يته لقوله وبهم يفديه فيه القولان | احد | هما باقل الامرين والاخر يقول | |
| سـ | واو في بالارش مطلقا ولا | يا | تي بها على عوض محرم وشرط فاسد فا | ي | كتابة يكون هذا | ا |
| و | صفها فهي فاسد | ه | نعم لو كاتبه مثلا على عشرة ارقاق خمر فسلم | عشرة | عتق لوجود الصفة | |
| بـ | اب عتق ام الولد وهذا | النو | ع من اسباب العتق فمن اتت منه بولد | جارية | له فهي ام ولد | وما |

العقل ويعمل بقول الناس المتحرك واما

عين الغني لانها واجبات فيه بالوصل وولوي غيرا صلية

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سـ | نزه الحال معسرا | عا | جزاعن الغرم عتق نصيبه فقط وذو اليسا | دجا | النص بانه يستسـ | عين |
| ال | عتق في جميعه ويقو | م | عليه لبا في فان اختلفوا في قيمته فالقو | ل | قول المعتق والقيمة | الى |
| عـ | ليه اذا كانت مثلا | اربعة وثلثين | واليسر باربعة قوم منه بقدرها | و | لو ان رجلا اخـ | ـر |
| قـ | ال له اعتقه عني بخمسة ا | وسـ | اعتاقه عنه ولم يذكر له | خمسة | فاعتقه عتق وبا | ت |
| لـ | لسائل ولاؤه ولو عتق | الا | نسانا بعض عبده مجملا فله تفصيل | اجمال | عتقه فاذا اراد | ه |
| و | سبه فيمن شاء فان | ما | ت عين الوارث ولو اعتق واحدا | وعشرة | من عبيده معينا | ا |
| وا | دعى الاشكال والنسيا | ن | ترك الى ان يتذكره ومن ملك احد | اصو | له اوفروعه عتق عليه | ولو |
| سـ | قط في ملكه | و | هو مختار بعض واجد من الفروع والاصو | ل | هو موسر قو | م |
| ا | لذي لشريكه عليه ولا يلزمه | الذمة | ان كان معسرا لو ملكه بارث والتوصل | في المو | لودين والولدين الى الشراء | ما |
| طـ | لبه يستحب للعتق | فا | نراجر وصلة باب المدبر يجوز تدبير | نث | ومدكر الاما | جا |
| ا | لنص بمنعه مثل | جا | رية مستولدة وهو مندوب ويعتبر من | ثلث | حاله وصريحه انت | ت |
| خـ | لف موتي حر وقس | به | ما اشبهه وكذلك دبرتك وانت مدبر | فسا | وى به ذلك | في |
| ا | لاصح ويجوز تعليقه | الى | وجود صفة كقوله ان دخلت الدار | وخمس | مرات فانت حر | ة |
| مـ | ن بعد موتي ويجوز | ذلك | في بعض العبد ولا يسري ولو دبر | جواري | وتصرف فيهن بطل تدبيره | ه |
| سـ | و البيع والرهن فـ | لواقام | معهن واجنبهن بطل ايضا | و | لا تبطله الكتابة ولا | ا |
| التـ | دبير يبطلها بل يكون | معتقا | بحكمها وان ولدت المدبرة من | عشر | ه زوج او غيره ولد | ا |
| مـ | عناه ان ينتقل | الى | حكمها وان كانت عند التدبير حاملا فعند اصحا | بنا | حملها مدبر و | لو |
| تـ | حلى المدبر بالاسلام وابى | ان | يسلم السيد دفعنا يده عنه الى ان يمو | ت | او يسلم ويوجر فان حصل | |
| ر | جوع منه في | ما | ذ بربيع عليه باب الكتابة | واذا | اردتها فقد | روي |
| كـ | لهم انها من القربا | ت في | المرض تعتبر من الثلث ولا تصح الا من | جا | ئز التصرف فلا تصح الا | لا |
| وا | لعبد المكاتب بالغ | عا | قل رشيد ولا تستحب الا لكسوب لا يتجا | وز | امانته | وتصح |
| ما | ضيه الا بعوض معلو | مة | صفته موزع بنجمين فاكثر الى | العشرة | فما فوقها ولا | ا |
| ا | قل من نجمين ولا بد في | ذلك | من تقدير النجوم واذا اردت العقد | قلت | كاتبتك وتفـ | صل |

باب التدبير

باب الكتابة

باب الولاء

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حـ | دث بعد من ولد فالشارع وا | صنف | له بصفة امه وكذا لجارية ولده | فا | ماجارية اجنبي | قد |
| ذ | لك بنكاح منها اوزنا | فار | تفاقها بحكم الاستيلاد لا يصح و | ثبت | الملك حتما | [illegible] |
| فـ | ى الولد لمالكه امه ثم ا | تفقوا | على انه اذا ملكها الا تصير في احو | الها | ام ولد ولو وط | ى |
| سـ | هوا او شبهة امة غيره لم تصر | بذلك | ام ولد لكن الولد حر المستولدة يشترط | في | ما وضعته ان يخر | ج |
| ا | لجنين بعد التصور والتخطيط و | كثيرا | لعلماء يجوز له ان يزوجها وخالف بعضهم في | ذلك | وليس له التصـ | دق |
| بـ | يع المستولدة ورهنها | و | الوصية بها ولو وطئها ام ولد النصراني | وقس عليه | سائر الكفار اذ | ا |
| عـ | ادت الى الاسلام | فر | ق بينهما باب الولاء | واعلم ان | الحكم في ا | لمرء |
| سا | ئر اذا اتفق مملوكا بخرا | ج | او لد او عتق عليه فولاؤه وولد | الحر | ة المعتقة تبت بلا | شك |
| كـ | ونه لا ولا عليه في | ذلك | وولد العبد من المعتقة حر وولاؤه | وف | لموالي الام فلو | [illegible] |
| [illegible] | جر عتق الاب انتقل | عنهم | ولاؤه الى معتق الاب وهذه المزية | التي | للاب للجد ايضا | ا |
| و | يجر الى معتقه | ثم | اذا اعتق الاب بعد الجد ثاني الولاء يجر و | يستقر | من موالي جد | ه |
| يـ | ومئذ الى موالي ابيه و | ام | الولاء بعد المعتق للعصبة يختصون | بها | ذا دون الورثة | وا |
| جا | ؤا معا فالابن | با | لتقديم وبه ثم الاب ثم الاخ ثم لابن ثم | ا | لاخ ثم الاب ثم الجد وهو القيا | س |
| وز | عم بعضهم ا | ن | الجد والابن ثم الاب [illegible] ثم بنيهم | لا | مر الى مواليه فان لم يكن | [illegible] |
| فيـ | نتقل الى عصباتهم و | بني | على الترتيب المذكور ولا يرث احد | وغير | ه اقرب حتى يكون معه | وما |
| هـ | ذا في الرجال و | مدر | ك القول في النساء انهن لا يرثن بالولا | وسوى | بينهن الامر | قبل |
| ال | معتقات فمن وا | [illegible] | ية امرأة ورثته وورثت ولده | وحا | شيته المعتقين اذ | ا |
| كا | ن لها الولاء في غلا | م | فمات صار لعصبتها باب الفرائض لا | شئ | يخرج مما خلف لم يشغله | [illegible] |
| شـ | ئ للغير قبل جهاز الميت و | [illegible] | وع بعد ذلك في ابرائه من ديونه | وخلا | عن ذمته منها | [illegible] |
| فو | راثم باقي الوظا | ئف | فتنفذ وصيته وتقسم تركته | وما | له بين ورثته | وهي |
| هـ | ذه عشرة رجال ا | و | لهم الاب وابنه وان سفل وبعده | عدا | لاب وابوه وان علا | [illegible] |
| وا | لاخ وابنه ومما | جعلها | ذا شئ اذا كان من الام | وما خلا | هؤلاء فالعم الا | [illegible] |
| سا | بعهم لاخ الاب لامه | وقعا | ه بعد ذلك ابنه والزوج والمعتق و | و | النساء سبع بنت | ه |



باب اهل الفروض

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قا | لوا وبنت ابنه | وا | ن سفلت والام والجدة والاخت | بل | الزوجة والمعتقة وكيـ | ف |
| طـ | را فعل القائل في | فرا | غ روح مورثه بحق ام باطل لا يرث | وليس | يرث اهل ملـ | ة |
| ا | لا عن اهل ملتهم هذه | سنة | المسلمين مع الكفار واما الكفار فيتوارثون | ولا | يكون لاختلا فهم | في |
| لـ | قب الكفر اثر ولا | ار | ث لحربي من ذمي ولا عبد ومرتد منه احد و | لا يكون | بين ميتين لم يـ | رو |
| سـ | بق احدهما او لم يحكم | بعين | السابق منهما توارث باب اهل الفروض | والا | صل في ميراث ذو | ي |
| ا | لفروض كتاب الله | وجه | وهي نصف وربع وثمن وثلثان وثلث وسدس ثم | ان | اهلها الذين بـ | مثل |
| بعـ | ددهم عشرة الزوج و | بعد | ه الزوجة والام والجد والبنت وبنت الابن و | يكون | للاخت ثم الاخ وهـ | و |
| ا | بن الام ثم الاب و | ذلك | مع الابن او ابنه ثم الجد مع الابن ا | وا | بنه ولا فرض لسواهم والاو | جه |
| لـ | معرفة يختلف فالزوج ياخذ | بعا | مع ولدها او ولد الابن ونصفا ان لم يكن | ذ | لك والزوجة كذلك وهـ | و |
| مـ | ن حيث انها تاخذ لعدم المتقدم | ين | المذكورين ربعا ومع وجودهم ثمنا وان | ا | بلغن اربعا فـ | شبه |
| قـ | لكه الواحدة في الربع والثمن | ثم | الام ولها الثلث من ولدها و | المثنى | من ذلك حالات وهـ | و |
| حـ | ين يكون ولدها الذي | ذهب | ولدا وولد ابن فلها السدس وحين تزاحم | بالا | ثنين من الاخوة سواء كانوا | [illegible] |
| ر | جالا او اناثا وقد تعود | الى | ثلث ما بقي بعد فرض الزوج والزوجة | وكان | ذلك اذا اجتمـ | ـع |
| كـ | لا الابوين وزوج وزوجة وا | لجدة | في ذلك القياس ثم الجدة و | اول الكلام | فيمن يرث بلا قو | ل |
| و | هما ثنتان ام الام و | الثانية | ام الاب ثم امهاتهن من انفردت اخذت السدس و | مو | رد الخلاف فجدهي | م |
| ا | ب للاب والصحيح لها | سنة | الجدات وان اجتمعت جدتان فاكثر استو | جبا | السدس اذا تحاذيا و | ان |
| لـ | م يتحاذيا وبعدت | احدا | هما حجبت ان كانت للاب واما البنت | [illegible] | لها النصف اذ | ا |
| و | قعت وحدها للاثنين | و | ما فوقهما الثلثين وبنت الابن مثلا النصف | ما | لبنت الصلب وللاثنين فا | لوا |
| فـ | وقهما وان بلغن | خمسين | الثلثان كبنات الصلب لكن هذه | لا تنقص | عن الثلث فيما ذكر | وا |
| وهو | متى كانت هي والبنت | وبلغ | ميراثهما الثلثين فللبنت النصف | كقولهم | وتكملة للثلثين لهذه وكـ | ذا |
| سـ | بيل الاخت لابوين تصل | الى | النصف وللاثنين فصاعدا الثلثان فان فقدت | قام | مقامها الاخت لاب وقـ | س |
| كـ | ل احوالهما اذا اجتمعا في | مصر | وف الارث على بنت وبنت ابن واخوات | القوم | مع بناتهم عصبة فافهم ذلـ | ك |
| و | تعطى ولد الام | في | ميراث اخيه السدس وللاثنين فصاعدا الثلث | الا | نثى والذكر مثلا | ن |

السابع البنات ويكمل ما بابيه

ما قبلها وهي اصلية كانت رو بالكفو لى اذا

باب العصبة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ما الاب فقد | صحبه | السدس مع الابن او ابنه وكذلك الجد وا | زيد | لك علما انه | ما |
| ل | لجد مع الاب شئ ول | الحا | فد مع الابن ولا الجد مع الام وازيد ت | ام | او هو انا لم | نلو |
| س | سبيلا الى اخر ا | ج | نصيب للام الاب مع وجوده ما ولد الام فقد | دت | له اربعة حجا | ب |
| ا | لاب والجد والولد | واقام | الكل ولد الابن مقامه فهو يحجب | بهؤلاء الا | ربعة ولا يتصل | ل |
| ب | ولد الاب والام | مدة | مع ثلاثة الابن وابنه والاب ويحجب | ولدا | لاب هذه الثلاثة | |
| ع | على ما وصفت لك | ثم | يحجبه الاخ من الاب والام ايضا | و | اذا استكمل هؤلا | |
| ا | لبنات الثلثين | رجع | بنات الابن بلا شئ الا ان وجد | هذا | ومعهن ذكر وهو | |
| م | مثلهن في الرتبة او اسفل | منها | فانه يعصبهن للذكر مثل الانثيين اذ اخذ | دينا د | امن الارث في | |
| ت | تاخذ نصفه وكذلك | سا | ئر الاخوات من الاب مع الاخوات من | الا | بوين لا يرثن ابد | ا |
| ح | حتى يكون لهن اخ وا | لما | لكون للفروض اذا زادت فروضهم | دبعا | او ثمنا مثلا على الا صل | |
| ر | رجعت السهام عائلة | وفي | زوج وام واخت من اب وام تقول | فان | للزوج النصف ويعطي | |
| ك | كذلك الاخت | سعة | الاخوات وللام الثلث فتعال الفريضة و | كان | السهام ثمانية | |
| و | واخذت الام ثلثا عائلا | اثنين | وللزوج نصفا عائلا ثلاثة وللاخت مثله و | ا | لله اعلم باب العصبة و | كا نت |
| ا | العصبة فيما ذكر | و | اكل ذكر ليس بينه وبين الميت انثى وا | ولى الكلام | ان الابن كما | دو |
| سا | سابق ثم ابنه وان سفل | ستين | درجة ثم الاب ثم الجد بلا | انكاد | اذ لم يكن اخ هنا | ك |
| ك | كذلك الاخ بعده و | تو | لى الام بعد الاخ ابنه وان سفل ثم | احريث | العم بعده ثم نقو | ل |
| ا | ابنه بعده ثم او | فيت | بعم الاب ثم ابنه وان سفل ثم | مابعد | ه على هذه الصفة | |
| ت | تعطى الادنى فالادنى | والد | انى من هؤلاء اذا انفرد اخذ جميع المال | الا | ان زاحمه احد | ا |
| م | من ذوي الفروض امر | ت | ان يعطيهم فروضهم واخذ ما بقي فان استوى | على | الدرجة منهما اثنا | ن |
| ا | اعطى ما ناسبه من | جهة الا | بوين منهما ولا يعصب احدا فيه | ما | خلا الابن وان سفل | بلى |
| ي | يعصب الاخ اخته وما منهم ا | صلا | من يشاركه اهل فرضه الا ما | كان | من المشترك فانها | |
| ل | لم تشرك الا للاصلا | ح | وهي زوج وام وابنان من ولد الام واخ | من | الاب والام ا | ذ |
| ي | يكون للزوج النصف | ثم | للام السدس وبقي الثلث وهو لولد | الا | م يشاركهم فيما | |

هد

والتنديل وبو زيادة حروف بماكن

ما خذ البني ولوي اغرف من حوض غير الصف واذا

٢١

باب الجد والاخوة

كتاب النكاح

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هـ | ه وفرضهم العصبة اذا كانوا | خا | للهالك من ابوين ويعطى الخنثى ما | ع | فناه حقه يقينا و | ما |
| و | وقع فيه التردد فلا يخا | لف | انه يوقف فان عدم العصبة فالمعتق كما في ابو | اب | الولاء فان فقدوا ا | خذ |
| ا | الى بيت المال | و | والله اعلم باب الجد | والا | خوة اذا حصا | لت |
| ت | تركه واجتمع الجد وو | لد | الاب والام او ولد الاب فهو كاحدهم | على | ان لا يزيد الثلث عن | |
| ذ | ذلك هو فيما ذكرو | ه المظفر | بالثلث على كل حال وقد يعد عليه في | البد | اية من لا يرث وذلك الشي | |
| ي | يكون اذا اجتمع جد | و | اخ من اب وام واخ من اب اعطي من الما | ل مثل | احدهم وابن الابن بعد | |
| ي | يرده لاخيه وانما | قصد عد | ه على الجد وهذه المسألة تعرف في | قولهم | بمسئلة المعادة و | لو |
| ل | لحق بهم من يكو | ن | له فرض فللجد الاغبط من المقاسمة وثلث | ما | يبقى وسدس كل الشي | |
| و | وما بقي فللاخوة | ثم | اذا لم يبق شئ سقطوا ولا يفرض للاخت فيما | اتلفي | علمه مع الجد فيما سوا | |
| هـ | هذه المسألة وتسمى ا | لا | كدرية وهي زوج وام واخت وجد فللزوج و الاخت لكل | واحد | منهما نصف المبلغ | |
| و | والجد ايضا | حقه | السدس وللام الثلث فتعول الى تسعة | الا | ان حقها لا يصرف | |
| ز | ز ايدا على الجد بل المنسوب | اليها | من النصف يضاف الى حق الجد ويقسم بينهما للذكر مثل | الا | نثيين ويقسم فيمن | |
| ي | يبقى منها | فو | جه صحتها من سبعة وعشرين للزوج تسعة وللام | م | ستة وللاخت | نحو |
| ا | اربعة ويكون ا | لى | الجد ثمانية كتاب النكاح بكره ان يتزوج | وما | له فيه غر | ض |
| د | داع ولا يستحب الاعراض | عنه | عند الحاجة اليه ويستحب ان يتزوج | ذات | الحسنات ونسو | غ |
| هـ | هذا العقد بنفسك | و | توكيل يجوز ان يقبل لنفسه ويستحب لكل | احدا | ن يطلب امرأة تحو | ز |
| ح | حسنا ودينا واذا | دخلها | في عقده اكتفى بها والصغير اذا انتصب | الا | ب او الجد تزويجه | في |
| د | دأيه زوجه من | الملك | الذكر والمجنون ان كان يفيق فلا يمكن | اباه | ان يعقد له ويباشر | |
| ف | في الاقامة فان دامت | المجاهد | ة على حاله ولم يفق زوجه الاب او الحاكم | وما | للسفيه ان يتزوج اذ | ا |
| سا | سال بل يزوجه الولي | فا | ن اذن له في العقد جاز فان عين له ا | م | رأة تعينت ولا تخ | لص |
| ا | الولي من الطلاق الا اذا | قام | له سرية فان اردت تزويج عبدك صغير حر | دت | عقده بنفسك بخلا | ف |
| ك | كبير فانه يعقد بالاذن و | ا | لمرأة غير المحتاجة للنكاح بكره ان يتزوج | باحد | فان احتاجت ولا غر | و |
| ف | فيدب لها والمرأة من الا | ياما | اذا دعت الى كفو وجب على | الا | ولياء تزويجها | اذا |

علا القيد المجموع والتزفيل ما

[illegible]

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ع | قد الاب او الجد بالبكر | وعاجل | م غير بلتيذا نها جاز لكن ان كانت | آبية | للزوج كره و | ان |
| ل | م تكن بكرا لم تنكح | ا | لا باذنها بعد البلوغ ويزوج امنه اجبارا | واذا | طلبت النكاح فالاسعا | ف |
| ي | ستحب ولا يجب و | لا | يصح نكاح المرأة الابولي والعصبة احق و | [illegible] | الامة قولها ان تزوجت | |
| ال | سيد ويزوج امة المرأة الو | جل | الذي يزوجها واولى العصبات الذي لا يبعد | تجبر | ه الاب ثم الجد لا يزا | حم |
| و | احد منهما | وتوفي | بعدهما بالاخ ثم ابنه على ترتيب الارث | وسوى | بعضهم بين اخوين هذ | ا |
| ت | كون اخوة للابوين و | اخر | للاب والصحيح خلافه واذا استوى اثنان | وجا | ز احدهما فضلا لم يستحق | |
| د | ون الاخر بل لو كانوا | جما | عة وعقد ادناهم صح ولكن لا تنعقد شروط | في | هي الحرية والبلوغ | بل |
| ال | عقل وان لا يكون ر | دى | النظر بخلل او سرم وذكروا في الفاسق | خلاف | ولا يضر العمى وق | الوا |
| م | تى اختل الولي كان | الاولى | من بعده ولا ينتقل بالغيبة الى الا | خفض | درجة وكذا | لو |
| ج | ر اعضل بل حكم | سنة | الله ان ينتقل الى السلطان و | المشهور | منذ لك الغائب اذ | ا |
| م | ا وكل فوكيله اولى وان | ار | اد ان يوكل استاذن في النكاح الا المجبر | من | الاب والجد والسيد ا | يضا |
| و | ليس للولي ان تبا | بع | الايجاب والقبول لنفسه ولا الوكيل والصحيح | وقيل | ان للجد ان يوجب ويقبل | |
| ع | قد بنت ابنه | و | ابن ابنه الصغيرين وفي غير الكفو يشترط رضا من | قام | له حق الولاية منهم | |
| و | رضاها ولو كان | ستين | مهر مثلها فرضيت بعشرة ولم يرض | الاولياء | بذلك لم | يكن |
| ا | متناعهم جائزا | وحمل | القول في الكفاءة على المساواة لا | غير | نسبا ودينا وحرية واعما | لا |
| لا | العجمي بالنسبة | الى | العربية كفو ولا غير القرشي و | الهاشمي | كفوا لهما ولا غير | |
| ت | قي وحر كفوا لمن | تعز | ى اليه الحرية والتقوى ولا الحائك للتاجر | وسوى | بين معسر وموسر ولو | |
| د | بط نكاحها بغير كفو | ودفن | عليها امرأة بطل النكاح ويجب | شاهد | ان ويشترط ان تلتقى | |
| ف | يهما الحرية ولابد | في | الشاهدين من ذكورة وعدالة ويكفي مستورها | وحا | سه السمع والبصر لا | |
| ي | كفي عادمها ولو وقف | مد | ة وبان فسق الشاهدين بان العقد لا | شئ | ويشترط هنا ل | كر قوله |
| ل | لزوج زوجتك او نكحتك و | د | سم القبول فيقول تزوجت او نكحت او قبلت اذا | زيد | بعده نكاحها صح | |
| م | نه ولا يكلف اعجمي مار | سته | وتجزئه العجمية وكذا عربي في الاصح ويجب | و | تسليمها يحملها الى حيث يريد | |
| ا | ن طاقة الاستمتاع و | جعل | لها اذا سئلت مهلة ثلاثة على | خلا | ف فيه والامة تستثنا | |

اذ قد سلكت



اذا ادعى … [illegible]

الاولو … [illegible]

باب ما يحرم من النكاح

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | ذ قد سلكت | الله | رقها فتسلم ليلا ويستحب ان يأخذ | الرجل | بناصيتها اول | ما |
| ز | ارته دخلت في | جنا | بر ويقول بارك الله لكل منا في صاحبه | واما | السفر فله التنف | ل |
| و | ان سفر مخوف الطرقا | ت | ولا يطؤها حائضا ويخيرها ان اتى | بـ | ها الاستمتاع متعذ | ر |
| ا | لانه كغسل الحيض و | عد | م السكر باب ما يحرم من النكاح لا | خلا | ف ان محرما ومؤبد | ا |
| و | ان بالكفر بعدا | ن | اسلم لا يصح نكاحها وكذا الخنثى المشكل | وما عدا | ذلك المحارم وهو | |
| عل | ما قرأت و | ماوا | في التنزيل الامهات وان علون والبنات | و | ان سفلن ويحرمون | |
| ال | اخوات وملحق بهن بولاد | ة ثم | بنات الاخوة وان سفلن والعمات والخالات و | ليس | هذا يختص بالمشى | في |
| و | تيرة الولادة فقط بل | اتفقوا | الكل على ان هؤلاء يحرمن بالرضاع | ولا | يحل امهات امرأته وا | ما |
| د | خول الزوج بالا | هل | اعني المرأة فيحرم عليه بناتها ومن | يكون | في فروعها ابدا والخط | ر |
| ال | مجمل في امهاتها مع | العقد | وكذا الموطوءة بملك او شبهة | فانك | تجتنب امهاتها كما ر | ووا |
| و | بناتها وان سفلن | والحل | باق في بنات من بوشرت بشهوة | في | مادون الفرج ويجب | |
| ع | ليه ان يجتنب العقد | على | زوجات ابائه وابنائه وان سفلوا ثم | الموجب | للتحريم قد لا يبقى | |
| ف | مثل اخت امرأة | اقا | مت في نكاحك وعمتها وخالتها يحرمن | وا | ذا فارقتها حللن | |
| اخ | او اعلم ان الا | مة | لا تحل بالملك على الاطلاق بل الحل ا | لمنفي | في النكاح على المبا | شر |
| هـ | و منفي فيمن ملك من قريبه و | ولده | المحرم احدا اعني ولد القريب واما ولده فهو | ينصب | اليه العتق اذ | ا |
| س | باه او تملكه بنفس | الملك | ولا يحل للحر نكاح الامة | على | الاطلاق | بل |
| بـ | خوف العنت والعجز عن | الا | صداق لحرة وان تكون مسلمة و | كل | ذلك ليس فيه عند | نا |
| خـ | لاف والتعفف له ا | فضل | ويحرم عليه نكاح جارية الابن و | حار | يصير لاحد من النا | س |
| في | زوجته الامة ملك | ا | نفسخ نكاحها وكذا الحرة تحت عبد مثلا | يقول | اذا ملكته لم يبـ | ق |
| فـ | يما بينهما نكاح فاذا | لعبا | د لا ينكحون من يملكهم ويحرم عليه من | قام | بلعانها ا | و |
| و | صل طلاقها ثلاثا والنا | س | مجمعون على تحريم المعتدة من غيره من | الناس | ويحرم نكاح المحرمة ثم | |
| ا | كثر من اربع حرام | وكان | له من ملك اليمين ما شاء | ما | العقد فلا تحل الاربع | |
| لـ | ه بل امرأتان و | من | المحرم نكاح الشغار والمتعة ونكاح المحلل وفيه | خلا | ف وقد خص | ص |

وازيد على النسب
العفيف

واذا النعم ما قبل الولو
وكانت اصلية جاز

باب الخيار فى النكاح

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| تحرى كافة اهل | العلم | بما اذا شرط فى العقد ويبطل اذا | زيد | فيه شرط خيار ولو |
| سادمة ماينا فى العقد | و | شرطته مثل انه لا يطاؤها واذا ناها | اوما | يطاؤها الا وبانت او |
| بان انه لا نكاح بطل و | الا | يم المعتدة يحرم التصريح بخطبتها من | عدا | زوجها الا اذا طلقها |
| يومئذ ثلاثا وليس من الا | دب | ان يزاحم غيره فى خطبة امرأة فان خطب | زيد | اولا واجيب فحينئذ |
| غيره يأثم بخطبتها | و | نكاحها باب الخيار فى النكاح اذا | و | جد احد الزوجين جنونا |
| من الاخر او كان له | الفضل | عليه بالعافية من الجذام والبرص و | ليس | به مثله كان |
| الخيار له وكذا ان كان | بعزة | صاحبه فى الاصح ويجو | ز | له الفسخ اذا تعرض |
| زوجته رتقا او قرنا | ثم | لها الخيار اذا كان عنينا او مجنونا ولا | يد | وم امد الخيار ثم |
| يجوز لهما الفسخ | باء | لعيب الحادث ايضا ثم انا نظر | اولا | ان وقع الفسخ قبل |
| دخوله ووطئ سقط المهر ولا | يعو | د لها منه شئ وان كان بعده فقد | يكون | العيب حادثا فاذا |
| علم حدوثه بعد وطئ فسخ | وتنو | المسمى وان كان قبل وطئها وبعد | ز | واجها او مقارنا قالوا |
| لزم مهر المثل انه حل فان كان | ام | له ولاية اجبار فليس له ان | يد | خل العقد على من هو |
| يوصف بالعيوب المذكور | ة و | للاولياء الخيار بجنون وجذام وبرص او | او | جد مقارنا للعقد ولو |
| ارادوا الفسخ بها و | كانت | حادثة لم تجبر المرأة عليه واذا | ماقا | لت انه عنين واقر بذلك |
| للحاكم او اقامت بينة على | الا | قرار منه بذلك او نكل فحلفت لزم | القو | ل بان يوجل بعدها |
| سنة فاذا انقضت ا | طرف | السنة فلها الفسخ واذا ادعته لزم | م ما | ذكروه من الرفع الى الحاكم وان |
| باشر بالة وهى | مضطرب | بعد الانتشار كفاه ان يكون مد | خلا | حشفته فان كذبت |
| بكونه قد وطئها | وكان | يدعيه فالقول قوله وان تزوجت | زيدا | على انه حر الاصل |
| ا وعلى انه من | ولد | قريش فبان خلافه صح فى الاصح | واذا | شاءت فسخت وهى |
| لو شرطت الحرية او | مكا | نا من النسب كان الحكم كذلك فان | كان | الفسخ بعد دخوله |
| خرجت بمهر المثل والقا | ئل | انه يرجع على من غره ضعيف و | بالا | جماع انه اذا جا |
| فى وطئ الامة | يومئذ | بولد لزمه قيمته ويرجع على الغار و | ان | خرجت على واميلر |
| فى صفتها بما شرطت | استولى | عليها ولا خيار فى الاصح ثم | يكون | للامة الخيار ثابتا |





وانحذه حروف ساكن
والقطع حذف احرف

ان يكون دوبا فى مثل
تخفيف عدى وهدو
وجار

باب من تحته كتابية

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| فى ما اذا اعتقت وهى | على | نكاح عبد وخيارها فورا فى الاصح | فان | ادعت الجهل يكون |
| الخيار ثابتا صدقت بيمينها وا | حر | زت بالفسخ نفسها ولا تحتاج اذا | شاء | ت الفسخ الى الحاكم و يكون |
| خيرتم مهرها المفرو | ض | انه يسقط ان دفع العقد بالفسخ قبل الدخول وان | وقع | بعد الدخول فالمهر |
| راجع الى مهر المثل | ومو | د هذا اذا كان العتق قبل الوطئ | وان | تقدم الوطئ فالمروى |
| هو وجوب المسمى | و | الله اعلم باب من تحته كتابية اذا | شاء | واسلم فاختارت كفرها |
| حلت له ودامت فى ا | سر | ه وان كانت مجوسية او مشركة دفع وثنية و | نصب | فان كان قبل الدخول انصرف |
| د اشدا وفرق بينهما بلا تو | ددو | ان كان اسلامه بعد الدخول فانا | نقول | ان اسلمت هى |
| فى العدة بان ان النكاح | غير | منقطع والا [illegible] الفرقة من الاسلام واذا كان | الا | سلام منها فالحكم |
| سبيله واحد وبعد | ها | ذلك وطئها فى العدة وفرقا فعليه | ان | يعطيها مهر المثل |
| اما اذا وطئها | اقبل ثم | الاخر الى الاسلام فى العدة فانه لا | يكون | لها مهر ولو كان تحت |
| كافر خمس فاسلم فان | الملك | فى نكاح واحدة باطل فان اسلمن معه | ز | جرناه عنهن حتى يصح |
| نفسه لترك واحدة او | الا | نفاق عليهن يجب حتى يأخذ من ير | يد | فان مات ولم يعين فى |
| واحدة فليس لواحدة | فصل | على الاخرى فيوقف ميراثهن حتى يصطلحن | والا | م والبنت اذا التف |
| الجميع فى عقد نكاحه | وجر | ى منه وطئهما جميعا ثم المتاخر منهما و | ان | لم يطأ وهما يقرع |
| لبنت وحدها وكذا اذا | د | خل بالبنت فقط وان دخل بالام فلا | يكون | الا تحريمها وورد |
| قول ان الامة تصير | اليه | وحدها وان اسلم وتحته اربع اماء او | زيدا | سلمن معه وهو فى |
| طول ممن لا يحل له | الكتا | ب نكاح الاماء انفسخ نكاحهن | واذا | كان ممن لم يحرموه |
| عليه لزمه بلا ر | يب | ان يختار واحدة وان كان بينهن حرة | تشت | هانفسه وحينئذ قد |
| حرم عليه للاماء وان بقيت | على | كفرها الحرة ولم الاماء وقف امرهن | بلا | شك على اسلامها فلو |
| ذهبت الى الاسلام فهى | معد | مة عليهن ان اسلمت فى العدة وان غلب | سيما | الشقاوة عليها فهو |
| فى اختيار الامة على الشرائط التى | قدمتها | باق فلو اسلم موسر ثم اعسر | فان | اعسر ثم اسلمن قبل خروج |
| العدة لم يمنعه ذلك من | الا | ختيار واذا اسلما على نكاح شرط فيه الفسخ متى | شاء | او نكاح متعة يبقا |
| حينا فرق بينهما ا | مير | المؤمنين وان تزوجها معتدة او بالخيار ثلاثا فى | رفع | النكاح فاسلم ولم يجاوز |

الساكن ... العربية الجموع

ان يكون وصلا وكذلك الواو في ... بعد ... وبه

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| د | سم العدة والثالث | فخر | وجها وتفريق بينهما واجب | وان | اسلما بعد انقضاء مدته | ما |
| ف | يقران فان قهرها وهما حربيان | والدين | الذي كانا عليه بجره نكاحا | شاء | تا وابتا قرا عليه ا | ن |
| ا | رتد مسلم او ارتدت | ز | وجة او كلاهما قبل الدخول فرق بينهما وان | جر | ت بعد الدخول ف | يكون |
| ل | هما مدة العدة لا ز | ياد | ة ان اسلما في العدة اقرا والا حكمنا | من ذلك | الوقت بالفرقة ولكا | فر لو |
| س | لك دينا غير دينه اخذ | وقتل | او يدخل في الاسلام ولو | بقول | انا ارجع الى ا | صل |
| ا | لذي انا عليه مثلا و | اصحا | بى لم يقبل منه باب الصداق | جا | زوا النكاح بلا | ٩ |
| ك | ثير ولا قليل والاستحبا | ب | ان ينكح بصداق فان نكح بصداق علا | نى | وصداق سرى فهـ | و |
| ن | افذ بما عقد اولا ولـ | ابن | الصغير لا يزوجه باكثر من مهر المثل و | القو | ل في الصغيرة | كذلك |
| منع | الولي من ا | مكا | ن الزوج نكاحا بدون مهر المثل فان قد | م | الولي وخالف | قالوا |
| ا | وجبنا مهر المثل ولا قا | ئل | بان السفيه ينكح باكثر من مهر المثل و | لا | العبد ايضا وهو | في |
| خر | اجه وتجارته ا | وكا | الذمة مشغولة ان عدمهما فالمهر يتعلق بهؤ | لاء سيما | اذا تزوج فاسدا والصدا | ق |
| ا | نما يتعلق بذمته لكن بعد | المواقعة | لا بكسبه وتجارته وفي قول يتعلق برقبته لا | زيد | من ذلك وفي | قول |
| ل | ها علة ما لها | في | النكاح الصحيح ومهر المثل يعتبر بنساء العصبات | ولاسيما | من يساويها هنا | لك |
| و | ليس بجعل مهر | القحمة | المسنة مثل ابنة الفتية ومن كانت ا | زيد | في جمال ومال و | شي |
| تخ | طى به اعتبر ومن لا | يو | جد لها عصبة او كانوا وليس لهم ذوات | التمييز | منهم احد شا | ع |
| د | فع مهر مثل نساء القو | م | الاقربين اليها ثم نساء البلد وحكمه | وعلامته | ان ما جا | ز |
| ا | ن يكون ثمنا في | الثا | بت من البيع جاز ان يكون صداقا و | تستقر لها | الملك لو مات ا | و |
| ل | و وطئها ولو قالت لا ترا | نى | الابا المهر وكان لم يطأها جاز وان | وا | قعها سقط الامتناع و | لو |
| م | هرها عينا فتلفت ا | و | استحقت او ردتها بعيب طولبت بالعوض و | ليا | خذه الحاكم بمهر مثل فلو | تى |
| ج | ملة المسمى قدر | الحزن | ومهر المثل الف لزم الالف | و | ان نسبت للفرقة بارتدا | د |
| و | نحوه قبل الدخول سقط | من | المهر حقها اما اذا كانت | الهمزة | بالفرقة له بان او | قع |
| ع | ليها الطلاق او التزم | سنة | الاسلام وارتد رجع بنصف الصداق | المرو | ف الزيادة المنفصلة | لو |
| و | قعت زيادة فالنصف ولا | خمس | له منها اما المتصلة كزيادة او صا | فه | بالسمن ونحوه في | ججور فيه |

باب الصداق

الخيار

واسكان ما بقى العجز ساكن ان يجلو حرف ...

العجبان كلاهما وكون العاو وصلا الترى

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | لخيار للمرأة بين تسليمه ا | و | تسليم قيمته قبل الزيادة وان نقص | فا | لزوج بالخيار ولو انه | ا |
| س | لمته لهبته وهو قدر | ستين | ثم طلقها كان الرجوع بثلاثين ولو فرض | لها | صداقا في العقد او بعده فابر | ا |
| ك | افلها ووليها منه لم يصح | و | لو فرضت بضعها فلها المطالبة بالفرض وا | لا | صداق فان فرض لها حصـ | ل |
| ا | لفرض كالمسمى فان فرض | سبعمائة | وطلق قبل الدخول فالذي هو لا | زمه | ثلثمائة وخمسون و | لو |
| ن | اهزها فلم يشرع | في | الفرض حتى وطئها وجب مهرها واللازم | له | اذا طلق مثلا زو | جه |
| ما | فرض مهرها ولا نال | تما | عا منها المتعة قطعا ووجب مهر مثل | في | نكاح بمهر فاسد وطلقه | ا |
| ب | غير دخول فانها تو | دى | نصفه وان جعل عتقها صداقها فلها | كمثل | وله عليها ضما | ن |
| ق | يمتها واذا اعسر بالمهر | فهرجه | او وقف فسخت قبل الدخول فقط فالقول | قولها | ان ادعت الوطئ ولـ | كل |
| ا | ن يحلف اذا تنازعا | و | اختلفا في قدر المسمى ويجريان على | القاعدة | في التحالف ثم يردهما | |
| لـ | مهر المثل ولا مهر | لد | اخلة في الزنا طوعا باب المتعة | وتجب | اذا طلقت منه | |
| ق | بل الفرض ولم ينل | مكا | نحتها بالجماع قد فكونا انه يلزمه المتعة لها | وما | لمطلقة قبل الدخول لز | م |
| صا | حبها نصف المهر نا | ئل | عن المتعة واما بعد المسمى فان | اشبه | القولين وجوبها | |
| د | فقابها وان تسبب | الى | الفراق بردة ونحوها سقطت عنه | ذلك | ويستحب شيء وهو | كون |
| ا | لمتعة ثلاثين درهما وان | منعه | عنها فهو افضل وان تشاحا فيها | و | تنازعا فالحاكم يقدرها | |
| ن | ظرا في حالهما بما را | ه ومتوى | ظنه عليه باب الولايم اللهو | الهز | محرم والنثر قا | لوا |
| يـ | ستحب تركه والوليمة في | ا | لعرس سنة وقيل واجبة والاجابة لمن يدعو | نحو | ها فرض عين فلـ | و |
| حـ | صلها فلتكن من خالص | الملك | والاجابة في اليوم الثاني مستحبة وفيما | سوا | ه تكره والصائم اذا | وصل |
| ذ | كروا فيه ان | الافضل | ان يفطر ان كان تطوعا وان كان | دا | خل البيت منكر وما | |
| فـ | ي طاقته قدرة | على | ازالته لم يحضر باب عشرة النسا | و | الزوجات يجب ان لا يكونا | |
| حر | بابل يتعاشران بالمعروف | سائر | الاحوال ولا يوثر شريفة على دينة ولا | بيضاء | على سودا في القسم وكذ | لك |
| فـ | ي المسكن ولا يجمع في | اقطار | ه بين المرأتين الا برضاهما ولا يطأ وأيهما | وا | لاخرى حاضرة وليتبع ا | نو |
| سـ | نة النبي في القسم فان | اليمن | في اتباعها ولا يبدأ بواحدة الا بقرعة و | ليا | خذ منهن ذوات العدد والضعـ | ف |
| ا | لحائض وغيرها قسمها | وبنى | بالجديدة البكر سبعا ولا يقضي والثيب | نحو | ذلك ويقضي او يقيم | في |

باب المتعة

باب الولائم

باب عشرة النسا

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كـ نفها ثلاثا ولا يجب | في | ذلك قضأ ولا يريدون الوطئ في | قولهم | تجب المساواة بل ان | ا |
| نـ قول المساواة في | هذا | مستحبة ويقضي ان سافر بأذنه لحاجة | احدى | لشانه فهذا | شعاع |
| من سلمت نفسها و | العا | زمة للسفر في حاجتها يسقط حقها | و | اذا امتنعت من ارتشا | ا |
| ا لسفر صحبته لم يلز | م | القسم لها ويحرم ان سافر بامرأة دون | اخرى | الا بقرعة فان فعـ | ل |
| خو ج من الاثم فقضاء | المدا | ة بصواحبها ومع القرعة لا يقضي | وما | لها ان تـ | فصح |
| الـ قول بهبة حقها الجا | ر | ى من القسم لضرتها الا برضاه واذ | ا | رضى فوهبت لها | ا |
| سـ سهما ملكت ريا | ستة | الرجوع متى شاءت ودخول على الاخرى نهارا لحاجة | شبه | بالجواز ويحر | م |
| بـ غير حاجة وان قصد | الفضيلة | فليساوي بينهما في الدخول ولا يجوز | ذلك | ليلا الا | من |
| بـ عد ضرورة وان اطال | في | مكثه قضى ليلا لا نهارا او يقضي | وقدجاء | نهارا لغير حاجة هنا | ك |
| ا ما الامة فلا | تعز | ى اليها حقوق في القسم وللنشوز امارا | ت | اسماعه المكروه وكونها | |
| لا تخف الا فراشه | وفي | هذا يعظها فان نشزت هجرها وضربها ضربا | بلا | تبريح ولا ضر | د |
| خفيفا وهو اذا ترجى د | سنة | في منع حقها اكرهه القاضي فان | علا | شره غرره فلو | |
| ا شتد الشقاق واندر | ست | اثار الصلح بعث الحاكم حكما من قو | مه | وحكما من قومها | حتى |
| يضعا الحق موضعه | و | يفعلا بالمصلحة وهما وكيلان لهما على الصحيح | وتدرك | المصلحة بان يرضا | |
| ا لزوجان بحكمهما في الد | ستين | الصلح والطلاق وفي بذل العوض و | با | لقبول باب الخلع لا يخفا | |
| و جه صحته اذا | خزع | ممن يصح عبادته وهو مكروه وجرى | السماع | باباحة عند خوف احدهما | |
| ا لعجز عما يستحق | عليه | الاخر او كان قد علق الطلاق ثلاثا على | مثل | دخول الدار فان خالعها | |
| نفعه وتخلص وكان | المظفر | ببقاء الزوجية عند الدخول ويخالع السفيه والعبد | الا | ان المال في هذا | |
| يسلم الى الولي والسيد | ودخل | في ملك السيد وخلع السفيه لا معا | رض | في القول ببطلانه وما | |
| كان من الامة فلا | حر | ج بلا اذن مولاها تعلق بكسبها | و | تجارتها فان فقدا فمحـ | ن |
| نوجبه بذمتها وان لم ير | ض | مولاها تعلق بذمتها واذا حصلت | السما | حة من الولي وعر | ض |
| ما له وخلع الصغيرة | ونام | ما جاز اما من مالها فلا وليس للاب | و | غيره ان يخلع حر | م |
| ا لطفل وتجوز مخالعته للمرأ | ة اما | مع نفسها او مع اجنبي ويصح خلع | الر | جل بلفظ الطلاق و ا | ما |

بلفظ

باب الخلع

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بـ لفظ الخلع والمفادات فقد جز | م | الاكثرون بانه صريح فان جرى بلا امام يذهب الى | باح | ولزم مهر مثل ومطلـ | ق |
| قـ ال طلقتك وعليك الف | الز | مناه الطلاق بلا الف وان قبلت | واليد | له في الرجعة ولو ذهـ | ب |
| يـ طلقها فقال وهو يريد | يد | ها انت طالق بالف فقبلت بانت | و | لزمها الالف وان قا | ل |
| ا ن ضمنت لي الفا تؤد | ير | الي فانت طالق فضمنت واجابت | الدا | عي فورا بانت ولزمـ | ها |
| لـ ه الالف الذي ضمنته | ثم | لو قال متى ضمنت لي او متى اعطيتني د | ر | هما فانت طالق فنقـ | ول |
| حـ صوله موجب للطلاق | عاد | ت بالجواب فورا او على التراخي | و | ما جاز صداقا كما تقد | م |
| ذ كره جاز قبوله عوضا | من | المخالع في الخلع وان ذكر | الد | افع عوضا ولم | يكن |
| فا سدا لم يلزمه | غير | المسمى وبانت وان كان فاسدا فكما | لو | كان صحيحا في ا | لاصل |
| سـ بيلها البينونة الا | ان | المسمى يبطل ويرجع الى مهر المثل | و | لو قال متى اعطيتني يوما | |
| قبـ اً فانت طالق ولم | يقابل | بوضعه فاعطته قبأ تملكه طلقت منه | الكا | فة واستحق مهر المثـ | ل |
| ا ما القبا فلا يملكه | وفي | ما اذا وصفه بصفة السلم المعروف في النا | س | يملكه والعيب ان | لم يكن |
| طـ يبا به ردده و | عا | د الى مهر المثل وان خالعها بدرع على انه هر | و | ى فخرج مرويا | |
| ا وجبنا البينونة ولز | م | الخيار بين الرد والامساك وان خرج | الدرع | كتانا بانت وجعـ | ل |
| لـ ه مهر المثل واذ | ا | قالت المرأة طلقني ثلاثا بالف فطلقها | و | احدة استحق ثلثه واذ | ا |
| سـ الت منه الطلاق با | حدى وسبعين | فطلق بخمسين لزمها خمسون و | الفر | ض على من هو | |
| بـ الخلع وكيلها ان يمتثل فان | جا | وزما اذنت فيه على ان الزائد من ماله فلا | س | وان لم تنسب اليها الزيادة والا | صل |
| بـ انت بمهر مثل سواء كان زيادة يتغا | بن بمكا | سب الناس بمثلها ام لا وان اطلق | و | جبت الزيادة عليه دونها | |
| ا ما خلع المريض فلا قا | ئل | بانه من الثلث وان خالعت في ادتها | النفر | بالمرض فحيـ | ث |
| لـ م يزد على مهر المثل ا | و | جبناه من رأس المال وان جا | و | زته فالزيادة من الثلث واذا | ثم |
| خـ لاف بين الزوجين في | ابر | ام من صداق او بدل على طلاق سو | الحر | ة والامة جعلنا | |
| فـ ي انكاره القول قبولها والدا | هيم | المبذولة اذا اختلفا في حسا | ب | قدرها او وصفها او كم قبـ | ل |
| يـ طلقها طلقات فان المرجع | ا | لى الحالف كتاب الطلاق | وا | لطلاق يمضـ | ى |
| فـ ي كل زوجة واما ا | لسيد | فلا يطلق امته وكذا الصبي وا | الطرق | الى تطليق امرأته | لا |

الذي ذبيس من اخره ونديجوع والعمل

كقول العظم ربنيبه فاقصدون وبا احطانا كريمة

فان حركت اليا فانها يكون روبا ولا يجوز ان يكون وصلا

والقطع فان شئت السبب وان كان

العصاسان

و صول اليها وشرطه العقل وحصل طلاق السكران ثم من هدد بالسيف والعصا لا يقع طلاقه فانا
ا كره بحق فلا خلاف بينهم في نفوذه ويملك الحر ثلاث تطليقات والر قيق تطليقتين ويثبت
لـ لوكيل الخيار بين المبادرة وبين التاخير ولو قال طلقي نفسك فطلقت قبل ان تر وح من مكانها فورا صح
قطعا وان كان ما ولاه يقتضي التاخير كقوله طلقي نفسك اي و قت شئت جاز التاخير
فا ما الطلاق فان الجهات له ثلث الاول طلاق السنة وجواب السو ال عنه ان يترك
سبيلها طاهر قبل الجماع ثم حر ام وهو طلاق البدعة كطلاق الحائض وطلاق ق طاهر وقد جومعت
فا لوا وبالعوض اباحه الاصحا ب فا ما المباح فطلاق الايسة والصغيرة والحا مل وحرم في البدعة لما
طالب فيه العدة فجبر ما ا نكسر ان يراجعها ويقع الطلاق بالصريح نو ى او لم ينو مثل
سراح وطلاق وفراق و الولا ية في الكناية النية فنشرط والكنايا ت انت خلية والحقي
باهلك وقد لزمتك العدة وقبل نكاحك وانت بتة وباين وكالميتة وكل مايقارب هذا فانه
به لاحق وليس حكم القاضي بالطلاق طلاق وان قال اختاري فان ذلك كناية فاذا اختارت ونو ا
الطلاق فورا صح و جما عة قالوا ما لم يفارق المجلس فلو نكرو يذكر انها ما اختار ت
ثبت قوله بيمينه ولو قا ل اختارت ولكن لم تنو فالقول قولها ويؤ خذ بيمينها ولو يكو ن
قوله طلقي نفسك فاجا الد عوة وقالت انت نفسي نويت طلقت فان ذكر المؤنث وقال انت طالق وذكر
يومئذ انه يريد ثوبها او ا ين ماذكر مما يمكن قبل منه وكذلك لو قال هو
لها انا منك طالق فان الشر ع يجعله كناية واما اذا قال اقعدي او الجماعات كثيرة وغيره من اشياء
و جودها لا يقتضي التعر يف بالفراق فلا يعد شيئا ولو قيل طلقت و قال نعم طلقت
ا ن يقضى عليه بالطلاق و قد قيل له الك زوجة فقال لا او كل جزء كبدها شعرها
م حمها اذا طلقه لزم الا مر بصحة الطلاق ولو قال ديك او شئ غيره كالعرق ونحوه من
ا لفضلات لم يقع لا جل ذلك طلاق **باب التعديد** اذا قال في قوله انت طالق اردت
ح صول ثلاث وقعت بخبر وجه بهذه الصيغة محتمل وان صرح بواحدة وارادبه لها ثلاثا فلا يكو ن
ذ لك واذا قال الد ارى بالحساب انت طالق واحدة في اثنين فا ن نوى موجب الحساب فهو
ا ثنتان وان لم ينو فواحدة وا ن ما قصد اتبع وان قصد المعية فثلاث ولو ان امراة لا يعرف الحساب قصد التخصيص ه

باب التعديد

لـ ها بموجبه طلقت واحدة لا زياد ة او طالق طلقة معها طلقة فثنتان ولو قال لها ثنتان انت طالق طلقة قبل
ذ لك طلقة او بعدها طلقة و جب طلقتان للموطوءة ولغيرها طلقة و منه لو قال لمدخول بها
يا زينب انت طالق انت طالق رجع اليه فان قصدا فواحدة والا فهو اثنان وغير الموطوءة بذ لك
ذ كروا انها تطلق و احدة فقط ولو قال طالق وطالق وطالق فانه يقع الثلاث ولو يقو ل
هـ ي طالق نصف طلقة طلقت ابدا العلماء طلقة ثم ثلاثة انصاف طلقة مو جبه طلقتان وكذا يجب
بـ قوله نصفي طلقتين و يا ني في نصف طلقتين طلقة لاغير ولو قال المؤ نث انت طالق الربع
من طلقة خمس طلقة سد س طلقة فطلقة ولو اتى بالواو ولم يكن الا ثلاثا ولو قال بعضهم
ا وقعت بنساء طلقة اتصل بمن معه طلقة طلقة ولو كان لنساؤه الحا صلات اربعا فر مي
خ مس طلقات بينهن وصل الى كل واحدة طلقتان وان قال انت طالق ملء جبين او ملء البيت
ر احت بطلقة وكذا ملء زبيد وملء الدنيا او اطول الطلاق ا و اعرضه وقول الفتي
هـ ي طلاق اكثر الطلاق فو اجبه ثلاث وكذا كل الطلاق وان قال الخذين لها انت طالق اولا فانه
و ضع باطل ومن و قع عليه عدد طلاق لم يرتفع كله و يرتفع بعضه بالاستثناء المعروف
تـ اتي به متصلا على العوا يد فان طلقها ثلاثا الا ثلاثا وسوا الجبين طلقت ثلاثا بخلاف ما
د ونه ولو قال لامرأته ر جل انت طالق ثلاثا الا اثنين طلقت واحدة والعد د المستثنى انما يقصد
ما يليه فاذا قال القر ين لها انت طالق اثنتين وواحدة الا واحدة فعند الاقدمين من العلماء طلقت
جـ ميع الثلاث او خمسا الا ثلاثا فاخذوا بظاهر اللفظ وقالوا تطلق اثنتين وكل شئ علقته من طلاق ا و
و صية او عتق او نذ رو غيره على مشيئة الله تعالى لم ينعقد منه شئ **باب الشرط** ما
عـ لق عليه الطلاق كما يأتي شر حه وقع بوقوعه فاذا قال شلا في ذلك انت طالق احسن ما
و جد من الطلاق واتمه وما اشبهه طلقت للسنة وان قال الطلاق البد عة او طلاق الخطا
ا واسمج الطلاق او ارذ له او اقبحه طلقت للبدعة ما لم ينو تغليظا و ان قال ثلاثا بتا تا
لـ لسنة نصفها وا لبدعة نصفها طلقت في الحال طلقتين و احدة تحصل في ثاني حا ل
صـ ادقت فيه وان قال كلها استو لى عليك قرء فانت طالق طلقة فانه تطلق في كل طهر
لا قية طلقة و لوا نها كانت حاملة لم تطلق كما يذكر ون سوى طلقة ثم

باب الشرط

لها

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ما | بعد حيضها وطهرها | على | الحمل شيئا واذا علقه بالحيض طلقت برؤيته | الا | ان يقول متى | |
| ما | حضت حيضة فقد | ز | عموا انها لا تطلق بالحيض الا بعد | الكر | في الطهر فلو حاضت وادعته | |
| | قبلها وانكر فالامر | بيد | ها والقول قولها وان قال لضرتي فرا | ش | ان حضتما وجب | |
| د | خول الطلاق عليكما | وجا | حيض احديهما لم تطلق قبل | و | جود حيض الاخرى وليس | |
| ذ | لك مما يقبل في | الا | ختلاف فيه قولهما بل قوله فلو لم يصدق | الا | واحدة طلقت المكذبة | |
| هـ | نا دون المصدقة ومبا | شرا | لطلاق اذا كان له اربع فقال في د | ست | واحدة منكن رأت الدم | |
| | بحيض فصواحبها طوالق فلا خلا | ف | ان القول قوله فان صدق واحدة كان | الفا | يزيا لزوجية هي | |
| من | دونهن وتطلق | عنود لك | كل مكذبة طلقة وان كان المصدقا | ت | اثنتين طلق كل من | |
| ا | لمكذبتين طلقتان | ولم يلد خلو | اعلى المصدقتين الا طلقة طلقة وكذ | الو | صدق ثلاثا في الدم | |
| خر | جت المكذبة مطلقة عند | هم | ثلاثا وكل مصدقة طلقتين وحا | صل | الامر انه لو صدق الكل | |
| هـ | نا طلقن ثلاثا ثلاثا | بل | لو اوجب طلاق امرأته ان كانت حاملا استبرأتها فاذا | علم | حملها طلقت في | |
| و | قت ايجابه فان | ثا | د عليها مدة الاستبراء فوطئها وولدت قبل | ان | تنقضي ستة اشهر من حين | |
| | تكلم به كان وقوعه | ور | ووالنزاذا قال ان كان حملك ذكرا او | جميع | ما في بطنك ذكرا | |
| د | خلت عليك طلقة | و | ان كان انثى فطلقتان فولدتهما قالو | الا | يكون الطلاق واقعا | |
| | من ذلك لكن عند | هم | لو قال ان ولدت ذكرا فطلقة او انثى فطلقتان فا | لفا | ها قدات بانثى وذكر | |
| | فان ولدتهما جميعا | في | دفعة واحدة طلقت ثلثا والا طلقت بمن ولد | ت | اولا وان قال اذ طلعت | |
| د | ابعة فهي طالق واعاد | الحار | فقال رابعة طالق او علقه فوجدت الصفة | التي | علق عليها ذلك | |
| و | قعت طلقتان | حتى | قالوا لو قال متى وقع طلاقي | على | امرأتي فهي مطلقة | |
| | قبله ثلثا فان الاكثرين | نفو | اوقوع الطلاق بعده عليها وفي بعضهم | او | قع المنجز ولم يلتفت عليهم | |
| و | كذلك لو يقول عند | هم | اي وقت لو اطلقك فانت طالق فمضى منه او | يل الا | نفاس قدر طلاقها | |
| ا | وجبناه ان لم يطلق | ثم | لو قال ان لم اطلقك فانت طالق فالنص الذي | سما | ذكره بين العلماء انها | |
| | لا تطلق الآن ثم | قالوا الى | انها تطلق عند موتهما او احدهما و | القا | ئدة ان متى في الاصل | |
| | من ظروف الزمان ومثلها | ا | يضا اذا بخلاف ان وان نظر اليها وقد عد | ب | فقال اذا لم تكوني | |

سادسا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | سادسا فانت طالق طلقة ومن | الجهات | للتعليق لو قال انت طالق في رمضان | قطع | بطلاقها في اوله وهو | |
| | طلوع هلاله ولو قالت | الشامية | طلقني فقال انت طالق في اليمن طلقت | الا | ان يقول اردت | اذا |
| و | صلت اليمن فيصدق بيمينه | و | اذا قال انت طالق اليوم مثلا | في | غد لم تطلق واذا | سكنت |
| د | بعاله ثم ان اهلها | ارسلوا | اليها بالخروج فقال ان خرجت وضيت | عشرة | اهلك وما اصدرت اذنا | |
| | منى فانت طالق فسمح | بالا | ذن سرا فخرجت ولم تعلم بالاذن لم تطلق واذا | اسما | الامر فقا | ل |
| ا | ن خالفت امر الا | مير | فانت طالق فخالفت نهيه لم تطلق | فا | ن قال مثلا ان بدأتك | في |
| ذ | النهار بكلام فانت طالق | فخر | جها بمثل قولها اني بدأتك بالكلام فعدى | الذي | املكه حر ثم يكلمها | |
| | هو او لا فلا يثبت في حكم | الدين | طلاقها ولا عتق العبد وعين المأذا او قفت | فيها | وهي تجري فناداها هو | |
| | با سمها وقال لها يا | ز | ينب وقفت في هذا الماء فانت طالق وان خرجت | فا | نت طالق فليس | |
| | شك في انها لا تطلق لجر | يا | نه وان قال من بشرتني منكن بقدوم | فلا | ن فهي طالق ولم يكن | |
| | طرا قدومه فبشرته بوو | د | ه كذبا لم تطلق وان قال من اخبرتني انه | وصل | فهي طالق ثم | |
| ر | وته كذبا طلقت لان | طريق | الاخبار يدخلها الكذب وان قال لها | وهي | تخاطبه ان كلمت زيد | ا |
| | هذا فانت طالق لم تطلق | ا | ن كلمته مجنونا وان قال ان كلمت | ابن | فقيه فانت طالق | |
| و | ان كلمت من اهل ا | لجبل | احدا فانت طالق وان كلمت | وا | ليا فانت طالق وجب | |
| ا | ذا كلمت رجلا قد | فا | ز بالاوصاف الثلاثة ان تطلق ثلاثا وان قال يا | بنت | فلان انت طالق ان وصل | |
| | لكمال بفتح ان فان | تا | هذا من نحوي طلقت في الحال | وامر | ها عند غير النحا | ة |
| | مثل المكسورة وان قال | الغا | ئل انت طالق ثم قال اردت عند قد | و | م زيد لم يقبل ذ | الك |
| | نعم لو قال من | يد | خل الدار منكن فهي طالق فلا تطلق | امرأة | قبله فلو قال اردت الان | |
| | هذا صدقناه بخلاف ما | ا | ذا اراد تعجيله باب الشك في الطلاق | وا | ذا شك هل طلقت | |
| و | احدة او اثنتين فالا | حمد | له ان يحتاط ويلتزم الاثنتين ولا يلزمه | اثنتان | بل واحدة ولو | ردي |
| | كونه طلق من نسائه | وا | حدة واشكلت عليه اعتزلهما جميعا | وا | نفق عليهما ما د | ام |
| | معه الشك فيمن | طلقه | وان طلق احدهما لا بعينها لزمه | اثنتان | التعيين والاعتزال حتى تعين وحيث | |
| ا | مر بالتعيين فعين واحدة | وعاد | وقال بل هذه طلقتا في المسئلة قبلها | وا | لاولى في هذه وقبل ان | |

باب الشك في الطلاق

باب الرجعة

باب الايلاء

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ذ | ى كتك هذا اذا كان | سالما | فاذا مات قبل التعيين فعين الوارث | سم | المطلقة لم يقبل | فى |
| هـ | نه التى طلاقها مبهم | ثم | يقبل فى التى طلاقها معين فى الاصح | وا | ن قال لامرأته واجنبية | تذهب |
| بـ | الطلاق احداكما وقال | ان | الذى اردت اجنبية قبل وان كان اسم امرأته | ست | فقال ست طالق | منى |
| ثلثا | ثم قال اردت اجنبية من | الطوا | يف لم يقبل منه فى الحكم ويدين | وا | ن قال ان كان غراب | ا |
| هـ | ذا الطائر فكل | شئ | عندى من النساء طالق وان لم يكن غرابا ف | لعـ | عبدى حر وجهـ | ل |
| و | قف عن التصرف فى | ا | لكل حتى يتبين فان مات وارا الوارث | التعيين | فالمذهب انه لا يصد | ق |
| الا | انا نرد الملا | هيف | الى الحكم بالقرعة فان قرع العبد عتق | وا | ن قرعن لم تخلـ | ص |
| تـ | لك القرعة فلا يحكم انه | وصل | اليهن طلاق ولا ينفذ تصرفه فى العبد وخا | لف | بعض الصحابة | فى |
| شا | ن العبد وقال برق | وا | لاول اصح باب الرجعة و | [illegible] | طلاقها فالموطوءة ثم ما بعد | |
| عـ | دده بلا عوض اذا ارا | دار | جاعها فى العدة جاز وصيغتها | [illegible] | راجعتك وارتجعتك ومثله | |
| يـ | كون رددتك وامسكتك | راية | نافذ فى طلاقها وظهار وايلاء | [illegible] | ظاهر ولا خـ | فى |
| ثم | يلزمه المهر بوطئها | حتى | قبل انه وان حصل بعد الوطئ رد | [illegible] | لا يستقط المهر واذ | ا |
| ا | ختلفا فادعى انه | دخل | بها فله الرجعة فالقول قولها | [illegible] | فى العدة لو حصـ | ل |
| نـ | قول اذا سبقت بالدعوى و | ز | عمت انقضاء العدة وقال كنت راجعتك | وما | انقضت الا وقد راجعـ | ت |
| يـ | ومئذ وانت الآن | يد | ى فالقول قولها وان سبق بدعوى الرجعة ثم | ا | دعت انقضاء العدة صد | ق |
| قـ | وله بيمينه فان ادعيا | يوم | اذ معا صدقت المرأة فى ا | شبه | الوجهين واذا اتى | فى |
| طـ | لاق الحرة بثنتين و | الا | مة بطلقة ثم راجعها او نكحها او كان | ذلك | وقد تزوجت ام لا فهـ | ى |
| عا | ئدة بطلقة واذا صد | ر | للحر ثلاث طلقات وللعبد طلقتين حرمت | الا | ان تنكح زوجا بعـ | د |
| الـ | مطلق ويحصل بينهما | بعا | له ولو بتغييب الحشفة فى نكاح | سما | صحيحا فلا يعتمد | على |
| و | طئ السيد ثم بعد الطلاق | الثلاث | اذا ادعت انها تحللت بزوج و | التى | يدعى يمكن فى | مثل |
| فـ | لك الدعوى ان يكون | من | الصادقات جاز تزويجها باب الايلاء يصح ا | لا | يلاء من كل زوج يستطيع | |
| د | خولا بامرأته وغير القاد | ر | كالمجبوب والاشل لا يصح منه و | ينصرف | الحكم بقياس النا | ص |
| الـ | ى الرفقا والقرباء فمو | جب | العجز موجود فيهما والايلاء ف | اعلم | انه الحلف على كونه تاركا | |

باب الظهار

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مجا | معتها فوق اربعة اشهر | من السنة | ولا يختص بالحلف بالله بل | ان | الزم حجا او طلاقا | فى |
| مـ | قابلة الوطئ صح | وكان | موليا وصريحه النيك والوطئ والجماع و | الا | فتضاض بالذكر | وهو |
| و | ارد على البكر ولا باشرت | اهلا | ولا لامست ولا باضعت وغشيت وقربت هذه الا | سماء | كنايات وليس موليا | |
| عـ | ازم حلف على تر | ك | استيفاء الايلاج وان حلف منه مدة وتوفى | التى | يصير بها موليا كـ | فى |
| و | لو قال والله ربـ | العوا | لم لا وطئتك اربعة اشهر فاذا مضت ا | لا | ربعة فوالله لا ادنو | |
| لـ | ك بوطئ اربعة شهو | ر | فليس بمول فلو ذكر اكثر من اربعة كان | ينصرف | بايلائين وان حلف لا | |
| ا | طاؤها الا بحصول المستبعد | ين | وقتا كالدجال والدابة او حتى يموت | عشرون | من بيتها فهو ا | ذا |
| يكون | موليا وان حلف | على | ترك الجماع فى السنة الا مرة ففيه | وجها | ن الاصح انه ليـ | س |
| الا | ن موليا فاذا مد | يده | ووطئها فى تلك السنة وبقى مثلا | منها | مدة الايلاء فلا شك | |
| فى | انه يصير حينئذ موليا | ثم | لو قال ان وطئتك فعلى صوم | عشرة | ايام بهذا الشهر لم يكن | |
| ا | يلاء وان حلف لا وطئتك | ان | شئت فقالت فى الحال شئت صار موليا وا | لا | فلا وان حلف لاربع زوجا | ت |
| لا | وطئتكن لم يحكم عليه | السلطان | الآن بايلاء فاذا وطئ ثلثا فالايلاء | ينصرف | الى الرابعة ثم اذ | ا |
| حـ | لت اربعة اشهر من حين | ارسل | المولى يمينه او من حين راجع ان الا | فى | رجعته وانت لتسا | ل |
| فيه | طولب بها والغيبة | المقا | ربة بالجماع وان حدث فى المدة عذر | معروف | منها مثل ان يمضـ | ى |
| فـ | ى الاحرام او حبست فى ذ | ـب | او ظلما او نشزت او مرضت فانه يقطعها وتستانف | ولا | يقطعها الاعذار اذ | ا |
| و | جدت فى مدتها | من الرجا | وان طلقها رجعيا او ارتدوا | نكو | الاسلام انقطعت المدة ولو | |
| ا | ن عجز عن الجماع | فلما | طالبته قال لو قدرت لفئت كفى وعذرنا | ه فا | ن هذه فئة المعذور واذ | ا |
| لـ | م يكن له عذر فا | علم | انه يجب وطئها وادناه تغييب الحشفة و | حدها | فاذا طولب بالوطئ وكا | ن |
| مـ | نه الوطئ كفر يمينه و | الا | او فى بما نذر وان حلف بطلاق وطلقت واذا | ما كان | بطلاقها نزع وتر | ك |
| جـ | ماعها فاذا استدام ما | شر | ع فيه لزم المهر ويطلق عليه القاضى اذا ابى | على | الفئة والطلاق وقيل يحبس | |
| تـ | محيصا حتى يكيف الانصر | اف | الى الطلاق باب الظهار هو ان يجعل امرأته | مثل | ظهر امة وكالظهر | |
| ثـ | دى ويد وكل عضو | ولو | انه قال انت على كعين امى وقال لم | افعل | هذا الا اكرا | ما |
| و | جلا لا فليس بظاهر و | ها | كذا اذا لم يقصد شيئا فى الاصح و | اذا | شبهها بمحرم ما حلت | قبل |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| له فهو مظاهر ولو زاو | دبين | طلاقا وظهارا كانت طالق كظهر امي و | كان | يريد لكل معنا | فانها |
| مع الزوج تكون مطلقة | ثم | مظاهر منها ان كان رجعيا وان جعله | نعتا | للطلاق او لم ينو كانت | |
| قبله مطلقة فقط و | وقعوا | في الحكم عليه عند نيته في | مثل | انت على حرام فلو يكون | |
| هذا يقصد طلاقا او ظهارا | عا | ملناه به وان نواهما تخير احدهما وفي وجه | اخر | يكون طلاقا واما لو | |
| بينا نذ انما كان من المحر | مين | عينها او لم ينو شيئا فعليه كفارة يمين | وا | ذا علقه بشرط كان حا | صلا |
| م لحصو ولو خاطبته احدى ز | وجا | تك وقلت اذا تظاهرت من الاجنبية | مر | ة فانت كظهر امي فلوانك | |
| حرمت عليها وتزوجتها ثم | ا | وجبت ظهارها صار مظاهرا من الزوجة | والزم | المظاهر كفارة متى كان | |
| فيه عائدا بان ا | بن مكا | نه ممسكا لها بعد الظهار وقد يأتي | وامكن | فراقها فلو اتصلت | |
| يومئذ فرقة تز | يل | النكاح كموته وفسخ وطلاق ولم يراجع | وما بين ذلك | فلا عود | اصلا |
| نعم لو راجع فالرجعة عود | والا | سلام بعد الردة ليس بعود في الاصح | والثاني | هو عود وان شراها | وقد |
| ا وجب ظهارها فلا عود ان | شرا | ها متصلا بالظهار ولو فرق بعد | ما كان | منه من العود لم يجعل | |
| ذلك مسقطا للكفارة والمعرو | ف | انه يحرم الوطء قبل التكفير ويجوز | على | الاظهر اللمس بشهو | ة |
| ا ما الظهار الموقت | فجاء | فيه خلاف والصحيح صحته وان يكون عوده | فعلا | لا امساكا | |
| سبيله في العود عند | هم | هنا ان يطاها في المدة فاذا غيب الحشفة لزمه ا | ن | ينزع ولو قال لار | بع |
| قبله انتن كظهر امي | فخر | وجه من الاثم اذا عاد باربع كفارات | ولذ | يكرر الظهار وغر | ضه |
| طلب التاكيد ففي حكم | الدين | ظهار واحد وان قصد الاستئناف وتعدد في | انشاء | الظهار ويكون بالكلا | م |
| ا لثاني عائدا الى الاول ولا | زياد | ة على عتق رقبة في كفارة الظهار | فعلى | هذا يشترط كما | روي |
| حصولها مؤمنة بلا عيب مخل | في | العمل والكسب فيجزئ صغير واقرع و | مثل | اعرج يتابع المشي لا | ا |
| د نفا او زمن لا يرجى ومن هو في | اسر | هرم وجنون مطبق ويجزئ اعور واصم و | سكران | وفاقد انفه | واذا |
| هو فاقد لاذنيه فلا تر | دد | في جوازه وكذا اصابع الرجلين | فان | فقد السبابة من اليد او | كان |
| مقطوع الوسطى لم يجز | وكسر | ها لا ايضا ومقطوع الخنصر والبنصر معا | ا | وانملة من الابهام لم يفا | صل |
| اثبات جوازها عند | هم | ويجزئ مدبر ومعلق بصفة وذكر والرقيق و | انثى | سواء الام ولد وانما | |
| تجب في فاضل عن كفاية نفسه | و | عياله كسوة وسكنى ونفقة بالمعروف لا | سكر | وحلوا ومنعو | ا |



| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ا يجاب بيع ضيعة تكفي | اهلك | ودار ما لو مسكن وعبد شمنين الفتها | و | ان عجز عنها لزمه ان يصوم | |
| لذلك شهرين متتابعين فالصائم من | مقدمه | الهلال يلزمه هلالين او من اثنائه اتم | ما | انكسر ثلاثين فان عجز | نفض |
| ا لامر عنه بالرجوع الى | ا | الاطعام لكل مسكين مد وشروطه شروط | ا | لفطرة فلا تجزئ القيمة ولا يجزيه | |
| خر وجه لمن تجب نفقته كا | بن | واب ونحوهما والكافر وهاشمي وما اشبه | ذلك | باب اللعان | من |
| عاب امرأته بالزنا وفتح ر | تاج | الحد والتعزير على نفسه فله دون | و | اسقاطه باللعان ولا اثم في | |
| قذف زوجته غير ذات | الدين | حين يعلم زناها او يظنه الظن المؤكد | الثا | بت واذا اتت بولد لا | |
| يجوز ان يكون منه وجب | في | ذلك نفيه باللعان ولو كان معهما في البيت ثا | لث | وعلم الزوج انه زنا | |
| بها واتت بولد يقد | ر | احتمال كونه منه واحتمال كونه من الزاني | ما كان | يحل له النفي | لنسب |
| هذا الولد الحادث بينا | بيع | الظنون وان كانت حاملا نفاه للاعن | على | الفور وان شا | |
| فيؤخر الى الوضع ثم يقيم | سنة | اللعان وان قال الولد من فلان وما ا | فعلا | ذلك الا بشبهة فهو | |
| يعرض على واحد او | اثنين | من القافة ولا لعان واذا وطئ بشبهة في | مثل | نكاح فاسد فجا | ءت |
| تلك الموطوءة بولد | و | نفاه للاعن وليشهد اللعان جمع من | اصدقا | ئهما وغيرهم واو | ل |
| عدود اربعة فان بلغوا | سبعين | فاكثر فلا بأس وليكن عند عصر الجمعة | وا | ن يكون في اشرف مكان لعل | |
| ان يزدجرن بالتغليظ | ثم | يعظهما الحاكم ويبالغ عند الخامسة وليكن | وليا | لتلقينهما واول ما | |
| يؤمر هو بالقيام فيشهد | في | ذلك اربعا بالله انه لمن الصادقين فيما رماها به | ونحو | ثما قذفها به من زنا ا | ضافه |
| كونه اليها فاذا | عا | د الى الخامسة قال والا فعليه لعنة الله | ا | ن كان من الكاذبين ويؤمر بعد | ه |
| ا ن يقول من قيا | م | اشهد بالله انه لمن الكاذبين اربعا وبعد | الرابع | والا فعليها غضب الله ان كانت | |
| من الصادقين وهي خمس لا | سبع | يذكر الزنا ونفي الولد كل مرة فاذا | ما | لاعنت درات الحد والا | شبيه |
| عند العلما ان لفظ الشهادة لو | احدة | وابدله بحلف او ابدل غضبا بلعن او | كان | مقدما لهما لم يصح ثم انه | |
| ا ذا لاعن زوجته | نزل | عنها وتابد تحريمها عليه ولو قدم | على | قذفها اجنبي حد واذ | ا |
| و جد من الزوج عزره | الامام | ولم يلاعن باب النسب من تزوج واحدث | فعلا | ام لا لحقه النسب | |
| للامكان ولا ينتفي عنه ا | صلا | الا باللعان فان لم يمكن ان يكون منه | مثل | الصغير والممسوح اوجاء | |
| ا لولد والمدع من النكا | ح | دون ستة اشهر انتفى بلا لعان عند | علما | ئنا او ان وطئ بشبهة وحصل | |

باب اللعان

باب النسب

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ي | ومئذ منها حمل | وبلغ | مدة الامكان لحقه ومن كان يجالس العلماء | وفقها | البلد ولحقه نسب ولم يعتر | ف |
| ت | عين نفيه على الفور وليس | الى | تاخيره بسبيل الا بعذر كغيبة وحفظ ما او | ونحو | فان ادعى جهلا | ا |
| ف | ي كونه فوريا او جهل | باب | جواز النفي من اصله لم يقبل منه | والخا | رجون عن مجالسة اهل العل | م |
| ق | الوا يقبل منهم ويجو | ز | نفي الولد ميتا ولو ولدت اليوم ولدا و | امس | ولدا وقال السابـ | ق |
| ا | بني دون الثاني لحق | بيد | ه نسب الجميع وكذا لو كان بينهما | ما | دون ستة اشهر ويخلـ | ص |
| ن | افي وطئ امته من | و | لدها باللعان فاوطئها وادعى انه | كان | اشتراها صدق بيمينه و | لو |
| ي | طاؤها اثنان بشبهة و | وقف | الحمل مدة الامكان ثم ادعياه عرض | على | القافة فان كانت و | را |
| سا | بقهما قد حاضت | ثلث | حيضات او حيضة فهو للثاني ان يكن في الاولى جاز وسواء | فعلا | ه وهما حران قد ثبـ | ت |
| قط | عا ايتلافهما او احدهما و | ليا | خذ بقول قائف واحد مجرب عدل | مثل | الشاهد فان التبـ | س |
| ا | لقائف او حصل الاشكا | ل | اولم يكن ترك حتى يبلغ وينتسب الى من | سو | لت له نفسه ولختار | ه |
| | منها **كتاب الايمان** | ثم | لا يصح الا من بالغ عاقل مختار قاصد ابدا | وا | ليمين ويصح ايرادها | |
| ع | لى الماضي والمستقبل والكلام | راجع | الى المستقبل فاذا حلف على ترك واجب | و | فعل محرم عصى ولزمه اثنا | ن |
| ا | لحنث والكفارة فان وردد | ها | الترك منه او فعل مكروه فالحنث اولى ولا | عذرا | صلا عن الكفارة او الفعـ | ل |
| و | هو مباح فهو ما مو | دبا | جتناب الحنث استحبابا وانعقادها لا يجا | وز | الحلف بالله الاسـ | م |
| ا | ولصفة فما كان | من | ذلك لله مطلقا ولغيره بالتقييد كالقا | هر | والرحيم والمحيـ | ي |
| ل | م تبطل يمينه وان تاول | قبل | وان حلف بما لا شركة فيه لغيره | و | ذلك كقوله والله ومالـ | ك |
| م | لك يوم الدين والرحمن | و | الاله والحي الذي لا يموت فلا يؤول | مثل ذلك | ولا يقبلوا | ن حلف |
| د | جل بمشترك كالبر والو | صول | والسميع والحي لم ينعقد الا بالنية و | السادا | لباب الشركة من صفا | ت |
| ا | لذات التي لا تحتمل | مراد | ها غير الله كعظمة الله وكلام المقد | س | وجلاله فهو كالحلف | بالله |
| ق | الوا ولا يقبل منه | السلطان | تاويلا وعلم الله وقدرته وحقه ف | ما كان | يطلق وصفة الله | العلـ |
| بر | كذلك الا ان ينوا | و | ل العلم على المعلوم والقدرة والحق | على | المقدور والعبادات | فان |
| ا | لتأويل يقبل ولو قال ا | طلع | الله او اشهد الله لم ينعقد وان قال | فعلي | عهد الله وميثاقه | لم |
| ن | جعله الا كناية والمقسم | على | غيره لو قال اقسم عليك بالله لتفعلن | نحو | ه فان قصد الربـ | ط |



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ل | نفسه باليمين انعقدت | بلاد | فاع والافلا **باب جامع الايمان** لو ان ا | م | احلف لـ | لا |
| ا | سكن الدار فليخرج فان قال | بني | ومتاعي فيها فخرج لنقلة وزيادة مر | ضى | لم يحنث ولو الس | ى |
| ي | مينا انه لا يدخلها و | شا | ان يستديم لم يحنث ولا يركب ولا يلبس | و | لا يقوم فاذ | ا |
| ذهب | يستديم ذلك | ور | ايمينه حنث وكذا لو حلف لا امشي ولا | لهى | فاستدام حنث وكذلـ | ك |
| ا | ذا حلف لا يدخل دارا | ووا جهه | دهليزها فدخله حنث لا بسطحها | ونحو | ولو حلف لا يدخـ | ل |
| م | سكن احد فليفته | الفقيه | بالحنث بدخول ما يسكنه عارية ولو قال | الت | ثل كان القسـ | م |
| ع | لى دخول دار | احمد | فالحنث لا يحصل الا بدخول دار يملكها ولو حلف لا | بع | ابن الوالي فعزل مـ | ن |
| ا | لو لاية ثم يتابع لا | بن | فان كان يريد الشخص نفسه حنث وفي | ما | اذا حلف من مطبو | خ |
| و | ليمة امة فلان ا | وز | وجته فاعتق الامة وطلق الزوجة فلا | يكون | حنث الا ان يشـ | ير |
| ل | لشخص بعينه وير | يد | ه ولو حلف لا يدخل من هذا الباب فجعل | على | باب اخر واحا | ل |
| ا | لدخول منه لم يحنث | و | ان دخل من الاول والباب منزوع حنث | فعلي | هذا العمدة المرث | م |
| ي | جاب من حلف وهو | ناظر | ويشير الى حنطة لا اكل من هذه الحنطة فانه في | مثل | هذا لا يحنث الا بشر | ط |
| ثب | وت الاسم وبقاؤ | ه حتى | لو طحنها واكلها لم يحنث ولا يحنث | بشر | ب الفتيت من حلف عـ | لى |
| ت | رك اكل الخبز وان | ا | قسم لا ياكل سويقا حنث بسفه ولو د | وى | منه شربا لم يحنث و | لو |
| ا | قسم لا يشربه فكان مستد | عيابه | بسنه لم يحنث ولو حلف لا يذ | و | قه فطعمه ولفظه فـ | قيل |
| م | ن ذلك يحنث وقيل لا | وكان | الاول اصح وان حلف لا اشرب | عرى | من هذا الكوز فصبه | في |
| ع | ليه وشربه فلا حنث | لدير | وان حلف لا ياكل اللحم فهو معتد | ور | في اكل الشحم وفـ | ى |
| ا | لكلية والكرش وكذا | من | الكبد والطحال لا يحنث به وان حلف المثا | بي | من اكل الشحم فاكل سنا | ما |
| و | الية لم يحنث ولو | بني | يمينه على اللحم حنث بلحم نعم ووحش | ونحو | الطير لا السمك او حلف لـ | ا |
| ا | كل الرؤس حنث برؤس | شا | ة وبقر وابل وان حلف في البيض وقع على | النا | بت المتصلب منه المزايـ | ل |
| ل | بياضه حتى من دجاج | ود | ال وطير لا سمك وجراد وان حلف | من | اكل الادم فاكل مـ | ن |
| م | لح لحم ولبن و | نحو | ه حنث وان حلف من اكل الرطب والبسر فاكل | ما كان | منصفا حنث وليـ | س |
| كا | ن حانثا من حلف | من | اكل البسرة او رطبة فاكل منصفة ولو حلف | على | الفاكهة فالرطب وبالعنـ | ب |

باب كفارة اليمين

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ي | حنثه وبالرمان هذه | ثلثا | منها اعلاها وان حلف لا يلبس شيئا | فعلى | الدرع والجوشن والنعا | ل |
| ف | ى الاصح يقع ذلك كالثياب و | الا | صح انه اذا حلف من هذا الرداء فغيره الى | مثل | قميص او قباء او | تخفيفه |
| هان | ولم يحنث به والمعرو | ف | انه لو حلف لا يلبس حليا فلبس | احدى | الخواتم من فضة او ذهـ | ب |
| ي | حنث وان من عليه رجل واذاه | فما | احتمل وحلف لا يشرب له ماء من عطش فقد | ذكر | وانه لا يحنث | من |
| ث | وب له لبسه ولا بما | استطاع | من صنايعه لا بشربه ماء عطشان وا | ى | رجل حلف لا | يجد |
| ب | بابه فلانا واقفا الا | اخذه | بالضرب ثم وجده فنتف شعره وعضه | و | ربط ايضا | يد |
| ت | نكيلا به حنث | فا | ذا حلف لا يتكلم فقرأ القرآن او سبح و | نحوه | لم يحنث بذلك | ولو |
| ا | قسم بالله لا يكلمه جهرا ولا | سر | ا فاشار اليه او كاتبه او راسله لم يحنث | والتا | قة اليسيرة من المار به | يصح |
| ح | نث من حلف ان | ها | ذا ماله ويحنث بثوبه وبدين شا | سع | اجله ولو حلف لا يمـ | ر |
| د | ار فلان حينا او لابسا | له | زمانا او دهرا او حقبا بر بادنى ز | ما | ن ولو حلف لا يز | ود |
| هذا | فيستخدمها | ثم نزل | اليها فخدمته وهو ساكت لم يحنث او لا | يكون | متزوجا او لا يتصرف | فى |
| م | لكه بيبع فوكل من باع | الملك | الذى له او من تزوج له لم يحنث و | بعد | لو حلف ليضربن عبد | ه |
| ا | لف سوط فشد | الا | لف وضربه ضربة واحدة وعلم ان | الف | السياط اذا اصابته بر | ولو |
| ا | نه شك فكذا فى الاصح والا | فضل | ان يكفر وان حلف من ثمره فاختلطت فاكل | الجميع | الا ثمرة لم يكن حانثا | |
| و | كذا لو حلف لا يدخل | زبيد فدخلها | اما ناسيا او جاهلا او كرها | منه | فلا حنث ولا و | زر |
| ل | ذلك وان حلف ليأكله | اول | الشهر فتلف قبله لم يحنث وكذا لو تلف | اكر | ه او شئ منه وان حلف لا يفا | ق |
| ا | لغريم فهرب منه فاذا | شهر | القولين المقطوع به انه لا يحنث و | من | قال ان شاء الله تعالى | فى |
| هـ | ذه اليمين متصلا قاصدا | ر | فعها بالاستثناء لم يحنث فان عقدها ثم عزله | حرف | الاستثناء فاستثنى | بعد |
| ما | انعقدت لم يصح واذا او | جب | الاستثنا فى اثناء اليمين صح فى | واحد | من القولين الذى اد | عوا |
| ا | نه الصحيح وان قال | وا | لله لا اسلم على فلان فسلم على قوم وقد | مثل | فلان بينهم حنث الا اذ | نوى |
| ا | ستثناه بقلبه ولو | قام الى | الصلاة فسلم على المامومين وفلان | مسا | مت لهم فعلى ذلك الطرا | ز |
| و | يحنث ان لم يستثنه | يوم | ءذ باب كفارة اليمين اذا و | جد | الحلف والحنث وجب تكفير | |
| ذ | لك الحنث ثم يتخير | الحا | لف بين عتق كالظهار او طعام عشرة | ود | فع لكل واحد مد | نق |

باب العدد

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| س | ومن قوت البلد لا ر | دى | معيب او كسوة كل قميص او سراويل او ازا | ر | ولا يجزئ منطقة و خـ | ف |
| ب | لى يجزئ لبس بقوة | والعشر | ة يكونون مساكين او فقراء ولا يجزئ الدراهم | و | ان كان معسرا صا | م |
| ا | يا ما ثلاثة وللعبيد المكفر | ين | الصيام فقط باب العد | دوا | ذا تزوجها وبعد ما دخل او استدخلت | |
| حد | ث الطلاق وجبت العدة و | من | كانت حاملا اعتدت بالوضع فان ارتا | ب | بما وضعت فيشهد اربع قوابـ | ل |
| بـ | ذا الوتي لتخطط | شعبا | وتصور آدميا انقضت به العدة فى الاصح | و | اكثر الحمل اربع سنين و | لما |
| م | دة اقله فانها تكو | ن | ستة اشهر والحامل من ذوات الحيض وهن | شوا | النسا تعتد بثلاثة اقر | ء |
| ا | لمطلقة فى الطهر اذا | عا | ينت الحيضة الثالثة كفى وقيل بعد يوم وليلة | و | ان طلقت حائضا فحين تعايـ | ن |
| ا | لحيضة الرابعة وتصور بتمام | ثمانية | واربعين يوما على الضعيف وا | ما | على الصحيح فبتمام سبع واربعيـ | ن |
| و | لحظة هذا فى الحائض | و | اما الطاهر فبتمام اثنين وثلثين يوما ولحظتين فى | اغلب | القولين وسن الاياس حكا | |
| كـ | ثير العلماء انه لا يبلغ | سبعين | عاما بل اثنين وستين وقيل اياس نسائها ومن بلغت | ذلك | وانقطع حيضها | |
| ل | زمها ان تعتد | وتوفى | ما عليها بثلاثة اشهر وكذا من لم تحض فى | العا | دة ومن حاضت اذا زا | ل |
| ا | لحيض عنها قال الشافعى | رحمه الله | تقف الى الاياس ثم تعتد بالشهور ومن | شر | عت تعتد بالشهور ثـ | م |
| هـ | جم عليها الحيض بطل | ود | جعت الى الاقراء وعدة من تحيض من الا | ما | حيضتان وذوات الايا | س |
| م | نهن ومن لم تحض فى الا | ضح | شهر ونصف فان اعتقت فى العدة و | كان | الطلاق رجعيا فالمنقو | ل |
| ا | لاصح من قوليه رضى الله | عنه | انها تتم عدة حرة وان كان بائنا لم يكن | معدولا | بها عن الاما فى الحكـ | م |
| ثم | الموطوءة بشبهة | فا | نها تعتد كالمطلقة واما عدة الوفاة | من | كانت حاملا فبالوضع ومن | تكون |
| م | نهن حرة حاملا فا | جمعت الامة | ان عدتها اربعة اشهر وعشرا و | العد | ة للامة نصفها ويجب | على |
| ا | لرجعية اذا مات الزوج وهى | على | عدتها ان تنتقل الى عدة الوفاة والمفقو | د | ليس لزوجته نكاح فى | الدين |
| ا | لا ان يثبت موتها | و | طلاقه وفى القديم تتربص اربع سنين | مثل | اكثر الحمل ثم بعد التربـ | ص |
| حـ | عل كالمتوفى فتعتد من | لد | ن ذلك الوقت عدة الوفاة ومن تزوج | مثنى | وطلق احدهما ومات لا يعـ | د |
| ق | عيين وبيان اعتد فالكلوفا | ة | ان كان لم يطا بها او وطئ وهما | و | اما الشهر او اقرا فى رجعـ | ى |
| م | ن الطلاق واما فى | البا | ين من الطلاق فانها تعتد بالاكثر من | ثلاث | حيضا وعدة الوفاة والطلا | ق |
| عـ | دته من حين ار | سل | الطلاق وعدة الوفاة من الموت والاحدا | و | اجب بعد وفاة لا بايـ | ن |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | ان تترك الزينة كما | وصفو | افلا تلبس حليا ويحرم عليه الكتنا | دبا | لثياب المصبغة للزينة | وبها |
| هـ | و طيب لا تا | ته | ولا تختضب ولا تدهن وعليها الامتنا | ع | من الاكتحال بالاثمد فلو | و |
| عسر | جاز الاكتحال عند | الكا | فة ليلا وتغسله نهارا والتنظف بسدر | ونحوه | مباح والخروج حرام عليها | |
| ل | كن اذا احتاجت للنعا | مل | في بيع غزل ونحوه خرجت نهارا | واما | الليل فلا ولا يحـ | ل |
| تـ | طرق للباين ايضا و | السلطان | يمنعها من الخروج الا لسوء | العشرة | وبذا تها على السكا | ن |
| ا | وضرورة ثم ان كان | الملك | له في مسكن الطلاق سكنته فان | الى | تطلق السكنى لها وجب | |
| نـ | عم لو كانت ساكنة في | الاشرف | من منازله فله نقلها ولا يساكنها | الا | مع محرم لها ونحوه ولو | نقضى |
| الـ | ى مسكن باذنه فوجبت | ا | لعدة قبل وصولها اليه اعتدت فيه ولو | تنصرف | عنه او الى سفر تجارة او | و |
| ثـ | واب و لحقها | سما | ع الطلاق فلها ان ترجع وان تمضي | في | حاجتها فاذا قضتها او | وفى |
| ز | من من العدة فاولد | عيل | تسافر ترجع معه لتتم بقية العدة | المعر | وفة في المسكن ولو تقو | ل |
| م | خرجني للنقلة واذنت اذا | بن | مكاني وقال بل لحقه فالطريقة المعرو | فة | ان القول قوله والحكم | في |
| و | طئ العدة في نكاح فاسد | العبا | دة او غيرها او بشبهة مانع تعتد اخرى | و | تقدم عدة الحمل | في |
| هـ | ذا وغير الحامل تجرى على القيا | س | فتقضى عدة الطلاق ثم | تنصرف | لعدة الشبهة ولو راجعها | |
| و | هي في عدته فلا بد | من | ان يهجرها حتى تنقضي عدة الشبهة وان رجع | في | العدة فطلق ولم يطا | |
| ا | لزمنا ها استينا فا | لا | عتداد وبقاء الخطة بينهما بعد الطلاق من | المنكر | ثم لا يصح نقلا | |
| جـ | ريان الباس في عدتها و | يختلف | الحكم في الرجعية فلا يجرى فيها حتى تهجر وبها | ا | لرجعة لا تصح بعد انقضا | |
| تـ | اريخ العدة وان طلق | احد | رجعية في العدة طلقت وان قالت انقضى | حوبها | وانكر فان عر | ف |
| مـ | ن الزمان زمانا يتصور | في | مثله انقضاء العدة فالقول قولها وتقضى في | ما | اذا قال طلقت بعد الولادة | |
| ا | ن القول قوله وقولها | فضلة | اذا اختلفا في الولادة فقال | هو | ما ولدت الا بعد ما | |
| عـ | دت الطلاق فالقول قولها | ولا | اشكال باب الاستبراء كل سبب حصل لك | اسم | الملك في امة اوجب | ذا |
| ا | لاستبراء لها قبل الوطي فلا | يانى | من ملكها حاملا حتى تضع ومن | ليس | بها حمل استبرت | ت |
| خـ | لف الملك بحيضة كاملة و | الزمان | الذى يستبرا به ذوات الاشهر الصحيح | يعر | فهم شهر واحد وان سوغ | |
| ر | جل ملك امة معتدة او | بملك | زوج او مرتدة لم تستبرا حتى توءمن بعد | نى | او بزوال النكاح وتعتد | |

باب الاستبراء



باب الرضاع

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فـ | يه وليس ملك زوجته | مثله | بل له وطؤها لكن يستحب الاستبراء وان كانت | على | ملكه فباعها ثم اشتر | ى |
| و | فسخ العقد فعليه | الا | ستبراء على الصحيح وان زوجها وطلقت بعد الدخول قال | اكثر | اصحابنا متى انقضت | ت |
| ا | لعدة استبراها اما | من | طلقت قبل الدخول فتستبرا قطعا و | من | باع امة وطئها وهو | و |
| لـ | م يستبرأها كره خوفا على | نسله | وجاز ولا يجوز تزويجها قبل الاستبراء او هولاء | ثلثة | تستبرأ امة تو | طأ |
| قـ | د عتقت ثم تنكح وكذا ام | و | لد مات سيدها او اعتقت وهي مزوجة او معتدة فلا | ا | ستبراء ووطئ رجلين يجب | ب |
| بـ | ه استبراآن تشرع في الثاني اذا | نت | مدة الاول باب الرضاع انما يثبت | حر | مته بلبن امرأة لم تمت | ت |
| صـ | مت سنا يمكن في شا | له | الحيض فلو حلب لبنها ثم ماتت فقدم | ف | في بطنه حرم وان جبن | ن |
| ثـ | طعمه حرم ولو خلط | ا | للبن بماء ونحوه حرم سواء كان | مثل | اللبن او اكثر الا اذا كان | نغس |
| ا | للبن مغلوبا فالاصح من | الخلا | ف انه يحرم ان السوفاه والايجار والسقوط ان ا | جبر | عليهما محرمان ولا يقضى | ى |
| بـ | ه في الحقنة والرضيع او صبا | فة | المشروطة ان يرضع وهو حي لم يز | ايل | الحولين خمس رضعات | [illegible] |
| تـ | قع بدونها حرمة و | في | الرضعات يشترط التفرق فاذا قطع | وبا | عد نفسه مختارا فهي | في |
| د | ابهم رضعة ولو تحول | يوم | رضع وانتقل من ثدي الى ثدي او احس | بلك | فالتفت ثم عاد في الحال | ل |
| و | رضع فهي واحدة ولو | و | لى رضاعه وشك هل رضع خمسا ا | و | اقل او شك هل | حي |
| هـ | ذا الرضيع حين دخل اللبن | فاه | الى ان وصل جوفه ام لا لم يحرم و | ا | لمرضعة تصير ام الغلا | م |
| و | يصير صاحب اللبن | والده | وابائهما واولادهما اباءه واخوته و | سرا | لى اخوتهما من الرضاعة | متى |
| ا | لنسب وعندنا فيه | رحمه الله | لو كان لرجل خمس عقا | يلي | مستولدات فرضع صبي | ى |
| جـ | ميعهن مرة مرة وكفى | و | صار ابنه وحرمن ايضا على الصبي | و | ذلك لان اباه كان واطئا | أ |
| تـ | لك المنسوة وكل من | الحق به | نسب ولده فاللبن له وحكم | ها | ذا اللبن لا ينقطع ا | لا |
| مـ | تى ولدت غيره واذى | الى | التطاول وكذا لو انقطع وعاد ولو | رو | ضع بين زوجتيه اما | |
| ا | رضعتهما امرأة او ام احدهما عا | مد | ة او ناسية فانه ينفسخ النكاح | ن | ومن افسد على الزوجين | |
| عـ | قد نكاح برضاع صا | ر | عليه نصف مهر المثل باب النفقات | وما | تجب به تجب على | ى |
| ا | لموسر مدان والمد | ستة | عشر اوقية والمعسر مد والذي هو | اشبه | بالمتوسط مد ونصف هكذا | ا |
| حـ | صروه ويكون حبا يسلم | في | كل يوم من قوت البلد وعليه طحن | ذلك | وخبزه فان تراضيا بابدا | ل |

باب النفقات

والفقط ... الشكل ... اجماع ... و

الاصل ... والا ... فيكون ...

ذلك بعوض فوجهان والذي تعز ى إليه الصحة منهما الجواز وكذا الوكلته والثاني لا والادم مما كان غالبا
في البلد فان اختلف ليسار و اعسار قدره الحاكم ومن لا تا كل الخبز بادام ا صلا
و اجب لها الادم اذا اعتا د غيرها ويجب كسوة يقع بها اسم الكفاية والعماد التقويم
البلد وعادة اهل فن الزوج ويجب لها فالشتاء ومرقد يليق به وما يكون
قعودها عليه من التجرد بها العادة لا الطيب وما يفعله لا انثى ثم الخضاب ونحوه بلى
طلب المشط والدهن يوم تحتاجه وما تنظف به من السدر والمرتك على الزوج واجب لها
ثم الخادم لمن تخدم فان طلبت اثنين لم يجب فان قال انا اخدمها لم يلزمها و من لزمه خدام لنسائه فلا
شك في وجوب نفقتهم في الرأس وكسوتهم ويجب النفقة باثنين لا ثلاثة العقد والتمكين بالعرض
لنفسها وان لم ينقلها عن ربع اهلها ويجب النفقة لكبيرة على صغير لا عكسه حرة كانت او امة قالوا
ولا تسقط بعجزها عن الوطء والعتر ف ة بمرضها او رتقها ولا العيالة تحتا ف والامة ان كانت تختلف
هكذا من السيد الى القر ين ومن القرين الى السيد فلا نفقة لها ولا تجب لا اذا سلمت ليلا ونهارا اليه
وان غاب الزوج فبعث من يعلمه بالتمكين لنفسها ومكث بعدا علامه زمانا يمكن وصوله لو
اراد وجبت النفقة من ذلك الوقت وتسقط بنشوز وسفر لم يأذن فيه وكذا باذنه اذ ا
جرى لحاجتها والحج حاجتها فلو دخل الشهر فاذن لها بالاحرام بالحج فا لتا خر عن نفقتها ما لم
تسافر لا يجوز له وفي احرامها بغير اذنه يسقط بالاحرام و ذوات الثا نيت ليس لهن صوم قضا
متسع ولا صوم التطوع والسنة بغير اذنه والمطلقات باين ورجعي فالرجعية مثل الزوجة في المؤن الا
التنظيف فانه لا يجب لها والثانية المطلقة البائن فيجب على الزوج سعاد ها بالسكنى وذات الحمل
عليه نفقتها وكسوتها ومن انفق حاملا فبانت حائلا استرد و معتدة الوفاة ان اختلف
القول في وجوب سكنها ولا خلا ف انه لا يجب نفقتها على ا مر وان كانت حاملا والثاني اختلف
خبر الزوجين فقال الذي صر فته نفقة ثلاثة اشهر وقالت شهرين صدقت بيمينها و قديم التمكين اذا اختلفا في
نفيه صدق بيمينه و ما تاخر من نفقتها صار دينا في الذمة و اذا اعسر بها فالها يكون
وجه الصبر والفسخ ان شا ت لكن بالحاكم فان شاءت المقام ففي ما بعد عزلها الفسخ دون
العلماء ان لها ذلك ومن ابن بمكان وماله منه على مسافة القصر اشبه المعسر والمكتسب قالوا ا

كالغنى



والكفاح ... النقض ... العصب والكف ...

في الغافرة الفصورة وذكر ... اختلاف

كالغنى ويمهل ثلاثا لو جا ا مكا ن والكسوة اذا اعسر بها فكمثل ذلك يفسخ بها والمعروف
في نفقة الخادم انها لا تعو يل للفسخ على الاعسار بها لكن ذكر وا نها تثبت دينا وتقضى
ثم الادام كذلك والعبد الذي له زوجة ان كان مكتسبا فا لثا بت ان نفقتها تجب فيما
اكتسب او تجارة وعند عدم ذكر وانها متعلق بذمته ولها الفسخ بعد الثا لث باب نفقة القريب الاصول
لهم النفقة وكذا الفروع ا نا كانوا اوذكورا وان خالف كل الاخر في دين الحق
ثم تسقط الكسبة وغنا ه و غير المكتسب ان كان ينطلق عليه اسم الصغير او مجنونا او زمنا
قلنا بوجوبها واما اذا كان كبيرا فالصحيح انها يجب للاصل لا الفرع و في اعفاف الاب خلاف
صحح العلما وجوبه و من اوجبه اوجب نفقة زوجته وبدا بنفسه اخو ما سواها ثم بزوجته ثم يعطي
لولده ثم للاب ثم للام وقال بعض الاصحاب الام احق وقيل يستويان فيقسما ن والابن قبل ابنه وقيل يقسمانه
جميعا ومن استوى فيه ماه امرا ها بنفقة معا وان لم يستويا اوجبنا على الاقرب والابوان اذ ا
تنازعا فيمن ينفقه الزمها السلطان الاب ثم اباه الاقرب فالاقرب ثم المؤنث بعدهم يلزم الاصول
منهن كذلك ولهم الملك في المطالبة بها ما لم تفت فانها لا تصير مثل نفقة الزوجة دينا نعم
اذا فرضها القاضي فلهم المجا هرة بطلت فائتها وعليها ارضاع ولدها اللبأ حذ را عليه فان لم يلق
عنده مرضعة تعينت ليتعا هدا رضاعه وان وجد غير الام فطا لبته من العلماء اقول يتصور
ان يأخذه الاب كرها والذي قطع الاكثرون بصحته انها اولى بارضاعه و اذا طلبت اجرة مثل فهو
لازم ان تجاب وان تلزمها اباه وان تبرعت الاجنبية ثم لا يلزمها ان تكون فطمه له قبل الحولين وكذلك
عليه نفقة رقيقه وكسوته وحر م عليه ان يضيعه وان عدم نفعا وخد مة والرتبة تفضل على المشهور
صفة نفقتها ومفرو ض كسوتها على نفقة امة الخدمة وكسوتها وترجيحه في ذلك على العرف ثم
بعد ذلك يستحب اذا وا فاه بطعامه ان يطعمه منه ولا يكلفه ما يفره وما لا يطيقه ويريحه في
وقت الصلوة في السفر والا قامة ويعقبه في السفر ولبن الجارية وان ما ذلك لا يجوز ان يؤخذ
الا ما فضل منه بعد و لدها وبايع ماله في نفقة البهايم والر فق ان تعذر فيه الكرا
كما يكلفه ذبح المأكول ان فا ت بعيه باب الحضانة والاناث ا ليق بها ولا اختلاف
في انه لا يتقدم امرأ ة والده الطفل ثم امهاتها القربى فالقربى ثم تا بع امهات الاب ثم يقدم اختا

باب نفقة القريب

باب الحضانة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثم | خالة ثم بنت اخ ثم | معا | لم لعمة بعد بنت الاخت والجدات | كل | من لا ترث فليست من اه | ل |
| ا | لحضانة وتقدم اخت من ا | مه | وابيه على اخت من ابيه وبنت م | اسم | الحضانة لكل ذكر | حر |
| ق | ريب ووارث ولا تخلى | ف | يره بنت عم المشتهاة وتسلم الى | انثى | يعينها ابن العم ولو | |
| ص | ارت لذكور واناث كانت | الا | م اولى بها ثم امهاتها ايضا | على | الترتيب ثم الاب وتصر | ف |
| م | ن بعده لامهاته ثم لا | م | بعد الجد ثم امهاته وقيل يقدم تخوص | ثلثة | على الاب فذكو | وا |
| ا | لاخت لابوين الاخت لام | ثم | خالة والصحيح هو الاول واذا | احر | ز من التميز طف | ل |
| ج | علت الخيرة اليه فلو | اند | اختار واحدا ثم الاخر حول اليه وغير خا | ف | انه اذا اختار الاب لم يبح | |
| ت | حت يده ولا يمنع اذا | نزع | به شوق من زيارة امه وان اشتاقت | نحو | بنتها لم تمنع زيارتها ثم | |
| م | رة في ايام كالعادة لا ذا | يد | عليها ولها تمريضها ولا تزورها السنت وان | قدم | في الاختيار الام كانت | اقام |
| ا | لبنت ولا يا لاب لا تزور | ه | وله زيارتها والابن معها ليلا | و | مع الاب نهارا ولو | |
| ع | دم الاب والجد واختار احدا | من | العصبة قدم على الام ولو | بذد | من الام كراهتها | ما |
| ا | خترناها وانتقل الى | الطا | ئفة التي بعدها على الترتيب | وما | لرقيق ولا من يعا | ب |
| ل | فسقه حق والكافر لا بد | عة | يحضن مسلما واما الزوجية ففي | اشبه | الوجهين ان تزوجت بسو | |
| ع | م للطفل او قريب | وكان | من اهل الحضانة بعدها تحققت مع | ذلك | ولا حق لمسافر فاذا | ما |
| ص | ار المسفر لنقله فالاب احق | من | الام ثم من بعده محارم العصبة | ولخا | رج من المحرمية لا يمكن انتقال | لا |
| ب | مشتهاة ويعطى بنته با | مره | باب الجنايات ولا يقتص ممن بر | مس | جنون ولا من صبي | |
| و | مبرسم ويقتص من شرب محر | ما | اسكره والعبد والكافر لا يقتص | كلا | حد منهما من ضده ولو وقع | |
| ا | لعبد بمثله او رجل | كاذ | كافر بكافر فجرحه فعتق الجارح او دخل في | سم | الكلام ثم مات المجروح فلا | |
| خر | وج لهما مما | و | جب من القصاص ويجب ان يقتل ا | لمذكر | بالمذكر ويقتص للا | ب |
| م | ن فروعه ولا يقتص منه | ف | قتله فروعه ويقتل مرتد بذمي ومرتد بنمي | | لا عني المرتد اذ | ا |
| ثا | ر عليه ذمي فقتله فلا | سنه | في القصاص منه ولو ارتد المجروح ثم اسلم وسرى | به | الجرح فمات ففيه اختلاف | |
| م | عظمهم يسقط القصاص و | احدا | لقولين يقول اذ تم زمن الردة وجب | مو | جب القصاص العمد واما ال | |
| ال | خطأ لا قود فيها | وتما | ديها الدية كمن يرمى هدفا فيقتل والعمد هو اذا | | ل بقصده بما يقتل غالبا فمات | ت |

باب الجنايات

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لا | ما لا يقتل غالبا كعصر الا | نين | وضرب السوط وهذا ونحوه شبه عمد قالو | او | لا قود فيه و | لو |
| ج | نيه من الطعام قد | تقدم | له رجوع وعلم به او كان الحبس منه مدة | لا انا | من من موته فيها فلا ننجي | ه |
| م | ن القود بشئ ويقضى | السلطان | بالقود على من تمر زابره بغير مقتل فخد | ت | منها تورم والم حتى مات | لا |
| م | ن مات فقود الا اثر فذلك | الملك | يلزمهم دية شبه العمد ولو ضربه بمقتل | وجعل | يضربه حتى ذه | ب |
| و | جب القود وان حصل منه | ا | لقاء في نار او ماء مغرقة او عصر منه ا | لمذاكير | بشدة او اخنقه حتا | |
| ه | لك او القاه وقدا | شرف | به على ماء فالتقمه حوت او السعه عقربا | اذا | كانت تقتل غالبا فقط | س |
| و | جب ولو اكرهه الو | الى | او غيره على قتله لزمهما القود ولو | كان | المأمور بالقتل ذاه | ب |
| ا | لتمييز لزم الامر ولو | سر | رجلا او امسكه لمن يقتله فالقود | على | القاتل ولو شهد علي | ه |
| جا | ئز الشهادة عند من لا تر | دد | في شهادتهما فقتل بها فرجعا واقر | ا | بالتعمد لزمهما القود و | لو |
| ن | وجالة سما قاتلا | وا | لقاه في طعامه فاكله الرجل جاهلا فا | كثر | هم يقول لا يج | ب |
| م | نه قود بل دية وان | قام | واكرهه على اكله وجب القود ولو قتله بسحر | من | مثله الموت غالبا و | قع |
| ا | يجاب القود وان كانت | به | سلعة فقطعها رجل اعتد | احر | صا على برويه فمات فر | ض |
| ع | ليه القود وكذلك | ا | لانسان لو يشترك في قتله الو | وثلثة | قتلوا به جميع | هم |
| ا | ما اذا قطع احدهم | ايا | دبره وحزه الاخر قطع الاول | مثل | ما فعل وقتل الثا | ني |
| ل | كن شريك المخطي اذا | ما | تعمد لا قود عليه ويقتص من | رجل | شارك والدا وكذل | ك |
| ع | ندنا في شريك المقتص | وفي | شريك قاتل نفسه خلاف والاظهر فيما | يقال | وجوبه ولو داوى جرحه بمض | ر |
| ق | اتل وليس بموح كان | ذلك | شريكا لقاتله ثم القصاص في الطرف | له | شروط قصاص النفس فالجماع | ة |
| ل | و اشتركوا جميعهم | الوقت | وقطعوا بعضوا انسان قطعوه كلهم ان قطعوه | مر | ة واحدة والجروح مثل | ه |
| و | يجب القصاص فيما | قد | ر منها وهي الجروح التي تنتهي الضرا | يم | فيها الى العظم كالموضحة والجرح | في |
| ال | فخذ ولو اوضحه فسا | مت | الجرح بعض رأسه ومثله يستوعب | او | يزيد على رأس الشاج ف | لا |
| خ | لاف انه يوضح | عليه | الكل واذا زاد مستحقه اخذ ارشه ولوان | امرا | هشم من رج | ل |
| د | أسه بموضحة لا الشافع | رضي الله عنه | اوضحه ولخذ الارش للزيادة | ة | وقصاص الاعضا لاز | م |
| ش | للامثل لا بعدل عنه | فاجاز | وه في اذن ولسان وشفة وذكر وانثيين كما | يقال | ومارن وجفن و فا | ق |

باب عفو المقتص

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| م | قد ولشفتين وثغري والجا | ني | على الشفة العليا لا يؤخذ منه السفلى بد | لها | ولا يسار بيمين وان | فقد |
| ال | يمين وكذا عكسه | وا | لانملة لا تؤخذ بالاخرى ولا عين صحيحة بقائمة و | جا | ز اخذها بالصحيحة و | لو |
| جز | ع ربع اذنه واستا | م | في قطع مثلة مشاحة لم يجز بل يقتص | بر | بع الاذن وان | قد |
| ل | رجل انفا من اصلها فله | ان | يقطع مارنه ويأخذ الارش للباقي | وما | يؤخذ بسن سن غيرها | لو |
| و | لا اللسان الناطق باللسان | ا | للاخرس ويؤخذ لو قطع الزند وما | اشبهه | من فوق المفصل فليست | |
| بهـ | ذه محصل قصاص فان اراده | تبع | المفصل دونه وله الارش للباقي | والسا | لمة لا يؤخذ بشلاء | نعم |
| و | جهو العكس ان لم يخف د | ركا | ولا ذكر صحيح باشل وعكسه ود | د | جوازه والعين جعل | شو |
| ا | لصحيح وذكر الصبي يقطع | بر | الجميع من ذكر الكبير ولا بأ | س | باب عفو المقتص | بقود |
| جـ | عل القصاص للوارث لا | العا | قلة فهو مخير فان عفى على | كل | الدية وجبت | الدية |
| تـ | امة وان عفى ولم يتعرض | لى | ذكر الدية لم يجب وان عفى على | اسم | مال غير الدية لز | م |
| مـ | هما قبل الجارح في الاصح | وفي | ما اذا لم يقبل لا يسقط القود | على | الاصح وان عفا | |
| ا | حد الورثة سقط القصاص | هذا | وللباقين حقهم من الدية وليس لهم | فمل | القصاص ومعهم طفـ | ل |
| على | انا نحبس القاتل | العام | والعشرة حتى يبلغ ثم ان رضوا بمستوف والا القرعة | مها لا | بد منه وان و | قع |
| ا | حدهم بقتله فللباقين في ار | جح | القولين نصيبهم من الدية في تركته وقيل لا | يحسن | وجوبه الا على المبا | شر |
| لـ | قتله ولو سبق عفو احدهم فهذا | المحمل | نفسه ممن يجب عليه القود | فيه | سواء علم بعفو القري | ب |
| ا | م لا والصبي لا يحصل | الا | ستيفاء بقتله ولو مات الجاني قبل | الا | خذ بالقصاص او زال الطر | ف |
| ضـ | من الدية ولو عفى عن المبا | شرف | تعديه وقطعه العضو وقال هذا التا | لف | عفوت عنه ومن سرايته | حتى |
| مـ | نه سقط القصاص | وكان | ايضا دية العفو غير لازمة | و | اما الحادث بالسراية فالا | صح |
| ا | يجاب ديته ومن لا وارث له فا | مير | المؤمنين يتخير فيه بين القصاص و | ا | لعفو على الدية وما | |
| رو | ى عن احد من اصحابنا | الر | خصة في القصاص بغير امر السلطان و | لا | مام بل عليه افتقاد | الشـ |
| الـ | مستوفا به والمستوفي فلا ير | كب | هذا من لا يحسن بل يوكل ويشاحر ولا يلز | م | باجرة المستوفي بل | من |
| طـ | رف مال الجاني في ا | فخر | الوجهين ويستوفي في الحرم وفورا ويمهل | مثل | الحامل حتى تضع وخنا | |
| بـ | رضع اللبا ويغنيه وغيرها | الدين | يقضى ان رجلا لو قتل سهلا ثم | عمر | اثم النيل قتل يسه | ل |

تم

٤٥

باب موجبات الدية

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثم | الدية لعمرو و | السنبلي | من ماله فان عجز اقتسم بالسوية | وز | عموا انه لو بدد والاخر | سبق |
| ا | لى قتله اخذ حقه | وفي | الباقين الدية وان ارتد القاتل وصار | فر | اقتل للقصاص فقـ | ط |
| لا | ان الجديد يندرج ومن | المحرم | تفويت قصاصهم ولو قال اخرج يمينك فا | وما | له باليسار فقطعها | نظر |
| خـ | بره فان قال كان | من | ظني انها تجزئ او قال ظننتها اليمين للدهشة وما | اشبه ذلك | والقاطع ظن حسـ | ب |
| د | اها انها اليمين فاد | السنة | تا لزمه ديتها فاذا اندملت قطعت يمينه | و | اذا قطع ثم قتل | ضم |
| بـ | ينهما فيقطع ثم يقتل و | هذه | المقاصة في القطع المقدر اما الجرح | السا | رى الذي ليس مقدر | ا |
| و | هو كجائفة وكسر عظم فانه اذا | نوفي | المجروح واراد الوارث القصاص فلا تبا | بع | بمثله في الاصح بـ | ل |
| ا | لواجب حزه بالسيف و | الو | جه فيمن قتل بالحجر والخشب انه يقتل بمثله و | كل | تحريف وتغريق وصفـ | ط |
| جا | ر مجراه واللواط والجيا | ز | ة وان يقتص منه بالسيف فلا يتبع | اسم | القتل باللواط والسحر | ولا |
| تما | ثل بل يقتص بالسيف ولو | بر | يد المقطوع القصاص فاقتص ثم انت السراية | على | نفسه فلوليه حز وعـ | فو |
| على | نصف الدية ولا ير | تقي | لاكثر ولو مات المقتص منه فهدر ولو مات | فا | ن سبق المجني عليه | قا |
| ا | لعلماء اقتص منه كما حكم | الدين و | ان سبق الجاني فالسراية هدر ولو | عول | الولي على القصاص ينا | ب |
| لـ | طفل لم يثغر لم يمكن | ولي | الطفل ولكن ينتظر فان نبت | مثل | نابته سقط القصاص و | لو |
| حر | ز المنبت وفسد امر | الو | لي بالصبر حتى يبلغ باب موجبات الدية اذا | جا | وصبى على شفيا | |
| مو | ضع عال فصاح به | زا | بر او فاداه او شهر سلاحا فوقع فا | لو | انجب دية مغلظة وقيـ | ل |
| الـ | قصاص واما البالغ اذا نا | وره | بمثل ذلك فوقع منه وما | ت | فلا دية في الاصح وجـ | عل |
| كا | لبالغ مراهق تيقظ صحت | بعده | فوقع والمرأة اذا ذكرت بسوء | وطا | لب بها السلطان فالقت | جنينا |
| فـ | زعا ضمنه ولو طرح مسبعة | ولد | اصغير فلا ضمان ولو وقع بها رب منه في بئر قا | لو | اان وقع فيها | وهو |
| غا | بت البصر وتلقاه | نور | فلا ضمان وان كان اعمى او في ظلما | ت | ضمن ولو انخسف السقـ | ف |
| مـ | ن تحته وهو يرب منه فحكم | الدين | يوجب ضمانه ولو اسلم صبيا ل | و | امره بتعليمه ففرق فـ | ى |
| الـ | بحر ضمنه ولو حفر | على | ملك غيره ابارا عدوانا ضمن | كلما | يقع فيها ولو حفر | ها |
| شـ | يأ في دهليزه او دهليزا | بر | له صغير ودعا بالبسا فوقع فيها ضمن في | تشبه | القولين ولو جعـ | ل |
| قـ | ناة في طريق ضيق وان | عم | ها المسلمين ضمن الواقع فيها فان اتسعت وحفر | ذلك | باذن الامام او لمصلحة | نعم |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| د | فع الضمان عنه والا ضمن | وفی | جمیع ما یتولد من جناح الی الشارع الضمان | و | المیازیب یجوز اخراجها و | قید |
| ا | لجواز بضمان التالف بها وفی | ستة | الجحر لو وقع الخارج منها علی انسان دون | الثا | ب فضله وجبت الدیة بهذا | |
| ج | میعا وبالکل یجب النصف والا | ربع | والجدران المائلة اذا کانت | من | وقت البناء | الموس |
| ت | صورت مائلة فی الشارع | و | جب منها الضمان کالجناح وان حدث المیل | وهو | مستو فلا ضمان اصلا | |
| من | ذلك ولو طرح قشور | ثما | ر وبطیخ ونحوه فی الطریق ضمن | کل | ما تولد منه ولو تعاقب | |
| ا | لسببان بان حفر احد الجا | نین | بئرا عادیا ووضع اخر حجرا فتعثر بها | ا | نسان ووقع فی البئر | جح |
| ع | ندنا السبب الاول و | سلم | الضمان علی واضع الحجر فان لم یتصف بالتعدی | سم | التعدی ضمن الحافر | ثم |
| ال | حجر لو عثر بها غیر الذی | القا | ها فتدحرجت فعثر بها اخر فالضمان | علی | المدحرج ولو عثر | من |
| خ | رج یمشی بنائم او قاعد فالقا | ضی | یهدرهما انیاتا والطریق متسع | مثا | نیه وان ضاق فالقاعد فیه | |
| م | هدر لا العاثر به الا فی | وجیه | ضعیف والوقف مضمون لا العاثر فی القو | ل | الصحیح وان اصطدما | فی |
| و | سط الطریق فماتا فالحکم | الدین | وجب علی کل نصف دیة فان کان | الفعل | عمدا فتغلظ وان لم تقصد | ا |
| ا | لاصطدام کما اذا الهیا با | لنظارة | فاصطدما فمخففة وان اصطدم حاملات | فات | الجنینان فنصف غرة لکل | |
| لا | زم لکل وان جر | ی | الاصطدام فهلک دابتاهما فالحکم | المستعمل | فی ذلك ان کلا یلزم | م |
| ق | یمة نصف دابة الاخر | وز | عموا انهما لو کانا صبیین او مجنونین لزمهما | والام | فی سفینتین وقع التلاقی | |
| ب | ینهما فاصطدما یراعی فیه ما | یرا | عی فی الدابتین والضمان کالراکبین و | مثل | حجر المنجنیق اذا عا | د |
| ض | ررة علی احد الرماة | ثم | مات وعدد الرمیات عشرة مثلا لا | یزید | ولزمهم تسعة اعشار دیة و | اذا |
| ما | اجتمعوا علی البئر و | حصلت | زحمة فسقط واحد فجذب ثانیا والثانی ثالثا | وا | لثالث رابعا وماتوا فللاول | |
| ا | لثلثان من دیته تغر | زله | علی الثانی والثالث ویسقط الثلث و | وجب | للثانی مثله علی المتقدم | |
| ج | زء والثالث مثله و | خرج | للثالث نصفها علی الثانی فقط وقیل علیه ثلث | ونحوه | علی الاول وللرابع | مجرد |
| تما | م الدیة علی الثالث | لاجل | انفراده به وقیل علی الثلاثة اثلاثا | و | اذا تقابلا وجب کما | ذکر |
| ع | لی کل دیة الاخر کما فهم | ذلک | **باب الدیات** الدیة | التا | مة لحر ذکر مأتا بعیر لکنها | |
| ف | ی العمد وشبهه مثلثة ثلاثون | من | الحقاق وثلاثون جذعة واربعون حقة | والتو سع | فی السن بشرط بل الحمل وتغلظ | |
| ب | هذه من ابله والا فغالب ابل | البلاد | وفی الخطأ مخمسة بنت مخاض وبنت لبون من | کل | عشرون وعلی هذا الجذ | ع |

باب الدیات

ثلثة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ثلثة | انواع ابن لبون | ثم | حقاق وجذاع ثم القتل فیما وقع علیه | اسم | حرم مکة خطأ کان ا | و |
| ع | مدا فدیته مثلثة و | عاد | له الخطأ فی اشهر الحرم او | علی | ذی رحم محرم فانهم اوجبوها | |
| ال | جمیع اثلاثا وهذا الحکم لا | یور | ده لحرم المدینة فی اصح الوجهین وان | وزن | عوضا عن الابن فله ا | لرد |
| و | الاخذ ولا یلزمه فی حکم | الدین | اخذ معیب ولا مریض واذا عدمت الابل | فعلا | المعول فیه خلا | ف |
| ذ | کو فی القدیم الا قصا | علی | الف دینار وفی الجدید وهو الصحیح القیمة وا | ن | علت و | اذا کان |
| ا | لمقتول انثی او خنثی و | حاله | مشکل ففیهما نصف الدیة ولو قتل یهودی او نصرانی | فعلا | قاتلا عمدا او خطأ و | جب |
| لکل | ثلث دیة مسلم تسلم | الی | وارثه وامرأته نصفه والمجوسی والوثنی المستأمن | او | من لم یبلغه داع | ی |
| الا | سلام ثلثا عشر مسلم ثم | ان | الجنین دیته غرة اذا احدثت به | فعلا | قاتلا قیمتها | ثم |
| ع | شر دیة امرأة وعلی من ا | هلك | جنین یهودی او نصرانی غرة کثلث غرة یکو | ن | لمسلم وان خر | |
| ق | بل حیا فمات فلا خلاف فی | فی | وجوب دیته کاملة وتقبل الغرة | اذا | کانت لم تهرم ویر | د |
| ص | غیر لم یمیز فان فقدت فا | شهر | الوجهین وجوب خمسة ابعرة ولا یقبل فی الغرة ما | کان | معیبا وحصینا والمتصر | ف |
| و | رثة الجنین والشجاج | جما | عة الحارصة تشق الجلد والدامیة تدمیه و | ا | لباضعة تقطع اللحم والمتلاحمة | و |
| ه | دیعوض فی اللحم والسمحاق | د | ون الموضحة یبلغ الجلدة بین اللحم والعظم و | لنو | ضح الموضحة وهی ضر | ب |
| و | ضح العظم والهاشمة الذ | ی | تهشمه والمنقلة تنقله والمأمومة تبلغ دو | ن | الدماغ بجلده والدامغة التی | |
| ب | لغت الدماغ ثم | الا | قتصاص لا یجب الا فی الموضحة واما غیرها فما | منه | قصاص وقیل یجب بالشجا | ت |
| ا | لتی قبلها سوی الحارصة والا | خوی | لا یجب فیها ولیست الموضحة فی الرأس | زائدة | علی التی فی البدن بل الکل | |
| جا | ئز القصاص فیه ویجب | سنة | القصاص فی اذن قطعه ولم یبنه واما | مثل | الموضحة فانها | لا |
| ت | نقص عن الابل خمس ولو وضح | سبع | موضحات فلکل واحدة خمس وفی الایضاح ان | سعد | لها ثم وجب عش | ر |
| من | الابل والا فخمس | و | فی المنقلة خمس عشرة والمأمومة ثلث الدیة ویوجبو | ن | فیما قبل الموضحة فبنسبته منها ان | ضاف |
| ا | لمعرفة بر والا فحکومة و | تما | لجائفة وجوب ثلث الدیة والموضحة الکبیرة | و | الصغیرة سواء ولو وسع | فی |
| ع | رض موضحة غیر الجا | نین | فثنتان وان وسعها الجانی فواحدة ولو | زید | فی الجایفة فکزیادة الموضحة | |
| ا | لا ان الجایفة اذا نفذت | والتمر | ت بطنا وظهرا فهما جایفتان و | ان | قطع اذنیه او اشلهما | فذلك |
| له | دیة وفی احدهما نصف | القاضی | نصفها ویجب فی کل عضو مثل حکومة | وبرهان | ذلك واضح و کل | من |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خ | ج عينا فنصف دية وان ا | شرف | بر على العلوم يعم فيسقط والاعمش والاخفش | و نحو لم | سواء اذا لم ينقص ضوؤ | هما |
| م | نه فان نقص قدر فى حكم | الدين الغار | قيا لحق فان لم تسقط فحكومة | والعا | مة من الاصحاب يوجب | لكل |
| و | احد من اجفان الملسا | ف | ربع دية وفى المارن وحده الدية | شر | عوها اثلاثا للحاجز والطرفين | |
| ا | ن الاحشم كالصحيح | وز | عموا ان فى الشفتين الدية وكذا اللسان ناطق وفى | كل | اخرس حكومة اما الطفل | ان |
| ل | م يكن قد مضى من عمره ما | يرا | ويعرف به امارة النطق واشارته قالو | ا | يجب الدية فيهما | |
| ع | ليه وان نبتت فى | اشهرا | لوجهين ثم فى كل سن خمس ابعرة الكل سواء | سيجن | للنظر فى التفاضل وقد | |
| ص | وصوا بالتسوية بين كاسر الظاهر | و | بين من قلعها من السنخ على الصحيح و | صيرا | لو اجب فى سن زائدة ا | و |
| ب | ها حركة و قلقلة | سهتم | بها بطلان المنفعة حكومة فان نقصت فكسا لمة فى | اسما | الوجهين فان عادت سنه | |
| و | كان متغور فلا يحكم | القاضى | ان عودها يسقط الارش عنه وان كان | واحدا | لم يثغر اسقطه ولو | |
| ا | بان اللحيين فدية وفى | وجيه | ضعيف يندرج فيها الاسنان فوا حدهما نصفها و | مثل | ذلك اليدان ث | م |
| ل | يد نصف دية فى قضاء | الدين | ان قطعها من الكف وان قطعها من فوق | حض | ديتها وحكومة ثم من | |
| ك | ل اصبع عشر من ا | بن | لبون وغيره كنسبة الدية والانملة ثلثها واما | مو | جب انملة الابهام بالقطع | |
| ف | نصفها والرجل كاليد فى | عبا | دتهم وفى حلمتى المرأة الدية وفى حلما | ت | الرجال حكومة ومتى | |
| و | جد كسر الصلب ويا | س | من المشى وجبت الدية فان فقد المشى | و | النكاح فديتان وفى عض | |
| ا | لذكر الدية سواء كان | ف | صغيرا او كبيرا او عنينا والحشفة كالذكر و | معد | م بعضها يلزمه القسط ويجب | |
| ع | لى نسبتهما والانثيان قد | د | وافيهما آلة كالذكر وفى الاليتين دية وكذا | ى | سفرها والافضا | |
| م | وجبه الدية والنظر ان ا | مضا | ه واذهبه وجبت الدية وكذا السمع وفى | كر | وان فى الشم الدية وقيل | |
| ا | لحكومة وهو نصف يوجبو | ه | فى الكلام الدية وفى بعض الحروف الوجو | ب | بالقسط والصوت وفى دية الا | |
| ن | وجبها فيه ففى الذاهب | من | الكلام والصوت ديتان وفى الذوق دية | و | كذا المضغ والافوه منا ولو قطع | |
| م | ن رجل وجل اطرافا | عامة | لديات ثم سرت الجراحات | ما | ت سقط عنه وصا | د |
| ا | لواجب دية ولو توصل هو | الى | حزة عمدا والجرح لم يندمل فكذلك فى | اسقم | الوجهين لا غيره والقو | ل |
| ف | يما لا تقدير فيه | ان | الشرع يوجب فيه الحكومة و | ذلك | جزء ونسبته الى الدية لا | |
| ع | ضو الجناية نسبة | ما | نقص من قيمته لو كان رقيقا | وال | تقويم هذا لا يجوز | |

باب العاقلة

باب كفارة القتل

باب البغاة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | لا يبعد الاندما ولما | الواجبات | الاطراف مثل السن والاصبع والموضحة فا | علم | ان للمرأة نصفه وتلز | م |
| ال | قيمة فى الرقيق واطراف | الو | قيق لها من القيمة نسبة الدية فى الحر فينقصو | ان | يجب له قيمتان فاكثر ومثل | |
| ع | مده خطاؤه وجنين | ا | لامة يجب فيه عشر قيمة الام والله تعالى | ا | علم باب العاقلة واليها بقوله | |
| د | جوع ما يجب لا فرق بين الو | بع و العشر | والدية الكاملة فى الخطأ وشبه العمد | سما | العلما ما خلا اصلا | |
| و | فرعا من العصبة عاقلة والد | ين | يلزمهم الاقرب فالاقرب والنسب من | الا | بوين يقدم وفى قول | |
| ض | عيف يستويان ثم الموالى | من | بعدهم وهم المعتق ثم عصبته من كان | نبيا | عن البلد او حاضرا هنا | ك |
| م | بهم سوى ثم قضى الشرع فى | عرفه | بالانتقال بعدهم الى معتق المعتق وعاقل المرأة | عليهم | عقل عتيقها وليس | |
| ا | لعتق لمطالب وان قدر فى | سنة | الله فان عجزت عاقلة المسلم فبيت المال | والسلام | فان عجز ولم يقع | |
| ي | ومئذ منه سوى عشر جعلنا | تعين | على الجانى وان قدم فالكل عليه فى ا | لا | ظهر واما دية النفس فهى | |
| ت | وجل ثلاث سنين | تم | يلزم العاقلة كل سنة ثلث الدية و | تنصرف | دية الذمى | ف |
| ف | رد سنة او جبوا ذلك | سهتم | ادا على الاصل والمرأة فى سنتين ثلث الدية | فى | الاولى والباقى فى الثانية والرقيق | |
| ق | الوا الاظهر ان | القاضى | يلزم العاقلة من قيمته كل سنة قدر ثلث الدية | المعر | وفة نحى لا ثنين خلاف | |
| ال | اصح ان ثلاث سنين منتهى | الاجل | والاطراف فى كل سنة قدر ثلث الدية الموصو | فة | والاجل من الموت وتقضى | |
| ف | ى الاطراف ان اجل ار | شها | من وقت الجناية ولا يعقل فى الجنايات | الا | حر بالغ عاقل ثابت | |
| ا | لغنى ذكر موافق فى السلو | ب الدين | فاذا فقد واحد من هذه الشروط وهى | ستة | لم يلزمه وان كان الاخذ منه | |
| ظ | لما ثم تقدير الشرع | احمد | الامور الغنى نصف دينار والمتوسط ربعه ومن عجز | منهم | اخر الحول اسقطنا | |
| ه | ذا عنه وان استغنى او بلغ | بن | اخر الحول لزمه باب كفارة القتل و | نو | جبها على من احدث قتلا | |
| و | عم ذلك الصبى والمجنون و | الو | الد والعبد والذمى فى خطأ وعمد وجنين وذمى وا | حا | ط بكل شريك كفارة وهو | |
| خ | لل الظهار استوى كفارتيهما بل | ذ | عموا ان فى الاطعام هنا قولين اظهرهما عدم | و | جوبه باب البغاة الاصل | |
| ت | حريم مخالفة السلطان والتحذير | ير | منه والبغاة مخالفوه بخروج وامتناع فى | هودا | ع الى حق ان كانوا فى | |
| ل | فيق شوكة متأولين | تقى | وكان فيهم مطاع والانقطاع طريق | ولو | ترك قوم الجماعة فى الخ | |
| ال | صلوات وكفروا السلف فى | الدين | وظهروا اعتقادات الخوارج وهم | طا | ئعون لم يقدموا على | |
| ق | تال لم نقاتلهم ويحكم | ف | شهادة البغاة بالقبول ونفذ قضاء وهم بالحق | وصا | دما اخذوا من الزكاة | و |

فمن ذكر فما عليهم
في التعارف

وفي الثانية في وجه يجوز
وفي الدفع دخول الواو

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | لجزية بجزيا في الاصح و | الثاني | لايجزئ وكذلك اذا اقاموا حدا صح و يحكم | لحا | كم بكتاب قاضيهم بالبينة واتلا | ف |
| ب | اغ على عادل وعكسه | من | المال وغيره في القتال لايضمن وفي غيره يضمن | و | يبعث الامام قبل القتا | ل |
| هـ | ؤلاء البغاة امينا غير | صفر | من النصيحة يسالهم ما ينقمون فان ذكروا مظلمة ولو | شيبا | رده او شبهة ازال | ها |
| ف | ان اصروا على الخلاف قات | سنة | الله جوزت قتالهم فان سالوا امهلهم | و | الامام ذلك جاز ولا يقت | ل |
| م | تخنهم ومدبرهم ولا | احد | يتبع مدبرهم ولا يطلق اسيرهم شرعية | محمدا | لى ان يفترق كلمتهم ولا ان | ث |
| ت | طلقها بعد الحرب في اقو | ى | الوجهين ورد اليهم سلاحهم اذا اصلحوا و | صلى | على قتلاهم ومانعهم ونف | ي |
| ذ | ماهم كالنار والمنجنيق | و | نحوه لا نقاتلهم به فان دعت ضرورة الباحة | الله | حينئذ وهذه الغين | ة |
| لا | يقطع زرعها ولا | تسعير | في اتلاف مال الباغي والاستعانة | عليه | بمعتقد قتله مدبرا من الحو | ق |
| ك | ما لانستعين بكافر ولو | الى | يقضي بنقض عهد ذي اعانهم عالما بالتحريم | و | يجب الضمان على فئتين اقتتلو | ا |
| ف | ات بفعل بعضهم حق | الا | خر ومن قصد قتل رجل بين الناس وجب | عليهم | الدفع عنه وليـ | س |
| ع | ليه الدفع عن نفسه وا | ن | قصد قتله كافر وجب عليه دفعه عنه | و | كذى بهيمة ويجب ان يحم | ي |
| ن | ساه وحماة المال جائزة | و | الدفع اذا امكن بادنى الوجوه ترك | اسما | ها واما قتله فهو | يجوز |
| ا | ذا خشي عدوانه و | لم | يندفع الا بالنفس ولا ضمان فيه احد واهل | البلد | وغيره لو نظر | في |
| س | جف او غيره فركوه ولم | يزل | نظره وفي المكان حرمة ولاحرم له فيهن كا | ن | رمى عينه جائز | ا |
| م | نه ولا يعاقبه | السلطان | ولو اعماه او اصاب بقريب عينه فمات مهدور | الكل | بقول اسنان لعاض يجع | ل |
| هـ | درا ان بدرت بنزع يده ولم | الملك | في فك لحيته اذا لم يقدر على التخلص | لا | بذلك منه ولا يصير | |
| ف | ي ذلك ضامنا ولو عدت على | الا | نسان بهيمة دفعها عن نفسه بالقتل ولا ضمان اذا لم | يتصرف | الابه باب المرتد | |
| ا | لرجوع الى الكفر بعد | شرف | الاسلام بنية او قول او فعل رده لا خلاف | في | ذلك فمن حذ | ف |
| م | صحفا في قاذورة | قاصد | الكفر ويكفر من علق كفره والسكران اهل | المعرفة | يقول اذا ارتد | |
| ت | صح ردته واما الصبي فلا | طريق | لصحتها منه وكذا المجنون والمكره و | الا | سير مع الكفار ويؤمر بالدل | يل |
| ق | بل القتل في الاسلام و | الحق | ان استتابته في الحال وقيل ثلاث | وا | ذا رجع الى الاسلام قبلنا | |
| ا | لرجوع فان عاد ثم اسلم | حسن | تعزيره تاديبا وان اصر عليها | سطا | لى الامر عليه بالقتل و | لو |
| د | ماه بالقتل غيره خالف | الطريقة | وعزم وملك المرتد حال الارتدا | دابقا | ؤه مختلف فيه والذي قطع | |

باب المرتد

صحته



والطبول ثم وقليد
ابر

علامات والعلامات على الاو
لايجوز دخول الالف عليها
ويجوز دخول

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | صحته انه موقوف ويعطي | امينا | وكذا تصرفاته ما اقدم عليه منها | وبدرا | ليه فهو موقوف كما هو | على |
| و | جود اسلامه فان اسلم فهو | على | ملكه والا زال وان صلى في دار الاسلام | وهجر | ه لم يحكم باسلامه اما | |
| ا | ذا صلى بدار الحرب عند | الخليفة | او وحده فانا نحكم به وولد المرتد مسلم | ا | ن كان احد ابويه موا | ليا |
| ل | لاسلام وان ارتدا معا | الى | الكفر فولدهما مرتد على الاظهر وقيل مسلم | و | قيل كافر باب الجهاد من | وا |
| ط | ائفة الكفر بداره وعجز | ان | يظهر الدين لزمته الهجرة ولا تغد | حنينا | وشوقا الى الولد عذر | ا |
| و | العاجز يعذر والقادر ان | يوفي | مات ظالما لنفسه والجهاد فرض كفاية | و | يتعين بحضور الصف والغزو والمتن | |
| ي | ستحب فيه ببال | رضي الله | ولا يجب الجهاد على من هو في | حجرا | لصبا والجنون والعلي | ل |
| لا | يجب عليه بل يسقط | عنه | وعن مريض واعرج واقطع وعبد و | فا | قد اهبة ثم الدين الحال | على |
| ا | لغني يحرم السفر سوا من | يوم | الجهاد او غيره ويقول للغريم ا | بالجناد نبت | ومن ابواه مسلمان او احدهما | لو |
| ثنا | عزمه الى | الق | هب للجهاد لم يجز له حتى ياذنا له | في | ذلك فان احاط عدو بنا | |
| ل | زم القتال الكل وما | سع | احد التخلف ويكره غزو بغير اذن الامام ومن | صرف | الامر اليه | ولا يجوز دخو |
| م | خذل بيننا ولا يحل | عشر | ه مرجف وان استعان بطائفة كفر اشترط في | هذه | الطائفة ان يكونو | ا |
| و | فنبين لا يجبنون وفينا | من | القوة ما نقاوم به لو التاموا | و | نبدأ بالاهم او | لا |
| ف | اولا ويحرم علينا الفرا | ر | فان زادوا على مثلينا جار فان | ترك | احد منا القتا | ل |
| ي | ريد الانحراف اليه وتر | بيع | العودة والتحيز الى فئة يريد | صرفها | اليهم مستنجدا فلا خلا | ف |
| ا | ن يجوز ولا نخمس | الا | سلاب للقاتل الا اذا غرر بنفسه | فافيهم ذلك | اما اذا وقع | ى |
| ل | ه وهو اسير ومثخن فلا يتنا | ول | من سلبه شيا وكذا الوردماه من الصف | واعلم ان | ازالة امتناعه كالقت | ل |
| م | وجبة لسلبه وذكروا | في | وجوب السلب له بالاسر خلاف و | للمصا | ب بالاسر احوال فالصب | ي |
| د | ون ابويه يلحق السابي في | سنة | الله ويتبعه في الاسلام ان كان مسلما وتعود | دد | فيقا ومع ابويه او احد | هما |
| يد | ين بدينهما ويسترق بالاسر | تلا | نه الصبيان والنساء والعبيد ويجتهد الامام في احوا | ل ا | لاحرار الكاملين وهـ | و |
| ا | ن يفعل بالمصلحة فيما تحت | ت | من القتل والاسترقاق والفدا فيهم | فما | كان اغبط فلا | يجوز |
| ب | طلانه فان بادر | و | اسلم قبل ان يرى الامام رايه فيهم سقط القتل ولو | كان | يحاصر قلعة فان ارادوا الد | خول |
| تحت | حكم مجتهد جاز ويكون | ثما | ن حابا ويردون ما منهم ولو تولوا | منها | على حكمه ثم اسلموا قبل ما | |

[illegible]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| د | سم الحاكم امره لزما | ن | يعصم دماؤهم واموالهم فان سلموا بعد | توكيد | الحكم سقط القتل |
| و | بقي ما سواه فاذا | ما | دلنا رجل على قلعه وكان قد شرط اذا | فعل | ان يعطي من بعض |
| فيـ | هما او غنيمتها جار | به | منها فخرج منها جارية اعطيها ولو عدمت او | كان | فيها جارية ثم |
| ا | نها ماتت قبل الور | و | ذو الظفر فلا شي له او بعد الظفر فالبدل | منصو | ص على وجوبه |
| لـ | ه وهو اجرة المثل ويجوز | دفن | بياههم وهدم ديارهم وتخريبا | با | دهم وعضد اشجارهم وقطع |
| بسا | تينهم الا اذا كانت | فى مد | ينة او مكان يغلب على الظن انا | نحو | زها فيستحب الترك والو |
| يـ | نهى عن قتل البهايم الا لماما | دسة | الرجال عليها بالقتال والات | ضرب | اللهو تكسر كلها الا |
| طـ | بل حرب وما يوجد من | الا | نجيل والتورية معهم مزق وحا | ضر | الماكول يوكل وكذلك |
| ما | ذبح لاكل و | شر | ب لا ضمان فيه وغير ذلك من خدم | با | رجاعه الى المغنم واذا اسر |
| قـ | وم كفار عند المسلم حكم | فيه | بانه لسيده **باب قسم الفيء** | و | الغنيمة ما ادركه |
| طـ | لاب بايجاف خيل و | فى | ذلك يقع الملك للغانمين بانقضاء الحرب و | اذا كا | نت فيها سلب فهو |
| و | اجب للقاتل ثم | تعز | ل الغنيمة خمسها فيقسم خمسها احدها المالك | بمعنى | المصالح كسد الثغور وباقيها |
| عـ | لى بني هاشم وبني المطلب | المحر | م عليهم الزكاة للذكر مثل حظ الانثيين ثم | ان | غنيهم وفقيرهم سواء في الكل |
| و | الثالث اليتامى يقسم على د | وس | الفقراء منهم والرابع المساكين ثم ابن السبيل كذا | فعل | الائمة واما باقي الاخماس |
| فيـ | قسم في الغانمين وامروا | برد | الراجل الى سهم والفارس الى ثلاثة قالوا | و | لا يسهم لغير |
| الـ | خيل فلو كان راجلا فرزقه | الله | فرسا قاتل عليها وبقيت الى | ان | انقضت الحرب وهي معه |
| كا | ن فارسا ولو عار فرس من | مثواه | حتى انقضت الحرب عند صاحبها راجلا واذا | فعل | ذلك على فرس لا ينفع |
| مـ | نعت ومن حضر الحرب | وجعل | يقاتل حتى قتل ومات بعد انقضائها استحق وان | كان | قبل انقضائها لم يحصل |
| لـ | ه شي وكان نصيبه | الجنة | ويرضخ لصبي وامرأة وعبد ويكون الذمي | جاويا | مجراهم ان حضر باذن ولي |
| ا | لامر بلا اجرة وكذلك | ماوا | في مع العسكر من خدام وتجار ويعطون | على | الاظهر كغيرهم اذا |
| حـ | ضروا وقاتلوا والذي جعلو | ه | رضخا يكون من الاخماس الاربعة وفاعل | الغلو | المولم لكفار يبغل والنغل |
| ذ | كروا انه زيادة تشترط | وكانت | تؤدى من سهم المصالح والفيء ما ياخذه | عمل | فنال من مال الكفار كغرض |
| ما | ل الجزية والخراج | نفسه | وما هرب عنه الكفار فزعا منا و | مثل | مال من مات من اهل الذمة |

باب قسم الفيء



[illegible]

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ضا | يعا الاوارث له فيخمس و | نوثر | بالخمس اهله المذكورين ويصرفه على وصف | الفصل | المذكور في الغنيمة ويجعل |
| ما | عداه للاجناد واهل | العلم | امروا بوضع ديوان وعرفا ويعطون كفايته | مثل | ويقدم في الاسم والعطا |
| و | جاز قريش وهم ولد النضر | والعلما | يرون الاقرب فالاقرب من رسول الله | اعجب | ويستوي اليها شميون والمطلبيون |
| و | لو استويا في نسب واحد | كان مستعينا في العلوم | قدم على الاورع ثم الانصار ثم | عرب | سائر العرب بعضهم |
| فـ | ي بعض ثم العجم ومن كان | مشغولا | بالجهاد وما ت اعطى ورثته كفايتهم غير | زيد | عليها ومن ابتلي بدا |
| يـ | بطل منفعته كامراض | بها | صار زمنا او عمي او جن او طال به | عمرو | هرم وهو جدي لم يسلخ |
| ا | سمه من الديوان و | رحمه الله تعنتا | يرى ان عقار الغني وقفا | خالد | يقسم عليهم كما وصفت |
| لك | **باب عقد الذمة** | ثم | ضرب الجزية لا يصح الا مع ولي الام | فيكون | عقدها لمن اتبع كتابا |
| سو | اليهود والنصارى ومن | ثبت | لهم صحف يتمسكون بها كصحف ابرهيم و | ز | بور داود وللمجوس وكذا من |
| ر | جع اباؤه قبل الفسخ و | البيعة | الاسلام الى دين اهل الكتاب لا من | يد | خل بعد الفسخ يقينا ولا |
| يـ | صح عقد الجزية | يومئذ | منهم الا بالتزام احكامنا وبذل الجزية | في | كل عام واقل ما يجري |
| عـ | ن الواحد دينار ولا ياخذ | لولده | الصغير منه شيا ولا كبر بالتراضي يجوز وان | موضع | الجزية خراجا و |
| ا | ن يجعلها زكوة يضعفها وصاحب | السيف | هو الامام او نائبه لو الزمهم بعد | نصب | الجزية ضيافة من جبا |
| سـ | نين بلدهم من المسلمين | الماضي | والراجح جاز ولا بد ان يذكر عدد | لا | صناف فرسانا ورجالة وبيين |
| مـ | قدار الطعام وجنسه و | في | المدة ايضا ولا يزيد على الثلاث ويوزعونه | عونه | على غني ومتوسط وليست |
| هـ | زه على فقير ذي | اعدا | م ونيز لونهم في فضول مساكنهم والتبين | المعول | واجب والصبي لا يدخل |
| ا | ذا بلغ في عقد ابيه والجزيه | | الاعقد يستانف له وتوخذ الجزية برفق | فان | القول بالضعيف ضعيف ولا |
| صـ | ادف لها عن الراب | والو | جيع لزمن والهرم وكذا الفقير فاذ | اذخلت | مدة التسليم وهو بلا ما |
| لـ | زمت ذمته ولا يلزم صغير | ابل | لا تلزم النساء والخناثى والعبيد | الا | رقا والمجانين فان خفت |
| مـ | دته مثل الجنون | الها | جم ساعة وترتفع وجبت والا وجبت اذا توفى | لف | ايام الاقامة في الاصح |
| و | يصان الذمي من الباطل | طل | وتضمن نفسه وماله وان ارتكبوا حراما | واللا | زم فيه الحد واعتقدوا تحريمه |
| كـ | الزنا اقناه عليهم | على | شريعتنا وان اعتقدوه غير حرام | م | كالخمر فلا توجب عليهم |
| ذلك | واذا احدث دار | او | جب ان يحفظها عن بيوت المسلمين علو | اونو | جب عليهم ان لا يركبوا |

باب عقد الذمة

[illegible]

[illegible]

باب الهدنة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ف | وسا لابغالا ولاحمارا و | ليا | مرهم الوالي ان يركبوها بالاكف وكا | نت | ركبهم خشبا | قاد |
| ع | بروا طريقا في بر | ية | او بلد الجاناهم الى اضيق الطريق وحملوا الزنانير و | رفعت | فوق ثيابهم واذا | دخل |
| و | احد الحمام منهم وهو | مو | رد للمسلمين وغيرهم وتجرد عن ثيابه جعل | الوعل | ذلك خاتم حديد في رقبت | ـه |
| ل | يعرف ولا يظهرون خمرا و | لانا | قوسا وخنزيرا وعيدا وليس اظهاره نقضا | و | اذا قاتلونا او منعوا جزية | فهو |
| ن | قض فيقتلهم به | السلطان | ولو طعن الدين او صار عينا لكفار | نفبت | بيننا وبينهم حرب او لبس | س |
| سو | على مسلم ففتنة او دعى | الملك | في مسلمة وطئها او زنا بها او سب النبي صلعم | المفعول | ان كفا قد شرطنا | نا |
| ف | ي العقد النقض به كان | الناس | للحق بحكم نقضا والا فلا واذا نقضوا | فعقود | الخيار فيهم للامام | قد |
| ج | عل لاصحاب من | احمد | الواجبات منهم حدث الكنائس وكذا تقريرها في | اعجب | الوجهين الا في بلد | ان |
| ن | فتحها صلحا على ابقائها | تخشد سكن | عنهم النهي ويمنعون سكنى الحجاز وهم ا | الضرب | والسير في طرقا | تر |
| س | وى حرم مكة ما بقى | الدهر | بل نبش موتاهم منه والحجا | زيد | خل فيه مكة والمدينة وكذا | ا |
| ال | يمامة وقراها ويعزرون | بعد | العلم بالمنع اذ دخلوه بلا اذن واستوى | عمرا | ن الحجاز وخرابه و | لو |
| ط | لبوا الاذن ليجازه | اضطر | دنا اليها او لمصلحة او رسالة اذن لهم وليس الاذن | خالد | بل ثلاثة ايام ويتحو | ل |
| و | اما الحرام فلا يؤذن في اقتر | ايدو | ان اذاهم عدو وجب الدفع عنهم كما ذكر | وا | باب الهدنة والاما | ن |
| ي | جوز عقد الهدنة متى | صار | فيه مصلحة وامرها الى الامام فان ا | عجب | الامام فعقدها وهو | مذ |
| ل | ه قوة عليهم كان | الحق | جوازها اربعة اشهر فان ضعف جاز | ضرب | مدتها عشر سنين لا اكث | ر |
| و | الشرط الفاسد اذا جرى | في | عقدها ابطله كما شرطوا ان | زيد | ايعقد جزية بدون مثقا | ل |
| م | ثلا او على ان | تصا | لحهم على عفا بعضهم او على ان لا يطلق لنا | عمرو | او على مال او ف | ر |
| ت | ؤخذ منا فهذا لا تحكم | بر | صحيحا ولو شرطا ان للامام نقضها متى حا | خا | طره اليه جاز ف | لو |
| قا | لوا وان انت داركم رجال | وحملت | انفسها على اتباعكم رددتموهم عن | لدا | رجاز الا النساء فمحا | ل |
| ر | دهن فلو كانوا صغا | را | او مجانين او عبيدا او بلا عشيرة لم يرد | فافهم ذلك | ويجب الكف عنهم فلو | تا |
| ب | عضهم بموجب للنقض ولم | يانة | الباقون ولكنهم سكتوا ولم ينكروا | هذا | نتقض فيهم فان انكروا | س |
| سا | لمناهم اذا اقامت الحجج | البيض | براءتهم وبقائهم على العهد ويوجب | خر | وجهم من العهد بتجسي | س |
| و | دلالة حربي بعورة وقيل و | ا | حد منا فيجوز قصدهم ونيتهم بالجيش | المجموع فا | مراقدهم ومن لم يخن | يعد |

في عقدة

[illegible]

[illegible]

باب حد الزنا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| في | عقدة بل خفنا ذلك في | المنصو | ب للامام نبذ عهدهم والتشنشنة | الوزير | والدين الاسلامي يلزم | ـه |
| ا | بلاغهم المامن ومن استجا | ده | مشرك او عدد محصور من المشركين فامنهم | وكان | مسلما بالغا عاق | لا |
| ل | زمنا انفاذه ولا يجا | وز | اربعة اشهر وسواء الامام وغيره وبعد | النزاع | يبلغ المامن ولا | يجو |
| ه | ذا الجاسوس ومن خا | فت | الائمة مكايده فصل والصحيح | من | الوجهين في ارض السواد انه | ا |
| ذ | من فتحها وقفها القا | يوم | الفتح بامر المسلمين وفي الخراج الذي | تا | خذه الولاة منها ا | خلاف |
| ج | زم الاكثرون تدقيقا وانجا | ثامن | اصحابنا انه اجرة وانها تصرف في تا | ليف | امور المسلمين ومصالحهم وحده | ا |
| م | ن حديقة الموصل الى الا | ر | ض المنتهية الى عبادان طولا وعرض | ذلك | من القادسية حتى تص | ل |
| ح | لوان كل ذلك لا يجوز فيه | بيع | ولا رهن باب حد الزنا من زنا | في | حالة التكليف بلا اسك | ر |
| ذ | ميا كان او مسلما فان | الا | مام يقيم عليه الحد بعد ثبوته و | الثا | بت في المحصن الرجم سنة الرسو | ل |
| و | اسم المحصن بينا | ول من عامة | الناس من وطئ في نكاح صحيح وهو | من | المكلفين الاحرار واجو | ا |
| ف | ي غير المحصن اذا زنا | وكان | حرا جلد مائة وتغريب عام | من | البلد مسافة القصر وال | خلاف |
| و | قع في تغريب المرأة و | اليسر | وحدها ولا صح اشتراط زوج او محرم فيما | عرفه | الاكثرون ولو سا | ل |
| ف | ي ذلك اجرة اعطى والذ | ي | يجوز تغريبها معه لو امتنع لم يجبر و | سنة | الحد في العبد خمسون وا | تا |
| ال | خلاف ايضا في تغريبه و | قد | حصل من اختلافهم في تغريبه | ثلاث | مقالات اصحها ستة اشهر وقا | س |
| ر | فيقا بعضهم نحو بعضهم | حط | عنه التغريب والصحيح ان اللواط | و | الزنا سواء والبهيمة لـ | سين |
| ج | زاء من اتاها الا التعزير | على | الاصح وان تكرر زناه ولو كان | ثمان مائة | مرة كفى لك | ل |
| م | ا فعل حد واحد ومن | حصن | نفسه بنكاح امرأة فوطئها في الدبر | قل | الاصحاب يعزر وكذلك اذ | ا |
| خا | لط حائضا عزر و | الحمر | ة والصفرة سواء في الاصح وفي قول | مو | جبه التصدق بدينار ان كا | ن |
| ب | اول الدم وان جر | ا | اخره تصدق بنصف دينار ولا مخا | لفة | لمن يقول ان المرأة اذ | ا |
| و | اقعت المرأة عزرنا والوطء | مدة | الاستبراء ووطئ الامة المشتركة ولا استمناء في | الرا | حة ونحوها ورج | ل |
| ن | كح محرما يملكها كله غير | مرضى | لله يجب فيه التعزير لا الحد على الرجل الا | جي | في وطئه الى قول ثاب | ت |
| [illegible] | به عن امام | وا | ذ اعتقد تحريمه ويستحب للتائب اذ رجوع | عفو دبر | وليستر نفسه فان اب | ا |
| و | اقر بالزنا حد فان رجع فا | لد | ين يقضي بقبول رجوعه واذا صرح وجوز | اسما | ع المولى البينة ولا با | س |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ب | اقامة الحد والتعزير على عبده | ه | ومن اعترف فرجمناه باقراره ثم | عيل | صبره فهرب لم نتبعه وليس | |
| عـ | ندنا من يقيم الحد غير | السلطان | اعني الاحرار حتى نقول الا | بن | لا يحده ابوه ويستحبوا | |
| د | فن المرأة الى صدرها | وسا | ئر الاصحاب قالوا هذا اذا ثبت بالبينة و | ابى | العلماء الحفر للرجل | |
| هـ | ذا في غير الحامل والقا | عدة | تقضي في ذات الحمل انها تمهل حتى تضع | بكر | ا كانت او محصنة ويكو | |
| ف | وران دمها ويستغني | ولد مهد | ها بغيرها وسنة الجلد ان يؤخر عن | المعر | ور والمحرور والمريض يحص | |
| ا | لعافية فان كان لا يبر | ئ ضنا حب | ذلك جلده بعثكال فيه مائة غصن وردا | لى الث | فعل ان يكون الضرب مفرقا | |
| على | الاعضاء وليتوق الا | سنا | ن بل الوجه والمواضع المخوفة فان غشي عليه ترك و | ورى | بثوب حتى يفيق ويسكن | |
| ن | فسه ولو ان الامام استبا | ح | جلده في مرض او خرقات فلا ضمان و | سامحه الله | وتضرب المرأ | ة |
| و | هي قاعدة مستورة | ثم | تكون امرأة تمسك ثيابها والرجل ان | كانت | عليه ثيابه لم يجرد وبيام | |
| و | عليه قميص ولا يبلغ الى | ان | ينهرم الدم ولا يسبونه ولا يسمعونه | هجر | القول ولا بأس ان يلام ويوبخ | |
| في | عضده ولا يجب ان يبدأ | السلطان | برجمه ولا ان يحضره باب حد القذف من | اتى | بقذف لمحصن وهو | |
| ا | هل التكليف وان كان تحت | الملك | حد الا الوالد فيحد الحر ثمانين ومن كان | من | الارقاء فاربعين والنكا | ح |
| ليـ | س شرطا بل المحصن من | النا | س هو البالغ العاقل الحر | المو | من العفيف فلو ر | ما |
| مـ | جنونا او صغيرا او منا | صر | على فسق او عبدا عزر وان قذف ابعد الو | طن | مجهولا وادعى انه رقيق | |
| ديـ | ن مع يمينه ولو | خرج | منه قذف لرجل عفيف فلم يحد حتى | ثبت | القضاء عليه فزنا وجب | |
| د | فع الحد عن قاذفه | يوم | العفة وفيمن وطئ بنكاح شبهة خلاف فالقاضي | حسين | وغيره يرون عرضه بما فعله | |
| سا | لما لا يبطل احصانه وليس | لسا | ئر الناس اقامته ولا بد ان يثبت عنده و | الى | الحكم قذفه بصريح الزنا | |
| مـ | ثل يا زاني ويا لوطي وتر | د | في ذلك كنايات من الالفاظ مثل قول | الا | نسان انت فاسق ولست عفيفا | |
| وذا | قال عاشرك من النا | س عشر | ة الليلة او انت خبيثة او انت بحجين فتح الا | بواب | للزنا والخلوة بهم فهذا | |
| كـ | له كناية فيحلف ما نواه و | من | قذف من الناس جمعا كثيرا | لا | يجوز عليهم ذلك كما | |
| ا | ذا قال اهل زبيد وكل ذي | شهرة | من الناس زان عزر وان قال له وهو | لتشا | تم يا نبطي فهو كناية وان | |
| نـ | واه فقال اما انا | فاخذ | حلال ولست بزان او يا ابن الحلال فهذا ليس | فيه | صريح ولا كناية وذلك | |
| عـ | ندهم تعريض فيه تعزيروا | سنا | ده الزنا الى ولد يعزر فيه ولو قال زنيت | عام | كنت مجوسيا عزر ولم يحد | |

باب حد القذف

رفعنا



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| د | فعنا الحد عنه لا ان صر | ح | بقذفه ثم قال اردت يوم كنت مجوسيا ولا يوالي بينهما | ابتز | من الحدود حتى يبد | ا |
| و | جع الاول ولو عفى وارث | وغيره | من الورثة لم يعف فهل يستوفون البعض ا | وفيه | فيه وجهان ولو امر | وهو |
| ضا | حك او جاء من يقذفه فقذفه | ودفع | الامر الى الحاكم فوجهان باب السرقة | و | السارق يقطع اذا | انضم |
| مع | المسروق شروطه فتمام | السير | ة ان يسرق قدر ربع دينار فلو سرق | سقا | رجل فبان | يخرج |
| نا | ضا اذا ثمن الذ | ي | سرقوه مائة وخمسة وسبعون دينار الكل واحد | ع | ربع دينار فلو نقصت | |
| هـ | ذه دينار لم يقطعوا او | من | اخذ سبيكة ذهب وفي نهار بع دينار فلا | حدا | لا اذا سويته مضروبا و | عن |
| ا | لعلماء انه لو اخرج عن | مكانه | من الحرز نصابا ثم ندم على ما احد | ث | فرده قطع في ذ | لك |
| و | لو ظنه فلسا فسرقه ا | ونهب | قاطع الطريق ذلك فبان دينارا قطع و | من | سرق خمرا او ماهو | |
| ضرب | من الملاهي نظرنا الى | ماهم | منه ان بلغ مكسورا او آناء الخمر نصابا على | السن | المتممين قطع ويشترط كو | ن |
| ا | لمسروق ملكا لغيره فلو سرقه | ثم عاد | فادعى ملكا لم يقطع ولو سرق مال الشركة | وقد | ادخلها شريكه حرز الـ | ها |
| ف | ي يده ففي قطعه اوجه | منصوص | الحجة منها لا قطع ويشترط عدم الشبهة فلو | اخذ | لا صلك او فرعك او | مال |
| ما | لك ما لم يجب القطع | ديوم | القسم لو فرز الامام لطائفة من بيت المال | ثنا | فسرقه غيرهم وعر | ف |
| حد | دناه وان لم يعزو وكان | الخا | ين بالسرقة له فيه حق كمن يكون | من | الفقراء والمال زكاة وكذ | ا |
| ذ | هاب الطعام بالسرقة اذا | مس | الناس جوع لا قطع واشترط اهل | العلم | الحرز في المسروق وهـ | و |
| و | جود ما يعد حفظا في | عشر | ة الناس وعرفهم وفيمن اعاد حرزا فسرق منه خلاف | [illegible] | الاصح يقطع ولو ضـ | مه |
| في | حرز مغصوب فجاء | من | يملك الحرز ففتحه واخذه وسرق ما | و | ضع فيه لم يقطع عندهـ | م |
| وفي | غيره خلاف ولو غصب | جما | لا او غيرها بحرز فجاء المالك و | لا | موال التي للغاصب بخذ | ا |
| المغصوب | فسرقها وجب ان يؤ | دي اا | موال ولا يقطع على الاصح ولا يقطع جاحد و | د | يعة ولا مختلس وهـ | و |
| ب | نفسه لو نقب حرزا و | ولي | اخراج المال غيره فلا قطع فلو خفر المنقو | ب | معا قطع المخرج ولو نزل السار | ق |
| سيـ | له في ماء او رماه | من | الحرز وخارجه قطع ولو حلت طفلا | وغيره | عليه فلا بد فسرق الجميع | |
| ط | فلك وما عليه قال | عامة | اصحابنا الصحيح لا يقطع واثبات المالك عند | القا | ضي شرط فلا يؤاخذ | |
| سا | رق بالاقرار حتى يصدقه من | قصده | بالاقرار وهل للوالي ان يقطع عبده | فيه | وجهان واذا ثبت ذ | لك |
| ل | زم قطع يده اليمنى | حد | اثم ان عاد قطعت رجله اليسرى | ثم | ان عاد بعد قطع | |

باب السرقة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| م | نه يد اليسرى فان | بنى | على حاله وعاد قطعت رجله اليمنى وا | لما | خوذ منه حدا فان عا | د |
| و | جب تعزيره وتقطع بسكين او | سيفو وا | خذت دهنا واغليته بالنار وا | دخلت | محل القطع فيه ولايا | س |
| في ال | اكتفاء بكف يد قد | باد | ت اصابعها فان كانت يده اليمنى شلا فا | زبيد | ه اليمنى وقطعت اليسرى وا | ن |
| و | الى بين سرقتين قالوا | الاقوان | في القطع بل يكفي قطع واحد ولو قطع | اخذت | يمينه اكله او | دا |
| ا | بانها سقط القطع | وا | ما اليسار فلا يسقط عنه القطع | في | ذهابها باب المحاربة | اوجبوا |
| ف | يمن اخاف السبيل بمكا | سر | ه وشوكة ان يطلب حتى يؤخذ ويجب | بطلب الاشتغال | قطاع السبي | ل |
| د | عاية للمسلمين فمن اخذ من | للعيان | نصاب سرقة من غير شبهة قال اهل | الفقه | قطعت يده اليمنى وقطع | ت |
| ا | يضا رجله اليسرى | ثم | من قتل قتل حتما ومن قتل ونهب قتل | عند | ذلك ثم صلب ثلاثا فاذ | ا |
| جا | وزها انزل و | خرج | بعضهم انه يصلب حتى يسيل صديده و | للامام | اذا الزمه وماخوذه | خسيس |
| ما | يبلغ نصابا او اخاف | بلاد | ولم ياخذ مالا ولا انفسا عزر ووقع الا | جما | ع ان من تاب من هؤ | لا |
| و | اصلح قبل الظفر به وبعد | للاسا | ة سقط حده باب حد الخمر وجملة القو | ل | فيه ان كل ش | ى |
| في | الاشربة اسكر كثيره فور | وده | حرام القليل والكثير منه في حكم | الدين | سواء في التحريم ويكو | ن |
| ال | حد على المكلف الا من كان | يوم | شربه صبيا او مجنونا حربيا او ذميا او | الو | جل المكره لا يحد فمن كان حر | ا |
| م | نهم جلد اربعين والعبد عشرين و | ا | ذا جعله الامام للحر ثمانين وبعض قال | يعي | نوابه جاز والسوط | لا |
| ضا | بط التعيين في احد الوجهين و | الناس في | تعين والصحيح يجري سوط فقال الشافعي | رحمه الله | يحد باقراره وبينة | لا |
| ر | ايحة ونحوها فصل | و | المرتكب معصية لا حد فيها ولا كفارة يعزر | والنظر | للامام في كل ا | حد |
| ع | لى قدره كحبس وصفع وضرب دون | العشرين | في عبد والاربعين في حر ويستوي | في | هذا جميع المعاصي في الا | صح |
| و | لو عفى مستحق الحد فاراد | من | اليه تعزيره لم يجز في الاصح ا | علم | ان مستحق التعزي | ر |
| ا | ذا عفى فللامام في | شهر | الوجهين باب القضاء هو فرض كفاية | الاذ | ان لا يطلب ول | و |
| ل | م يكن يصلح للقضاء سواه | ا | تعين طلبه فان امتنع اجبر فان طلبه | غيره | اولى منه كره والمعرو | ف |
| هنا | انهم لو قلدوه | وسلموا | الامر الى المفضول فله القبول والطلب | من | حامل او محتاج طالب بذ | الك |
| ز | اده وكفايته جائز و | حصو | ل قاضيين فاكثر في بلد جائز عند اهل | العلم | ولا ينقص احدهما ك | لمة |
| جا | زم حكما بها الاول ولوا | نهم | اعني الخصوم او الخصمان حكموا رجلا | واقنا | د واله وهو يصلح لقضا | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ا | لحكم في غير حد لله جاز | بالرضا منهم | قبل الحكم ولا يشترط بعده في الاظهر وو | الى | القضاء باستحقاق من كما | لات |
| شر | وطه ان يكون مسلما | ثم | ذكرا حرا عدلا مكلفا مجتهدا وان كان اميا فا | شهر | الوجهين سميعا بصيرا ناطقا ي | كفي |
| تو | ليه ويستحب ان لا يكون | عاد | ما الشدة بلا ضرر ولين بلا جو | رمضا | في الامر ويسأل عن البلد ومن | فيها |
| ر | ب امانه وفقه ومن | تعز | ى اليه العدالة وعمن في الحبس فمن كا | ن | منهم فيه مظلوم | ا |
| و | جب اطلاقه ويسأل عما اجتمع | وحصر | عند الاول من السجلات ويأخذها ويتبع | سنتنا | لقضاة في مشاورة العلماء التحو | ل |
| في | المشكلات وله استخلاف واحد | منهم | في عمله ولا يتخذ بوابا ولا حاجبا في | ربع | اتخذه للحكم فان احتاج فلا يو | ثر |
| ا | لحاجب احد الخصمين ومن كان ذو | جناية | من اعوانه ووكلائه ابعده عن مجلسه | و | يوصي وكلاءه واعوانه بالتقو | ى |
| لـ | له في اعمالهم و | قصدهم | وليعد من اهل المسائل قدر الحاجة وان يتعرفوا | تسعين | يعرف بهم الشهود | فان |
| سـ | ما رجلا واتخذهم | للجلها | فليتخذهم امنا ويجتهد ان لا يتعارفون ثم اذا جرت | وتوضت | عنده حكومة لمملو | ك |
| د | قيق له او لابيه او ابنه | في | حق رفعها الى الخليفة ويجوز للقاضي ان يحكم | الموفق | وصديقه ولا يقضي ول | ا |
| يعـ | قد في غير ولايته والحكم | الرا | سم له هنالك لا ينفذ ولا يرتشي ولا يرد الهدية | ثانيا | عزمه عن قبولها فان كا | نت |
| مـ | من له عادة جاز اذا تا | بع | العادة ولم يكن له حكومة حاضرة | فا | ن ردها فهو اولى ويحضر اذ | ا |
| طو | لب بالحضور في وليمة | من | غير تمييز بل يساوي بين الناس فان | فاض | ذلك وكثر انتهى بما | لا |
| يـ | قطعه عن الحكم ولو حضر | جما | عة للحكم وهو جائع فلا يقضي بينهم ولا | وعلى | عطش ولا في حا | ل |
| مـ | سخطة ولا مفرحة ولا | دي | مولم ومرض معلق ولا عند تراكم | سحاب | الهموم ولا حاقن وخائ | ف |
| كـ | ل ذلك مكروه والحالات | الاخرى | اولى فان حكم نفذ حكمه وليفسح مجلسه | كو | ه اعتماد المسجد لذلك ث | م |
| شـ | رع له التأديب بخصال | فاخر | ه ان يجلس مستقبل القبلة وان يلاز | مه | السكينة حيث كا | ن |
| و | ان يجلس الكاتب بالقر | ب | منه ينظر في كتابته وان يكون العلماء عنده | وملا | زمين مجلسه للمشاورة والتـ | كلم |
| في | المشكلات واحوال | بلادهم و | اهلها ويستحب ان يترك القمطر بين | يدي | مجلسه مختوما وانحضر | ه |
| ثم | خصوم كثيرة فمن تقدم | حصو | له في المجلس بدأ به وان تساووا بدأ | با | لقرعة ويقدم السابق على | غيره |
| في | حكومة واحدة لا يزيد | نهم | عليها اعني السابقين ويسوي بين الخصمين في ا | لكرامة | والمجلس لكن يرفع مسلما | |
| على | كافر في المجلس | وامكن | نفسه من اتراح الخصمين او قدم ارباب الثروة | والنعمة | ولا يلقن من اغ | فل |
| نفـ | س الحجة اما الدعوى فان | منهم | من جوزه له تعليمها وهو ضعيف فلو نفع الخصوم | واضنا | ما عليه الى ذمته | حتى |

## باب صفة القضاة

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ي | غرم عنه جاز و ينظر | كيرا | في الامنا ويتدبرهم وفي اموال الايتام | الى | من وصى بهم ولو ساله احد ان | س |
| ح | ضور المعزول توقف | ثم | ساله عن شكوه منه فان قال حكم بشهود لم | تدد | ك الحكم او قال ارشيت | ت |
| ش | يئا اليه احضره والقول فيما | سا | من سيرة قوله وان ادعى جوره نظر في دسا | يس | حكمه فما كان على | تيس |
| و | اجتهاد سيوغ فلا يعدل | الى | نقضه والا نقض باب صفة القضا و | المد | عى ان حضر فللقاضى هنالك | ك |
| ا | ن يسكت فان امر بالدعوى جا | ز | فاذا ادعى احد الخصمين فاراد الاخر انها | دسه | ويقطع عليه الكلا | م |
| ل | يا خذ حق البداية | بيد | ه او ظهر منه سوء ادب نهاه فان اكثر | المجاهد | ة والله عزره ومن جا | |
| مد | عيا وكانت دعواه | يوم | ذاك باطلة لم يسمعها فاذا صحت | لهيد | قال للاخر ما تقول فيما | |
| يد | عيه فان اقر فلا يحكم | الا | اذا ساله الحكم لان الحكومة | ونظرها | اليه فان انكر حينئذ | ذ |
| و | لا بينة فلا يمكن اليمين ثم الا | شين | الا المدعى عليه اذا قال المدعى حلفوه | و | ان نكل فحلف المدعى يمينا | |
| ا | ستحق وان نكل صرفهما و | النا | بت ان المدعى عليه لو قال بعد النكول | نظر | ت في الحسنا الذى | كان |
| ل | ى وجبت لا احلف فحلفوه | في | لم يلتفت عليه وكذا المدعى لكن لهذا | مدار | اخر اذا اراد ان يثبت | ت |
| ب | مجلس اخر ونكل المدعى عليه | و | حلف هو استحق وان اقام بينة بعد البا | س | والعجز سمعت والشهود اذ | ا |
| س | لبوا العدالة احسن | العشر | ة في الود فيقول زدنى شهودا والعدول وان كانوا | عدده | اذا رتاب بهم فرقهم وجعل | ل |
| ي | سال كلا عن اليوم | من مر الشهر | هو وعن الكيفية ومكان التحمل فان اتفقوا وعظهم | وجعل | يخوفهم ثم يعطى الحق | ق |
| ط | البه نعم لو قال الخصم هم | فا | سقون مكنه من جرحهم فاذا قال | لى | بينة بجرحهم مهل ثلاثا | |
| وا | ن سال المدعى ملازمته | قام | عليه ملازم بينما يجرح الشهود | جامكية | الملازم عليه فان وا | في |
| لخ | روج المهلة وسال الحكم و | الى | القضا حكم له وان جهل عدالة الشهود | كل | ذلك الى من وكله | |
| ب | ه وهم اهل المسائل ويتمهل | اليو | والايام حتى يعرف حالهم لا يسال عنهم في | شهر | ة بل خفية فاذا علم | |
| ب | عدالتهم امران يقيموا البينة | العا | دلة بعدالتهم علانية ولو شهد في قضية | ثمانية | غير عدول فلا بد | |
| م | ن ردهم والمعدل اذا لم يعا | شر | ه بل عرف ظاهره لم يكف فاذا عرفه في الباطن | دينا | جع الى قوله لانه علم | |
| خ | بره واذا شهد بعدالته | من د | ضيه الحاكم كفى ان يقول هو عدل | ومائة | لو شهدوا بعدالته ثم | جا |
| و | شهد رجلان بجرحه و | جب | تقديم شهادتهما ويشترط ان يفسر الجرح | ايضا | فلو جاء المعدل | فقا |
| ل | شهدان بهذا الجرح قد تاب | بعد | وصلح قديم ولو قال المدعى مرا | لغلمان | يوقفوه لاعدلهم استوقفوا | |

والاظهر



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| و | الاظهر ان القاضى يحكم بعلمه | وخرج | من ذلك حدود الله واذا سكت الخصم و | مضا | في سكوته لا في اقراره ولا في | ي |
| ا | نكار جعل ناكلا ويعرفه و | الى | القضا انه لم يجب جواب المعتبر | فين | او المنكوين جعل ناكلا فلو قا | ل |
| ان | لى حسابا لا اعرفه في | المعا | جلة فامهلوه ثلاثا ثم لم يجب امهاله وان ادعى انه قضاه | وصرف | عنه الدين بابرا ونحوه وجب | |
| ع | ليه البينة فان عجز جا | ز | للمدعى ان يحلف ويستحق الحق فان سال مهلة | الى | ان يرفع اليه البينة امهل في | ي |
| د | فعها ثلاثا ثم طولب | بر | وللمدعى ملازمته مدة المهلة ولو | دار | الدعوى على غائب او ميت | ت |
| و | كذى متستر وصبى ومجنون | وسا | ل سماع الدعوى عليهم سمعت فان اقام حجة | كاملة | حكم له بها فاذ | ا |
| ض | عنها وظهر الغايب و | لوا | متدت المدة سمعت حجته وكذا الصبى اذا بلغ و | المر | المقستر ولو ادعى على رجل | |
| ا | ما عينا او دينا في | الذمة | وهو في البلد لم تسمع الدعوى في غيبته بل ان | افق | وحضر طايعا والا بعث | ث |
| او | ليا الشرطة له | وسير | وه اليه ولا تكلف المحجبة الحضور والوكيل كا | فيها | وتحلف في بيتها واذ | ا |
| ضرب | رجل في الارض فجا | الى | الحاكم في غيبته مدع واثبت بحق قضى من | عين ما | له والا فيتبع من | ن |
| ا | لرجل الحزم الذى | حيكه | الزمان ان يساله انها القضية على ما كانت | جارية | عنده الى الحاكم الثانى | ي |
| في | ستوفى له ولا مبالاة يمنع بعض | المخالفين | انها سماع البينة بل بينها فان جهل عدالتهم | و | جب ان يسميهم و | اذا |
| ا | نهى الحكم جاز مع القرب | فا | ما انها البينة فشرطه مسافة القصر ولتشهد العدلين | نعم | ويستحب ان يكتب كتابا بما صح | |
| ل | ديه ويختمه بعد ان يا | خذ | في ذكر المحكوم عليه ويصفه باوصاف | وافية | فان انكر الاسم و | جا |
| م | نا كرا قبل قوله بيمينه ان | ما | هو اسمه وعلى المدعى البينة انه اسمه | فا | ن اقامها وقال لست حليف | |
| د | عواك نظرت فان كان | معهم | مشارك له في الاسم حضرته وان | قمت | عليه الدعوى ف | اذا كان |
| ي | عترف صارت الحكومة معه | ومع الر | جل المعترف واذا نكر فليام المنهى الذين شهدوا | عنده | بزيادة الوصف فان لم يكن ثم | م |
| د | خيل يشاركه في الاسم و | ما | وصف به حكم عليه ومن ثبت بحق عند القاضى | اكرمه الله | وسأل ان يكتب له كتابا | |
| ف | يه ما جرى محضر | ه من | الحكم وغيره فعل ووقع فيه وكتب نظيره واودعه | في | قمطرة والقرطاس المكتو | ب |
| هو | من بيت المال في المصالح | دخل | والا فعلى طالبه ومحاضر الوعد او الشهر على قد | دو | جودها بجميع ما وقع | ع |
| م | نها ويربط ويكتب عليه المدة التى | دخل | فيها ويميزه والمترجم للقاضى يحتمل ما يعد | ضرار | بعة في الزنا لانا نعد | |
| خ | برهم شهادة ومن حكم باجتهاده جا | زنبيد | اذ ان خالف النص والاجماع والقياس وجب تعرض | يض | الحاكم ونقضه ولو قا | ل |
| و | خصمه منكر ان القاضى حكم له | وقف | القاضى على ذلك الحكم فان عرف | وجوده | كان حكمه بما عر | ف |

باب القسمة

محدود وقال الكامل احد وقال السرخسي

البنا سيبين كلمة مضرة فاتحة بنفسيا او

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| نـ | افذا باب القسمة وو | الى | لقسمة اذا كان منصوبا من قبل الامام | فا | نه يشترط كونه ذكر | ا |
| مـ | عدلا حرا عارفا بما يحا | ول | بر القسمة من الحساب والمساحة فان كان فيها نفا | يض | وتقويم وجب فاسماوالا فنقو | ل |
| جـ | علت الكتابة بواحد فان كان | يوم | القسمة في بيت المال شئ فاجرته منه | عو | في الشرع والا فعلى الشركاء وثبت | |
| ذ | لك موزعا على الحصص | من | المال كل بقسطه وما لا ينقسم كجوهرة | يض | فيه الشركاء ولو رضوا | ا |
| و | قالوا نقسمه ونفرقه | شعبا | منفعاهم وما يتصل بها نفقة المقسوم الى | الى | والحمام الصغير فليس | س |
| فـ | يه قسمة الا ا | ن | يتراضوا ولو كان القسمة مضرة باحدهم نظرت | ان | كان الطالب بها هو الذ | ى |
| و | قع الضرر به منع | وا | ن طلبها شركاؤه اجيبوا والقسمة هي | توفا | بها الحقوق منها ماليس | س |
| فـ | يه تفاضل فيقسم اجزاو يا | خذ المعا | في القسمة الاجزا ويعادلها كما امر | ه الله | بالعدل ويكتب | كل |
| ا | سم في رقعة تفر | زبر | ثم يدرج الرقاع في بنادق متساوية من | قابلم | شئ منها لم يميزه ثم | م |
| يـ | خرجها على الاجزا | ابل | لو كتب الاجزاء واخرج على الاسماء جاز و | الله | اعلم ويحترز عن تفريق حصه | ه |
| كـ | ل واحد ولا يبطلها | المنافرة | بعدها واما قسمة التعديل فيكون مثلا | بر | بيع وارض تختلف اجزاؤها ثم | م |
| ا | لقسمة هذه قسمة اجبار | فا | ن كانت قسمة دارين فاعطى كلا دارا او | ضوا | جاز وان كره البعـ | ض |
| مـ | نهم وان لم يكن | تماد | مالم يجبر وفي ثياب وعبيد من نوع يجبر و | نه | لا عن نوعين ثم | م |
| لـ | نذكر قسمة الرد فليس | عليهم | فيها اجبار وهي ان يكون باحد الجانبين بيرا و | و | اشيا لا يتصو | ر |
| ا | لقسمة فيها فيحتاج احدهما | يوم | القسمة ان يرد قسط قيمة الزائد الذي | ملكه | فيجب منا الرضا بالقسمة | ة |
| حـ | ين القرعة وبعدها في الاصح و | الثاني | يكفي قبلها وقسمة التعديل بيع وقسمة الاجزاء | اعلى | الاظهر افراز ولو قسم حقا | |
| ذو | وه بالتراضي حين بدا | وابا | لقرعة اشترط الرضا بعدها ان نصب من له | مرتبة | الحكم اذا قسم فيكفي | ى |
| فـ | ي حقه خروج القرعة فان ر | دبنهم | حد واقام بينة بحيف او غلط عليه | في | قسمة اجبار نقضت ثم | م |
| يـ | نظر فيما قسم بالتراضي فان كان | مما | قسمته بيع فلا اثر للغلط و | جنا | ية الحيف وغيره فيه | ه |
| ا | صلا باب الدعاوى | و | البينات من وجد عينا له عند اخر فا | نه | يجوز له انتزاعها | بنفسه |
| لـ | كن اذا خشي حدوث | قتل | او فتنة مالم يجز الا بالقاضي ومن جحده حقه | ثم | وجد له اموالا لتوفى منها | |
| سـ | واء كانت جنس ماله او | شيأ | غيره وان كان مقرا غير ممتنع فلا يحل و | انتقل | الى الحاكم والمدعي اذ | ا |
| د | ام دعوى نقد بين قدره | كثيرا | كان او قليلا وجنسه ونوعه او عينا تنضبط | في الامر | وصفها وصفها بوصف | م |





محدود ومستثنى قال البيضاوي والجز

نفصله ذكرها عليه مستنا كونها نحانا نهاية

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يـ | دعى بصفات السلم وان | حدث | بها تلف وجب ذكر القيمة ومن ادعى | الملك | في نكاح ذكر في اثبات | ت |
| عـ | قده انه بولي وشاهدين من | بعض العدول | ولا يكفي الاطلاق في الاصح ويو | الى | في نكاح الامة انه حصل | ل |
| يـ | خوف من العنت و | انه | لعجزه عن طول حرة والاصح انه | امير المؤمنين | لا يكلفه ذلك في العفو والمالية | ه |
| بـ | ل يكفي الاطلاق واذا | سمع | القاضي البينة الكاملة لم يحلف المدعي معها | و | لو قال اوفيته او ابرأني او وهب | ب |
| و | اقبضني حلف على نفي | المعا | في هذه ولو ادعى علمه بفسق الشهود | لد | ى الشهادة فوجهان الاصح | ح |
| لـ | ه تحليفه ولو قال مالي بر | زبر | صدقني وادفع به فامهلوني امهلنا | ه | ثلاثا والناس احرا | ر |
| مـ | ن الاصل فاذا سمعنا بالغ نعو لو | نعو لو | نحن احرار صدقناهم والصبي اذا ادعى | الملك | فيه رجل ولم يعر | ف |
| كـ | ونه حرا نظرت فان كان | م | سلا يد له عليه فلا بد من البينة عند | النا | ظر في الحكم وان | كان |
| شـ | هد في يده فنحن | نوا | فقه ونحكم له بملكه الا بيد الملتقط وان | م | ح بدعوى دين مؤجل لم تسمعها | |
| فـ | ان ادعى عليه مالا فقال | هذا | المال لا يجب على لم يقبل ذلك من | مد | عا عليه حتى يقول ولا يجب ان اطا | ب |
| مـ | نه بشئ والا جعله | السلطان | ناكلا ثم يحلف المدعي حينئذ في حكم | الله | على دون ما ادعى | ى |
| فـ | يستحقه ومن ادعى | على | رجل قرضا ونحوه فقال لا استحق | ع | ذمتي شيئا وسكت | ت |
| عـ | د جوابا كافيا و | الخلاف | فيما اذا اجاب بنفي السبب فحين قالوا | ابدا | في اليمين حلف على النفي المبهم | م |
| و | الصحيح لا يقبل يمينه | حتى | ينفي فيها السبب والمرهون ان الاذ | م | فيه من يدعيه فقال هو | و |
| لـ | ن يلزمني تسليمه ومن كفاه | يتو | لى حفظ مال رهن او اجارة واقر به لمالك | فا | نكر المالك الا رهنا فليس | س |
| فـ | يه الايمين المالك اذا | طا | لبه ان لم يتم بينة فلو قال المال لابني الصغير او | عطا | هذا بعض الناس | س |
| ا | حفظه له او ليس هو | لكم | بل هو صدقة او لي منه قدر | الفرد دينار | والباقي لرجل مجهول فما | |
| لـ | هم نزعه ولا ينصرف عن | جناب | الخصومة فليحلف انه لا يلزمه التسليم | ولجوى | على حاله مالم يقم بذلك | ك |
| بـ | ينة ولو اقر به لمعين | فا | ن صدقه انها له انتقلت الخصومة منه | لى | المالك وان كذبه لما | |
| سـ | يل تركناه في يد المقر ولا | نعكس الامر | في الاصح الى ان يثبت بها مالك وان | الجا | ه الى غائب معروف فحين | اذا |
| طو | يت وصرفت الخصومة عنه | وفي | المال يبقى الدعوى على غائب وهي جا | يزة | والحكومة مع العبد الجاني فيما | |
| الـ | زمه عقوبة وان كان | الثا | بت بجنايته مالا فالحكومة مع السيد | ولجا | ني لا اقرار له ولو طا | ب |
| د | جل رجلا وقال ا | ني | اجرتك نصف الدار بعشرين درهما | مكية | وقال الاخر بل اجرتني | |

باب الدعاوى

جملتها بعشرين مصرية وجا من كل بينة تعارضتا ولو تنازعا في دار وتغل تحت يدهما وتحت
زيده ويده واقام و شهد كل بينة انها ملكه تعارضتا وسقطتا ولا تمييز بام الكثرة فلو كان احدهما
مقيما بذلك شاهدين و شوهد مع الاخر عشرة فلا ترجيح عند الجهابذة ويرجح شاهدان في قول
طائفتهم على شاهد ويمين وما وال العلماء يقدمون بينة صاحب اليد لكن لا يورد ها اولا بل الخارج يسبق
و يقيم بينة ثم هو بعده ولو اخذ الخارج العين بالحكم ثم حضرت للداخل بينة و اقامها سمعت وتخلص
عنده ذلك العين وحكم له السلطان بها ان اعتذر بغيبة بينة عن البلاد ونحوه ولو قال الخارج مشترى
و ملكي تنتقل الي فيها الملاك منك وشهدت بذلك بينة قدمت ولو وصلت بينة تشهد باقراره كزيد
في ملك ثم ادعاه لم يسمعها الناظر في الحكم الا اذا ذكر انه انتقل لي ملكه بعد ذلك ولو شهدت له
البينة بملك مورخ وتقاصرت بينة الاخر فلم تورخ فهما سواء ولو ارخ هذا و هذا فالمتقدم اقدم فلو قوا
و لا اثر للتاريخ مع اليد و المهود التاريخ والاجرة والزيادة الحادثة من المستحق ولو شهدت بملكه في
امس لم يقبل حتى تقول وهو يملكها الآن او لا نعلم لملكه من يوم ملكها مزيلا وله الشهادة بملكه
في الحال لان الاستصحاب عظيم حصين النا ولو ثبت بملك شجر او دابة استحق بت من الحمل لا ولدا منفصلا
داجت به ولا ثمرة موجود بها ولو اشترى شيئا فاستحق رجع على من باعه ولا تلزم
القيمة بل اذا رد الثمن مادة الخصيمة الطلب ولو تداعيا شراء عين من رجل وهي في يده سمع
قوله فمن اقر له اخذها وصح الخلاف لا يحلف للثاني والا فاقاما بينتين احديهما المحرم تاريخها والاخر صفر قدمنا
صاحب المحرم واستويا في التاريخ اولم تورخ احديهما تعارضتا و سنة التعارض انهما يسقطان
معا على الصحيح ولو مات عن مخالف في الدين من الورثة وادعى كل وارث انه انما مات على
وفق دينه وكان كافرا فالجائز شهادة الميراث الكافر الذي هو لدين ابيه تابع و لو اقام كل بينة مطلقة بما
في دعواه قدمنا المسلم وتلك البينتا لو شهدت لاحدهما انه مات يوم اذ من الشهر ولاخر كلامه هو
الاسلام ثم شهدت الا خرى ان اخر كلامه الكفر تعارضتا ولو لم تعرف ما دينه وشهدت لكل بينة واطلقت
كانتا متعارضتين ولو مات في اطراف البلاد كافر وخلف مسلما وكافرا ولدين و قال المسلم هو
مات قبل ان اسلم ثم قد كذبه الاخر صدقه بيمينه ولو م كل ومعه بينة بما ادعا
لزم تقديم الكافر ولو اطلع على ان اسلام الابن في رمضان وقال المسلم جاء موته في شعبان والكافر قال



مات في شوال قدم الكافر و تعزي اليمين اليه باب اليمين في الدعوى من ادعى على الثاني حقا اما في دين او في
ضمان او غيره وليس للمدعي يوم الدعوى بينة وكانت في غير دم وارادة منه اليمين حلف فان نكل عنها
ردت على المدعي الا ان كان الثاني غير معين كالمسلمين حبس حتى يحلف او قيل بسلم وعود اليمين هنا متعذر ومن جاء وهو
مدع دما وهناك لوث وجب للمدعي ان يحلف خمسين يمينا ان ظنها صادقة واستحق الدية ولا ياتي
قود ولو حلف عشرين حلفنا العشرين على قدر الارث فان حلفوا على غير العمد فانا نلزمها العاقلة او على عمد ابدا
طولب بها القاتل وان نكل من الورثة احد حلف الباقون حصتهم ويحلف المدعى عليه في غير اللوث جزئيا على
عادة الدعوى لكن ها ذي يحلف فيها خمسين يمينا واللوث مثل ان يفترق رجال عن قتيل او يوجد محلة للاعدا
و هي صغيرة قتل او قال ذو العدوة عن الشهادة كنسا او صبيانا او عبيد وفاسقين فلو شهد اثنان و كان
فيهما واحد يقول قتله سنة ثلاث وثمانمائة وقال الاخر عند ادائها قتله سنة اربع فيجانز
ان يكون لوثا وقيل لا و لو ادعى على رجل انه قتل مورثه و سمعت دعواه وهناك لوث فجا
ء له رجل واقر قتله فالحق في القسامة الذي ثبت لا يبطل بذلك انتظامه ولو ادعى عليه جرحا و
خاصمه في طرف ثم كما ذكرنا اول الكلام لوث لم يلتفت اليه واشعارها شعار سائر الدعاوى ويجوز
فيها الحلف بالعجمية وان كان يوم اليمين يحسن بالعربية ويستحب التغليظ و ذلك اذا كان ل اختلاف
في غير مال او مال لا ينقص من النصاب والتغليظ بالزمان والمكان سيق في اللعان وعد وايضا التغليظ بزيادة الاسما
و الصفات كل ذلك سنة كقوله والله العظيم الرحمن الرحيم فهذه صادعة للقلوب ويحلف على الفعل
المنسوب اليه على البت وكذا رجل حلف على اثبات فعل غيره وما ساقه دخيل النفي لفعل
من غيره فعلى نفي علم كوارث بابع يحلف ما علم ان مورثه وهب و ابرأ باب الشهادات للعدل وصف
جمعته هذه الشرائط وثمانية هي اسلام وبلوغ وعقل وحرية ومروءة وتقوى لا متهم ولا مغفل في
تحمله فترد شهادة كافر وصبي ما بلغ ومجنون وعبد وفاسق من جراته نفسه على كبيرة فستق اذا
ثم من اصر على صغيرة بجراته هذا المجرى وفي الغنا والشعر الذي في اخبار تابعة تقضي بجوازه واباحته
ما عدا العود والالات التي اخذت للهو فقط واباحوا الرقص بغير تكسر ولا يقبل من عادم مروءة فكل
شي ارتكابه يهدم حصن العرض كامل غير السوقي في السوق والملاحقة من الغني في اليسير الذي لا
عادة بطلبه يسقطها ورجعوا في الحرف الدنية الى الاشخاص و اللائق بهم كصنعة خفاف

باب الشهادات

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ث | م حجامة ودبغ وكل حرفة | به | للدناة اذا تعاطاها من لا تليق به | معا | طاتها ردت شهادته واما | في |
| و | ادنها ومن تليق به فلا | و | لا تقبل من متهم كفرع لاصل وعكسه | رفه | واصدقائه فتقبل و | تصح |
| ف | الشهادة عليهما وترد من | سائر | غرما ميت او مفلس شهدوا له بمال | ف | شهادة شهود شا | ركت |
| هـ | ذا المدعي في نفع وفي كل | ما | جرت نفعا كشهادته لعبده وموكله | عوا | فسق شهود لقبل ولو شهد بطلا | قه |
| ز | وجته ابناهما قبلت | بنا | وتقبل شهادة احد الزوجين للآخر | رفه | بل يقبلها فيما له وعليه و | منعوا |
| ج | وازها على عدو وشرطه | لك | بغض بحزن معه بسروره وبفرح لمصيبته | المتد | اول بينهم انه لا با | س |
| ا | ن يشهد له وتقبل من مبتدع | و | المغفل غير مقبول وهو من لم يتثبت واذ | فقة | الامر لم يضبطه فلا يستـ | عمل |
| خ | بره ولا شهادته ومن | كاه | حريصا على ادائها ومبادرته بها | عاد | ة عاص وترد الا فيما هـ | و |
| ر | اجع الى حق الله فان | افتح | القول والمبادرة منه حسبة كشهادة بطلا | قه | فتقبل وان لم يستشهد وكذ | ا |
| م | يقات عدة وعتق ومثل | هذه | عفو عن قصاص ونسب وحدود الله لكن | مد | الستر في الحدود افضل واذا قا | ل |
| و | حكم بشهادة كافرين و | الا | عبدين او صبيين نقضه هو وغيره | الله | ولو كانا فاسقين نقـ | ض |
| ف | الاظهر ولو شهد صبي | ما | بلغ او رقيق او كافر ثم اعادها بعد | ملكه | الله رتبة الكمال قبلت | ثم |
| الـ | فاسق اذا تاب قبلت شهادته ولا | كن على | غير واقعة قد رد فيها بعد الاختبار | وجلا | كثرهم مدته سنة | عندهم |
| سا | ئر القضايا وجميع ما | يد | عى لا يكفي فيه شاهد واحد الا رمضان | لد | يا فانه لا بد ان يجتمـ | ع |
| ر | جلان كغيره وبالزنا قالو | الا | بد من شهادة اربعة رجال واوه | نيا | ويقبل شاهدان فيما | |
| يـ | قربه من الزنا ويقبل | امير | المؤمنين في المال وفي العقود المالية | كلها | شهادة رجلين او رجـ | ل |
| عـ | ضده امرأتان واما غير | الا | موال كالنكاح والطلاق والوكالة و | ملكه | الله كهذه وجها والشر | ك |
| و | الاسلام وسائر ما يطلع الر | جل | عليه غالبا فيشترط فيه رجلان | وبعد | ذلك ما لا يراه الرجال غالبا | س |
| الـ | مرأة وبكارتها والارتضاع | بدر | ها وعيوب النساء المستورة فيثبت | هذا | برجلين ايضا وما يثبت | ذكر |
| من | الحقوق يثبت في حكم | الدين | بشاهد ويمين الا عيوب النساء | وقمن | حلف مع شاهد ان مورثه | |
| سـ | بل هذا وقفا فالاصح من مذهب | محمد بن | ادريس رحمه الله ثبوته بذلك انه | وقف | والشهادة على الفعل نحـ | و |
| ر | مي وضرب وغصب و | زياد | ة ونقصان ونحوها فلا تجوز الشهادة | على | شيء من ذلك كثر او | شذ |
| حـ | تى تشاهد بعينك فعند | الكا | فة الا هم تقبل هنا وان كانت على قول | هذا | مثل تحمل الشهادا | ت |

من اصلها



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مـ | ن اهلها والنكاح ومن ا | ملى | ابرا وطلاقا او قرا كتابا فيشترط | الكتا | ونحوه فلا تقبل من الاعمـ | ا |
| ك | ذلك الاصم الا اذا كلمه | و | هو مصغ باذنه بكلمه فيها ولازمه الى | و | اداها او تحملها قبل العمى ولو تحمـ | ل |
| ش | هادة عليها وعند الادا | ما | استقرت اجرها القاضي ليرى الشاهد | وجد | وادجلا وهو بالعدالة موصو | ف |
| و | اخبرهم انها هي جا | زا | لتحمل على الاصح وتجوز الشهادة | فيه | الاستفاضة من نسب وكذا مو | ت |
| ف | ي ادمي وعتق وولاء كما يقال | سهو | ووقف ونكاح وملك في الاصح | سهو | عن شرطها وهو ان يستفيض | ع |
| ثم | يسمعه من جمع يومن | مو | اطاتهم عليه ويبعد اجتماعهم على كذب | اوخطا | والشهادة بالملك باليد المجرد | ة |
| م | سنوعة بل اذا انضم اليها | الانا | حة بالدار مثلا والسكنى والتصرف | ولم | يعارض جاز ومن تحمل شهادة ان سـ | معها |
| ف | طلب للاداء فامتنع اثم ولا | السلطان | لانه يفسق بالامتناع ومن طلبها | يجد | معه ثان نظرت فا | ذا كانت |
| ا | لشهادة مما يثبت فيها | الملك | بشاهد ويمين كالمال ومتعلقاته فـ | له | من عذر ويجب اداؤها وفلا | |
| على | الاصح ولو شهد فيما | النا | فع فيه شاهد ويمين احالت شهدين | ثا | تي باليمين معه لم يجز بـ | ل |
| فا | مره باداتها فان ا | ام | على الامتناع اثم ولا يحد في ذلك | وبلا | ولوجوب ادائها شروط لا يتعلق | |
| ف | الذمة الاثم الابها القر | قا | لو احدة مسافة العدوى وما زاد لا | فيه | الاجابة الثاني العدالة اما | |
| الـ | فاسق المجمع على فسقه فلا | تما | دى في ان الصحيح عدم وجوب | قد | روى انه وجوب اداء الفاسق | فيه |
| موضع | للعد الثالث عدم العذر فلبس | على | المريض اجابة بل يبعث اليه فصل اذا | اذنت له | فقلت اشهد على شهادتي هذ | ه |
| و | الا انا شاهد بكذا فاشهد | وقدم | الى القاضي وسمعه فشهد عنه وكذا | ان | لم يحضر قاض بل كان سا | معا |
| له | يقول ان لفلان من ثمن | الجد | اراد مبيع الفا على الاصح ولادعا | يصلح | الا في حق آدمي اما | في |
| ز | نا ونحوه يثبته لحد لله فلا | والا | صل اذا مات او جن جازت شهادة الفرع | اما | اذا فسق او ارتد فـ | لا |
| جـ | واز لها ولا يسوغ في الا | جتهاد | قبول شاهدي فرع لمردود الشهادة | وجد | كماله حال د | فعا |
| و | ادا الشهادة جاز وهما | ناهضا | ذ بالتحمل عن اثنين وقيل يشترط | و | الرجوع بعد الحكم وقيل حدو | ث |
| الا | ستيفا بالمال لا ينقض | با | لعقوبة والقصاص نقض او بعده فلا | كان | رجوع الشهود عمدا منهم | |
| ط | ولبوا بالقصاص او ان صرحت | غبا | وتهم بالخطا فالدية ورجوع القا | عذر | له مما عليهم كما نقلت | |
| و | ان رجعوا جميعا فضمان | الخلاف | ينظر فيما يقتضي رجوعهم فان كان يؤد | ي | الى وجوب القصاص فلا | دافع |
| يد | فعه عن الجميع والدية | قا | لوا يكون عليهم نصفها وعليه نصفها | عند | نا لو رجع مزكيه ضمن ايضا | |

باب الاقرار

لكن لو رجع الولي كان قا بما عنهم بالجميع ولو رجع الشهود في ما عزّوه بسوطا عليه ولا نقول الواجب
معوض من الشاهدين الاولين نعم ف ما اذا رجع بعضهم وبقي منهم نصاب خلاف فا ن احد الوجهين يلزمهم بعض المال
وفي الصحيح لا يلزمهم شئ اصلا باب الاقرار اذا اقر بحق لشا ني صح ان كان مطلق التصرف
ا ما اقرار الصبي والمجنون لا يبا ه قبوله وان ادعى البلوغ نظرت فان قال بلغت بالاحتلام وكان في وقت
لا يبعد امكانه صدق فا ما بالسن فيلزمه اقامة البينة فيه واقرار العبد يصح
بما يوجب عقوبة وا سد الوجهين يقطع باقراره في السرقة ولا يؤخذ من يده المال اذا كان
سيده يكذبه ولو ضارب في البلاد وعامل باذن سيده واقر في ملاقا الاذن بمال صح ومتى شا
طالبه المعامل بما اقر و يقضى من كسبه وتجارته واقرار المريض في الموا من المرض صحيح نافذ
والوارث وغيره من الاحرار و العباد سواء ولو اقر هو ثم الوارث بدين عليه اقتسموا لما ل ولا يقدم اقراره واذا
د وعه فاقر مكرها فحين نسال نجيب ببطلانه وشرط صحة الاقرار يكون نعه به اهلا للملك فلو
جاو اقر لدابة لم يوجب الله لها شيئا وان اقر للحمل في البطن ا حدا لناس بما نظرت فاذا
ذعم انه بارث ونحوه جاز وان الطلق فكذا في الاظهر وان قال حصل بشرا ونحوه بطل ولو قا
مختار اهذا الفلان ولم يجمع معه على ذلك بل كذبه لم يؤخذ منه ويبقى معه في الاصح ويقر
بيده حتى يثبت به احد من الخلق ولو قال لي عليك الف فقال الذ ي عليه الدعوى
وهو منازع زنة او اختم على هذا او اجعله في كيسك فليس سو باقرار وقوله صدقت او
نعم او بلى اقرار و طا ئفة تقول لعمري اقرار وقوله انا نقر به او بما تقول ل او قد ابرأتني اقرار وكذا
وفيتك او قد انتز عته وان قال انا مقر فلغو وكذا اقر به على الصحيح ولو قال دب الما ل
فيه اقضي الالف فقال يمد ني الله بمال او اقضيك او قد ابرأتني او ما اسالك الا مهلة يوم
ا واصبر حتى افتح فهو اقرار في الاصح ولو قال داري او ثوبي او ديني الذي في ف ذمة زيد لك جرى مجرى
لغو الحديث ولو لم يكن ايام الاقرار في يد المقر لزمه حكمه اذا صار ضمن يده فلو قال هذا حر لا يجوز
وصية زيد بدينه ثم صار في دولته بان اشتراه حكم عليه بحريته وكان ا فتداه من ظالمه ويصح بالمجهول كما
ا ذا قال له عندي شئ و انه يقبل تفسيره باقل ما يتمول وبحبة بر وبا الكلا الموقوف ولا يقبل ما
فائدة فيه مما يحرم على الناس اقتناؤه كالخنزير والكلب هذا في غير المعلم وفي المعلم اختلاف

راجع



د اجع اليه والى الخمر المحترمة و كل ما في معناه مما منعنا من بيعه لم يمنع من اقتنائه واختاروا فيه
من الوجهين قبول كل شئ من ذلك الا رد سلام وعيادة مريض وتصميت الزم ما كرو وصفه بانه عظيم
عقيم كبير وفسره بقليل قد ره قبل لا بسرجين وكلب معلم ا ما اذا قال له على كذا
و كذا او شيء وشيء وكان تكرير ه بالواو لزم شيئان وبكذا كذا لا بالواو شيء واحد وقالوا
لو قال كذا درهما فا كمل الوجهين يلزمه درهم وبالضم او كذا درهم بالكسر يلزم درهم وكذا وكذا درهما با
و اولزمه درهمان هذا ان نصب درهما فان رفعه او جره لزمه درهم وبحذف الواو و يوجبون درهما واحدا
في الجميع ولو قال لهذا الا جر في ذمتي الف درهم لزم الدراهم ولم سكو ما شا في تفسير الالف بل
ا ذا قال خمسة وعشرون در هما فقد قيل الجملة مجملة والصحيح في هذه ان الجميع دراهم ولو حقق
لك ان الدراهم ناقصة و يخ الاقرار والتفسير واتصل قبل فان لم يتصل فالطريق الى بحكم بها فيه
ا نه ان كانت دراهم البلد و ازنة لم يقبل والا قبل وان فسر الد ا هم بما هو معيب
مغشوش فكالناقصة والتفصيل تمام فيه وان قال لك من واحد الى عشرة خذ ت منه تسعة وان قال عندي
له كتاب في صندوق لزم الكتاب دون الصندوق او صناديق فيها كتب لزمه منها الصناديق دون ما فيه
من الكتب وكذا عبد عليه عمامة في الاصح او فرس بسرجه او جارية بكو لزمه البكا ره والسرج او ان لك مالا
و هو في ميراث ابي حكمنا اليوم بانه اقر على ابيه بدين او في ميراثي منه قوله نزعت فيه لا يلزمك ومتى
قال درهم درهم كان التاني تاكيدا بخلاف درهم ودرهم فانه يكون درهمان لا ن شرط التاكيد سقط
و لو قال له على من المال درهم ودرهم ودرهم فللاولين درهمان عند اهل العلم واما الثالث فاذا
صرح بانه تاكيد للاول فا شهر الوجهين يلزمه ثلاثة وكذا ان اطلق ولو و كذا الثاني بثالث قالوا
و يجب درهمان وان اقر في المحر بالف وفي صفر بخمسمائة ولم يذكر لاحدهما الفضل بوصف ولا حصل
تمييز بسبب فان قال احد هما مثلا ثمن مبيع والآخر قرض دخل الاقل منها في الاكثر وان كانت
مختلفة لزم الجميع وفي اشهر القولين لو قال له على الف درهم جا ت من ثمن خمر او كان له قرض
الف فضة وعليه في سنة الاسلام البينة ولو قال والدار في يده وقوم يقتفو نه بالمنازعة اشتريتها منكم
عاد مقرا ولو قال له على اربع مائة ثم قال هي وديعة صدق وان ادعى تلفها و ان كان قد قال لي دين وفي
د قبتي او في ذمتي وجا بالف و ديعة وقال هي هذه وكذبه منازعه صدق منا زعه بيمينه ولو اقر من

والحمد لله كثيرا

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| و | جد في يده مثلا | ثمانين مائة | الها لزيد ثم اقر بها لعمرو واخذها باقرا | ره | زيد وعزم لعمرو ولو وقع | |
| ضر | ب من الاستثناء المتصل | في | الاقرار ولم يستغرق صح كعشرة الا تسعة | حصل | الاقرار بواحدة | ع |
| و | قوعه من غير الجنس كعلى | مد | طعام الا درهم والف الا ثوبا في شرع | الله | جائز اذا ثمن الثو | ب |
| ا | قل من الالف وبد | ينة | في ذلك ويصح اقراره بنسب منه وشرطه | ذلك | ان يصدقه الحس | ابدا |
| لا | يكذبه الشرع كنسبه | تعز | بها اليك وقد عرفنا من غيرك انتسابا | خالصا | وان يصدقه المستلحق فلو | |
| حـ | صل استلحاق صغير ثبت و | المحروس | نقلا انه اذا بلغ وكذبه لم يبطل و | لو | استلحقه بالغا فكذبه | ا |
| مد | خل له اليه الا بالبينة | و | استلحاق الميت صحيح لكن اذا اتى به على و | جه | وشروطه ويرثه | بل |
| لـ | وقال لولد امته هذا و | الحمد لله | ولدي ولدته في ملكي ثبت النسب | الكريم | دون الاستيلاد فلو قا | ل |
| لهـ | م علقت به في ملكي | وصل | اليها حكم الاستيلاد اذا لم تكن مزوجة | ومتع | يثبت ولد امته المزوجه | |
| كـ | منكر لان الولد للزوج و | يا | تي فيمن الحق النسب بغيره شرطان ملحقا | با | لشروط التي ذكرناها بنيا | نه |
| ثـ | م وهي ان يكون | رب | النسب الملحق به ميتا وان يكون | من | يلحقه بالميت يـ | علم |
| يو | مئذ انه وارث يحتوي | على | جميع الميراث ويحوزه فان لم يحوزه لم يثبت في | جنا | ب المقر ولا يشاركه فلو ما | ت |
| ر | جل وخلف عليا و | محمد | فاستحق علي وحده خالم يثبت فانما | ت | محمد وعلي حائز ارثه لزم | م |
| ا | لنسب وصلى الله على سيدنا محمد | واله وصحبه وسلم | غاية التسليم الموجب للكرامة في دار | النعيم | امين تم | الكتاب |

بحمد الله الملك الوهاب والحمد لله
وحده وصلى الله على سيدنا محمد
واله وصحبه وسلم تسليما
كثيرا دائما الى يوم الدين

امين

١١٧٨

Süleymaniye U. Kütüphanesi
Kısmı: Fatih
Yeni kayıt
Eski kayıt No: 2029